chapter-4

चतुर्थ अध्याय

हिन्दी मंचीय प्रमुख कवियों के विशिष्ट प्रदान एवं आधुनिक हिन्दी मंचीय कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विवेचना

चतुर्थ अध्याय

हिन्दी मंचीय प्रमुख कवियों के विशिष्ट प्रदान एवं आधुनिक हिन्दी मंचीय कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विवेचना

हिन्दी साहित्य के अवधान में हिन्दी के मंचीय कवियों का योगदान उल्लेखनीय रहा है। अमीर खुसरो से लेकर भक्तिकाल के अष्टछापी कवियों तक ये कवि सम्मेलन की परंपरा प्रकारांतर से किसी न किसी रूप से अग्रसर होती रही है। मध्यकाल में दरबारी कवियों के माध्यम से यह परंपरा अग्रसर हुई, तो आधुनिक काल में भारतेन्दुबाबू, हरिशचन्द्र से सार्वजनिक काव्य गोष्ठियाँ और सम्मेलनों के आयोजन होते रहे हैं। इस तरह यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी न किसी रूप में काव्यश्रवण का आकर्षण रसाग्रही लोगों में अनवरत बना रहा है। सार्वजनिक मंचों पर ग्राम पंचायतों में देहाती संगठनों में कस्बों में पशुमेलों में, प्रदर्शनियों में, सम्मेलनों में तथा नगर के गली–महोल्लों में अनेक अवसरों पर इस प्रकार के समारोह समायोजित होते रहे हैं।

अवसर चाहे वसंत पंचमी का हो, दीपावली, होली, कृष्ण जनमाष्टमी, रामनवमी, गणेश चतुर्थी, शिवरात्री या किसी के जन्म वैवाहिक अवसरों पर इस प्रकार के आयोजन रचे जाते रहे हैं।

वस्तुतः स्थान-स्थान पर आयोजित छोटी-बड़ी काव्य गोष्ठियाँ मंचीय काव्य-सम्मेलनों के लिए प्रशिक्षण शिविर की तरह होती थी जहाँ छोटे-बड़े कवि बड़े मंचों पर काव्यपाठ की तालीम लिया करते हैं। इन गोष्ठियों में साधारण हास्य व्यंग्य के तुकबंधी करनेवाले सामान्य कवि भी होते थे। तो दूसरी ओर काव्यशास्त्र की गहरी समझ रखनेवाले तथा प्रख्यात आचार्य कवि भी होते थे। जिनसे प्रेरणाग्रह करते हुए नवोदित कविगण मंच पर काव्य पाठ करने की शिक्षा ग्रहण करते थे।

हिन्दी मंच कवियों के प्रस्तुतिगण एवम् वर्ण्य विषयगत अनेक रूप देखने में आते हैं जो प्रमुख रूप से इस प्रकार हैं-

1) शृंगार रस के मधुर गायक कवि

इस श्रंखला में किसन सरोज, विष्णु सक्सेना, सोम ठाकुर, वरुण चतुर्वेदी, चेतना शर्मा, नटवर नागर, भारत भूषण तथा रमानाथ अवस्थी जैसे कवि सम्मिलित हैं।

2) राष्ट्रीय संचेतना के कवि

इस श्रंखला में उदयप्रताप सिंह, राजेश दीक्षित, शिव ओम अंबर, राम कुमार चतुर्वेदी, विष्णु विराट, बाल कवि बैरागी आदि उल्लेखनीय हैं।

3) राष्ट्रीय ओजस्विता के कवि

पुरानी पीढ़ी में राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त, श्याम नारायण पाण्डे, नागार्जुन आदि के साथ सोम ठाकुर, महेन्द्र नेह, महेन्द्र नेह आदि उल्लेखनीय हैं।

4) गजल एवम् मुक्तक पढ़ने वाले कवि

पुनारे कवियों में बलवीर सिंह 'रंग', नीरज, दुष्यंत कुमार, देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र', कुंवर बेचैन, कृष्ण बिहारी 'नूर' तथा आज की पीढ़ी के अशोक अंजुम, कृष्ण कुमार 'नाज़' प्रसिद्ध हैं।

5) व्यंग्य के कवियों में

अशोक चक्रधर, शैल चतुर्वेदी, माणिक वर्मा, कैलाश गौतम, कन्हैयालाल नंदन, सरोजिनी प्रीतम, सुरेश उपाध्याय, प्रदीप चौबे, गुरु सक्सेना आदि प्रसिद्ध हैं।

6) हास्य कवियों में

सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि काका हाथरसी, निर्भय हाथरसी, ऋषिकेश चतुर्वेदी, हुल्लड़ मुरादाबादी, सुरेन्द्र दुबे, जैमिनी हरियाणवी, ओम प्रकाश आदित्य, सुरेन्द्र शर्मा आदि प्रख्यात हैं।

7) पेरोडी एवम् आदी लिखने में

बेढव बनारसी, बरसाने लाल चतुर्वेदी, हुल्लड़ मुरादाबादी, निर्भय हाथरसी, भोंपु कवि, वरुण चतुर्वेदी, विश्वेश्वर शर्मा आदि प्रसिद्ध हैं।

8) साहित्यिक एवं चिंतनीय

भवानी प्रसाद मिश्र, शिवमंगल सिंह सुमन, उदय प्रताप सिंह, सोम ठाकुर, माहेश्वर तिवारी, विष्णु विराट आदि प्रसिद्ध हैं।

9) छोटी कविताएं

नीरज, सुर्यभान गुप्त, गुरु सक्सेना, महेन्द्र नेह, किसन सरोज, महेश्वर तिवारी, विष्णु विराट आदि प्रसिद्ध हैं।

10) लम्बी कविताएं

बंकट बिहारी 'पागल', राजेश दीक्षित, सोम ठाकुर, हरि ओम पवार, भवानी प्रसाद मिश्र, शिव मंगल सिंह सुमन, बाल कवि बैरागी आदि प्रख्यात् हैं।

प्रस्तुत अध्याय में ऐसे ही कुछ विशिष्ट मंचीय कवियों के विशिष्ट प्रदान को और उनकी रचनात्मक उपलब्धियों को रेखांकित किया जा रहा है, जिससे हिन्दी मंचीय कवियों के विषय में एक स्पष्ट जानकारी प्राप्त हो सके।

गोपालदास 'नीरज'

जन्म : 4 जनवरी 1925

स्थान : पुरावली, इटावा (उ.प्र.)

शिक्षा : एम. ए. (हिंदी)

विधाएँ : दार्शनिक–गीत, श्रृंगार–गीत, मुक्तक

कार्यक्षेत्र : पूर्व प्राध्यापक, हिंदी विभाग, धर्म समाज कालेज, अलीगढ़

कृतियाँ : **काव्य संग्रह** – संघर्ष, अंतर्ध्वनि, विभावरी, प्राणगीत, दर्द दिया है, बादर बरस गयो, मुक्त की, दो गीत, नीरज की पाती, गीत भी गीत भी, नीरज की गीतिकाएँ, कारवाँ गुज़र गया, फिर दीप जलेगा, तुम्हारे लिए, नदी किनारे

सम्मान व पुरस्कार : विश्व उर्दू परिषद् पुरस्कार; सर्वश्रेष्ठ गीत–लेखन के लिए फिल्म केपर अवार्ड; पद्म श्री (भारत सरकार); यश भारती एवं एक लाख रुप का पुरस्कार (उ. प्र. सरकार); डी. लिट्. (मानद) अंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा; साहित्यवाचस्पति (हिंदी विद्यापीठ, भागलपुर); रजत श्री (आस्ट्रेलिया)

विदेश यात्रा : अमरीका, कनाडा, इंग्लैड, ऑस्ट्रेलिया, नेपाल

सम्पर्क : जनकपुरी, मैरीस रोड, अलीगढ़ – 202001 (उ.प्र.)

दूरभाष : 0571–2402605

विशेष : हिन्दी काव्य–मंच के सर्वाधिक लोकप्रिय गीतकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। मुलतः श्रृंगारी कवि हैं। परंतु राजनीतिक, सामाजिक, सामयिक तथा दार्शनिक विषयों पर भी लिखा है। कविताएँ भाषा, भाव शिल्प, अलंकार–योजना आदि सभी दृष्टिओं से अत्यादिक समृद्ध। आधुनिक गीतकारों की रचनाओं में जहाँ अभिधा एवं व्यंजना का प्राचुर्य पाया जाता है वहाँ आपके गीतों में लक्षणा का बाहुल्य है, जो उच्चकोटि के काव्य का एक विशिष्ट उदाहरण है।

श्री नीरज एक श्रेष्ठ रचनाकार होने के साथ ही सुमधुर गायक भी हैं, अतः कवि–सम्मेलनों में इनके काव्य–पाठ की धूम मचती है। तीन–चार घण्टे तक निरन्तर काव्य–पाठ करते रहना और श्रोताओं को मन्त्र–मुग्ध

करे रखना, इनके लिए सामान्य-सी बात है।

आपने हिन्दी सिनेमा में भी अनेक फिल्मों के गीत लिखे। मृत्यु जैसे कटु सत्य पर दर्शन का भव्य गीत लिखने वाले यह रचनाकार आज भी हिन्दी काव्य की सेवा में पूर्णतया संलग्न है। आपके गीतों ने सदैव हिन्दी पाठकों के हृदय पर राज किया है। भारत सरकार के पद्मश्री और पद्मभूषण जैसे अंलकारों से अंलकृत गोपालदास 'नीरज' हिन्दी काव्य जगत का अभिमान हैं।

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश-भाग-2; संपादक-डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 110)

कविताएँ :-

'जब तक कुछ अपनी कहूँ, सुनूं जग के मन की
तब तक ले डोली द्वार, विदा-क्षण आ पहुँचा।
कूटे भी तो थे बोल न श्वास-कुमारी के,
गीतों वाला इकतारा गिरकर टूट गया,
हो भी न सका था परिचय दृग का दर्पण से
सपना आँसू बनकर छलका और छूट गया
तन भींगा, मन भींगा, कण-कण, तृण-तृण भींगा
देहरी, द्वार, आँगन, उपवन, त्रिभुवन भींगा,
जब तक मैं दीप जलाऊँ कुटिया के द्वारे
तब तक बरसात मचाता सावन आ पहुँचा।।'

* * * * *

धरा को उठाओ, गगन को झुकाओं
दिये से मिटेगा न मन का अंधेरा
धरा को उठाओ, गगन को झुकाओ।

बहुत बार आई-गई यह दिवाली
मगर तम जहाँ था वही पर खड़ा है
बहुत बार लौ जल-बुझी पर अभी तक
कफन रात का हर चमन पर पड़ा है,
न फिर सूर्य रुठे, न फिर स्वप्न टूटे
उषा को जगाओ, निशा को सुलाओ।
दिये से मिटेगा न मन का अंधेरा
धरा को उठाओ, गगन को झुकाओ।।

सृजन शान्ति के वास्ते है जरूरी
कि हर द्वार पर रोशनी गीत गाये
तभी मुक्ति का यश यह पूर्ण होगा,
कि जब प्यार तुलावार से जीत जाये
घृणा बढ़ रही है, ऊमा चढ़ रही है
ममुज को जिलाओ, दनुज को मिटाओ!
दिये से मिटेगा न मन का अंधेरा
धरा को उठाओ, गगन को झुकाओ !

सुरजीत नवदीप

जन्म : 1 जुलाई 1937

स्थान : मंडी भावलदीन, पंजाब
(वर्तमान में पाकिस्तान में)

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी), बी.एड., सी.पी.एड.

सम्प्रति : सेवा निवृत्त शिक्षक, स्वतंत्र लेखन

प्रकाशन : लाजवंती का पौधा (उपन्यास), हवाओं में भटकते हाथ (काव्य संग्रह), कुर्सी के चक्कर में, आँसू हँसते हैं, शब्दों का अलाव (मुक्तक संग्रह) तथा दशे की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में गीत, गजल, हास्य व्यंग्य कविता एवं कहानियों का प्रकाशन रेडियो एवं दूरदर्शन में अनेक बार काव्य पाठ तथा संचालन। अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों का संचालन एवं काव्य पाठ।

सम्मान : राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह भद्रावती (कर्नाटक) मेट्रो रेलवे कलकत्ता, छत्तीसगढ़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, रायपुर, स्टील अथोरिटी ऑफ इंडिया (कलकत्ता) नेशनल थर्मल पावर तेलचर अंगुल (उड़ीसा), छत्तीसगढ़ लोक संस्कृति सम्मान बेमेतरा, राष्ट्रभाषा कार्यान्वयन समिति, सेन्ट्रल बैंक रायपुर, लायंस, लायनेस, सिटी, रोटरी, फ्रेण्ड्स क्लब, धमतरी तथा विभिन्न साहित्यिक एवं सामाजिक संगठनों द्वारा।

संपर्क : कॉल टैक्स पेट्रोल पंप के पीछे, डाक बंगला वार्ड, धमतरी (छ.ग.)

विशेष : सुरजीत नवदीपजी मूलतः व्यंग्य के कवि हैं। उनकी कविताओं में हास्य तो है ही लेकिन साथ ही समाज में फैले भ्रष्टाचार तथा भ्रष्ट लोकतंत्र के खिलाफ प्रबल ज्वार देखने को मिलता है।

(पत्र व्यवहार से)

बीमार संविधान

आखिर कितने वर्ष तक
पुराने कपड़ों पर
थीगड़े लगाकर
लिसाई करते रहोगे
मेरे शरीर पर
लगी चोटों को साफ करने से
कब तक डरते रहोगे?

मरहम पट्टी तो
होती रहती है
वह
स्वस्थ होने की पहिचान नहीं है।
जो नहा धोकर
साफ सुथरे वस्त्र न पहिने
वह वर्तमान नहीं है।

यदि जरूरी है
पचाल वर्षों में
संविधान में परिवर्तन
या संशोधन
तो कर लेना चाहिए
जो
आने वाले समय में
आनेवाली पीढ़ी को काम आए
ऐसा कर देना चाहिए।

बीमारी में सड़े गले अंग काट देना
कोई गलती नहीं है,
गीली सुगंधित अगरबत्ती
सुगंधित कहने से ही
ज्यादा देर जलती नहीं है।

(पत्र व्यवहार से)

घनश्याम अग्रवाल

जन्म : 4 सितम्बर 1942

शिक्षा : एम.ए., एम.कॉम.

प्रकाशन : देश की लगभग सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में हास्य-व्यंग्य कविताएं, लेख तथा लघुकथाएं प्रकाशित। कई संकलनों में रचनाओं का समावेश। कुछ रचनाओं का मराठी, गुजराती, पंजाबी, कन्नड़ में अनुवाद।

पुस्तकें : हंसीवर के आईने (हास्य-व्यंग्य गद्य संग्रह), आज़ादी की दुन (हास्य-व्यंग्य कविता संग्रह), अपने-अपने सपने (लघुकथा संग्रह)

अन्य : आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर रचनाओं का प्रसारण। लेखन के साथ-साथ अखिल भारतीय कवि-सम्मेलनों में हिन्दी-राजस्थानी हास्य-व्यंग्य कवि के रूप में एक पहचान भी। भोपाल दूरदर्शन के लिए परसाईजी की रचनाओं पर आधारित सीरियल ''तीर'' के अतिरिक्त कुछ अन्य सीरियलों का लेखन।

पुरस्कार : 1996 का ''काका हाथरसी हास्य-व्यंग्य पुरस्कार'' महामहीम राष्ट्रपतिजी द्वारा; जन चेतना मंच द्वारा ''शरद जोशी स्मृति पुरस्कार''; राजस्थानी विकास मंच द्वारा राजस्थानी साहित्य का डॉक्टर (डी.आ.लिट्) की मानद उपाधि; महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा ''अपने अपने सपने'' किताब पर ''मुंशी प्रेमचंद पुरस्कार''

सम्प्रति : अवकाश प्राप्त/कवि सम्मेलन/लेखन/मौज मस्ती।

संपर्क : अलसी प्लॉट्स, अकोला, महाराष्ट्र।

(पत्र व्यवहार से)

हम किसी से कम नहीं

पहले पढ़े लिखे लोग
नौकरी करते थे
फिर मजदूरी करने लगे
और आजकल
भीख मांगते हैं।
अब हम सारी दुनिया को
सिखा सकते हैं, दिखा सकते हैं
कि आओ और देखो
हमारी शिक्षा-नीति
कितनी सफल है
और कितनी अप-टु-डेट है,
कि हमारे देश मैं तो
भिखारी तक ग्रेजुएट हैं।

(पत्र व्यवहार से)

बलवीरसिंह 'करुण'

जन्म : 7 जून 1938

जन्म स्थान : किरठल ग्राम, जिला मेरठ, उत्तरप्रदेश

शिक्षा : एम.ए., बी.एड.

प्रकाशन : **काव्य** : मैं द्रोणाचार्य बोलता हूँ (महाकाव्य), विजयकेतु (खण्डकाव्य), बिगुल, बोले रक्त शहीद का, प्रबरी मेरे देश के, देश की माटी दे आवाज, गीत गन्ध बावरी, गीत कपोत पूछते हैं, मन-मरुस्थल बोल, समरवीर गोकुला (प्रबन्ध काव्य)।

उपन्यास : ययाति, पांडव सखा श्रीकृष्ण, द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह

सम्पादित काव्य संग्रह : अलवर के स्वर, अरावली गुंजन, लहर पर लहर।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर पुस्तकें : ऐसे हैं कवि करुण, कवि करुण का विजय केतु राष्ट्रीयता का प्रखर दस्तावेज (लघु शोध-प्रबंध) डॉ. महेश चौधरी, महाकवि बलवीर सिंह करुण का रचना संसार (लघु शोध प्रबन्ध), कुमारी संगीता जाटव।

दूरदर्शन के लिए : अन्धकार धारावाहिक का परिचय गीत, हमारा राजस्थान धारावाहिक के गीत एवं पटकथा।

पुरस्कार : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा 'अवन्ती बाई सम्मान'; राजस्थान साहित्य अकादमी का सर्वोच्च सम्मान 'मीरा पुरस्कार'; राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा विशिष्ट साहित्यकार सम्मान एवं पुरस्कार; बाँकुडा (बंगाल) के ड्रोलिया परिवार द्वारा प्रवर्तित 'त्रिवेणी साहित्य पुरस्कार'; बदायूँ क्लब, उ.प्र. द्वारा 'राष्ट्र प्रचेता डॉ. ब्रजेन्द्र अवस्थी पुरस्कार'; श्री छोटी खोटू (राज. हिन्दी पुस्तकालय द्वारा 'पं. दीनदयाल उपाध्याय साहित्य पुरस्कार'; ब्रजप्रेमी साहित्य मण्डल शाहदरा (दिल्ली) द्वारा 'निराला श्री सम्मान'; म.प्र. साहित्य अकादमी द्वारा 'पं. भवानीप्रसाद मिश्र राष्ट्रीय पुरस्कार', श्री नारायण विद्या आश्रम किशनी (मैनपुरी) उ.प्र. द्वारा महाकवि देव सम्मान; संस्कार भारती दिल्ली द्वारा 'गुरु गोलवलकर पुरस्कार'; महादेवी स्मृति पीठ फर्रुखाबाद (उ.प्र.) द्वारा 'महादेवी वर्मा सम्मान'।

संपर्क : 67 केशवनगर, अलवर (राजस्थान)। (पत्र व्यवहार से)

कैसे कलमकार सो जाये

निष्प्रभ हुई सिद्धियाँ सारी
सब साधक निश्चेष्ट पड़े हैं
ज्योतिहीन हो चली रश्मियाँ
गुमसुम सूरज-चाँद खड़े हैं

तिमिरों के घर में जलसे हैं
जश्न साजिशों की महफिल में
दूल्हे बने विवश घूमते
मरघट आ बैठे हर दिल में

ऐसे खौफजदा मौसम में
कैसे कलम मौन रहे जाये
कैसे नयन बगावत मूँदे
कैसे कलमकार सो जाये

माना असुरों का कब्जा है
देवलोक के इन्द्रासन पर
माना अशुभ अँधेरा बैठा
सूरज के पावन आसन पर

मान लिया इस महासमर में
षड्यंत्रों की जीत हुई है
यह भी माना, निर्माणों पर
विध्वंसों की जीत हुई है।

(पत्र व्यवहार से)

पं. नरेन्द्र मिश्र

जन्म : 5 मई 1937

जन्म स्थान : ठाकुर द्वारा, उत्तरप्रदेश

शिक्षा : एम.ए., बी.एड.

व्यवसाय : शिक्षा विभाग के राजपत्रित पद से सेवानिवृत्त।

प्रकाशन : अमर बेल बलिदान की, कालजयी मेवाड़, संस्कार भारती, यश की धरोहर, वंदेमातरम्, महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन–अलंकरण सम्मान, त्रिपथगा जैसे प्रकाशित संग्रह के साथ हल्दीघाटी, झांसी की रानी, जौहर, गौरा–बादल, पन्नाधाय आदि प्रख्यात काव्य।

पुरस्कार : गणतंत्र दिवस एवं स्वतंत्रता दिवस पर जिलास्तर से राष्ट्रीय स्तर तक रचनाधर्मिता पर सम्मान; प्रतिवर्ष संसारभर की प्रज्ञामनीषा को मन से सम्मानित करने वाले विश्व विख्यात महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन के सम्मानित मानद प्रवक्ता; महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन, उदयपुर द्वारा 'महाराणा कुम्भा' साहित्यिक पुरस्कार से सम्मान।

संपर्क : ''प्रतीक्षा'', स्टेशन रोड, चित्तौड़गढ़, राजस्थान।

(पत्र व्यवहार से)

कवि सम्मेलन

ओ स्वतंत्रता के देवदूत।
बापू तुमको शत्-शत् वन्दन

ये अस्थि शेष फिर भी तुम में
तूफान रोकने का बल था
आँधी विप्लव-संझा ये भी
गाँधी तेरा व्रत निश्चय था

जिस तरफ चले तुम चले उधर
सर्वस्व लुटाने बलिदानी
सर बाँधे कफन चले लाखों
भारत माता के सेनानी

तुम सह न सके भूखी शोषित
निर्धन जनता का अतिनाद
प्रत्युत्तर में फिर गरजडढा
तेरा युग व्यापी सिंहनाद

तुम कर्मवीर थे, त्यागी थे
गीता-कुरान के एक सार
मानवता के हित लहराता
तेरा मानस सागर अपार

आजादी की बलिवेदी पर
तुमने शोषित का दान किया
पदबद्ध श्रृंखला खण्डन को
अपना सुख वैभव लुटा दिया।

(पत्र व्यवहार से)

राजेन्द्र मिलन

जन्म : 16 नवम्बर 1937

शिक्षा : पीएच.डी., साहित्य रत्न, आर.डी.एस. (लंदन)।

विधाएं : नाटक, निबंध, कहानी, उपन्यास, काव्य।

संप्रति : संस्थापक–समानंतर, चेयरमेन–संगीत संगम

प्रकाशन : **उपन्यास** – नागफनी और धूआँ, काँच के तन मोम के मन, वीरांगना भीमाबाई बुले।

यात्रा वृतांत – लंदन के वे दिन एवं काला पानी।

नाट्य संग्रह – अंधविश्वास, महामिलन, भीमाबाई होल्कर।

कहानी संग्रह – पापोश, एक बाल कहानी संग्रह, गप्पों की झोली।

बालगीत संग्रह – ठहरो क्षण भर, मिलन के हीत, हौसले हिमालय से

प्रतीक्षारत – टूटे डैनों वाला गरुण, लोकमाता अहिल्या बाई, गजल संग्रह।

प्रकाशन विभाग सरकार द्वारा प्रकाशित – हामारी झीलें और नदियाँ तथा कथा कथक की केन्द्रीय हिन्दी संस्थान मैसूर द्वारा बाल साहित्य के तीन खण्डों में सहभागिता विश्वगंधा, दुष्यंत के बाद गजलकार–2, समयचक्र, हिन्दी की श्रेष्ठ बाल कहानियाँ, नई सदी के प्रतिनिधि दोहाकार, मेरी हिन्दी मेरी शान, वंदेमातरम्, शायरों की महफिल, संयोग साहित्य, उत्तर प्रदेश विशांक आदि।

सम्मान : लंदन, बर्मिंघम, पोर्ट ब्लेयर, काठमाण्डु, चेन्नई, बंगलुरू, हैदराबाद, कोलकाता, मुंबई, दिल्ली, भोपाल, उज्जैन, पुणे इंदौर, श्रीनाथद्वारा, उद्यपुर, जयपुर, कोटा, रेणुसार, गिरिडीह, मेहर, आसलसोल, ग्वालियर, भरतपुर, विदिशा, धौलपुर, लखनऊ, वाराणसी, इलाहाबाद, कानपुर, बरेली, ऋषिकेश, चित्रकूट, अल्मोड़ा शिमला, नैनीताल, परियावां, गाजियाबाद, मुजफ्फर नगर, फिरोजाबाद, अवागढ़, हाथरस, अलीगढ़, कासगंज, फरीदाबाद, झांसी, उरई, मथुरा–वृंदावन, गोवर्धन आदि।

संपर्क : मिलन मंजरी, आजाद नगर, खंदारी, आगरा, उत्तरप्रदेश।

(पत्र व्यवहार से)

कवि सम्मेलन

मीत आओ कदम दो कदम संग तुम
जिंदगी का सफर हँस के कह जाएगा।
दीपिकाओं का झिलमिल वरो नेह तुम,
तम का तूफान कुहरे–सा छट जाएगा।

तुम सताई हुई हो किसी शापवश
या भुलाया तुम्हें ढीठ घनश्याम ने
या कि निर्दोष सीता हो, ठुकरा दिया
महज निंदा के भय से किसी राम ने
प्रीत छाओ सघन आम्रकुंजों–सी तुम
गूँज वंशा–सा यमुना का तट जायेगा।

जग तो शतरंज है दाँव चलता समय
माता उसकी जिसे शह पे शह मी मिली
जिंदगी तो वही हार को जीत ले
हारकर टूटना तो मरण – बुज़दिली
जीत पाओ संभल यह समय का भरम
उजड़ा नंदन बहारों–सा पट जाएगा।

मुझे तुम कोई मेरे अपने लगे
तुमको देखा हड़प दीप–सा जल उठा
वह मेरे गीत का दर्द तुम प्रेरणे।
सुन के पत्थर पिघल मोम–सा गल उठा
वंदना का समुन्दर जो मथता मदन
आइना आरजू बन सिमट जायेगा।

(पत्र व्यवहार से)

डॉ. दामोदर शर्मा

जन्म : 11 नवम्बर 1934

जन्म स्थान : महू, मध्यप्रदेश

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), बी.एड, आयुर्वेद रत्न, होम्योपैथी शिक्षा एवम् दत्तात्रय अखआड़ा, इन्दौर से संस्कृत की शिक्षा।

प्रकाशन : **गीत संग्रह** – मन बँधा नहीं (1976)
खण्डकाव्य – सूली ऊपर सेज पिया की (2001)

प्रसारण : आकाशवाणी, दूरदर्शन, पूरे देश के कवि सम्मेलन के मंचों से।

प्रकाशन : देश भर की प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित, शोधग्रन्थों में उद्धरित।

पुरस्कार : मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद् भोपाल द्वारा 'ठाकुर पुरस्कार' (1964)

सम्मान : कवि शिरोमणि – अखिल भारतीय ब्रज साहित्य संगम, वृन्दावन–मथुरा (1996); 'हिन्दी सेवी सम्मान' मध्य प्रदेश लेखक संघ, ग्वालियार (2000); 'भारती रत्न सम्मान' अनुभव प्रकाशन, साहिबाबाद (2001); 'ठाकुर कुँअरसिंह सम्मान' ग्वालियर (2001); 'मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' गहोई वैश्य समाज (2002); 'गोकुलदास कोटावाला साहित्य सम्मान' जय साहित्य संसद, जयपुर (2004); 'पुरुषोत्तम व्यास सम्मान' कादम्बरी, जबलपुर (2005); 'गन्धर्वसिंह तौमर चाचा स्मृति सम्मान' अम्बाह (2006)

संपर्क : 'लक्ष्मी निवास' भैंरों गली, दाना ओली, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

(साहित्य सागर, सं. कमलकान्त सक्सेना, भोपाल, पृष्ठ 25 से)

हंसों के जोड़े

देखो आज सुरमई बदली जमकर बरसी है
श्वेत-श्याम बादल तो आते-जाते रहते हैं

आसमान के उद्भुत दृश्यों में खोयी आँखें,
निद्रा में जागी, जाग्रति में सोयी लगती हैं,
इन्द्रधनुष के रंग-बिरंगे खेल निराले हैं,
और चाँदनी रात-दूध में धोयी लगती है।

निशा-दिवस में प्रकृति नदी का चक्र चला
हरी-भरी बगिया में पंछी गाते रहते हैं।

निशा-सुन्दरी जब तारों की साड़ी पहनेगी,
झिलमिला करता रूप सभी के मन को भायेगा
उथल-पुथल के दृश्य दिखेंगे धरती पर नभ में
और चन्द्रमा भी सागर में ज्वार उठायेगा।

तितली, भँवरे, मधुमक्खी का मान बढ़ाने को,
खिले फूल ही डाली पर मुसकाते रहते हैं।

इस मौसम में मधुर मिलन के गीत उभर आए,
सत्य कहूँ तो यह अचरज की बात न होगी
मत मयूरी का नर्तन आँखों में बस जाये,
कवि के मन में, कभी, अँधेरी रात न होगी।

नभ में पंख तौलते, हंसों के जोड़े,
मान-सरोवर में जाकर, इठलाते रहते हैं।

(साहित्य सागर, सं. कमलकान्त सक्सेना, भोपाल, पृष्ठ 30 से)

जगन्नाथ 'विश्व'

जन्म : 30 अक्टूबर 1937

जन्म स्थान: ग्राम हरुखेडी तराना, जिला उज्जैन, मध्यप्रदेश

शिक्षा : बी.ए. (साहित्य रत्न)

विधाएँ : गीत, नवगीत, ओज, हास्य, व्यंग्य

प्रकाशन : **काव्य संग्रह** – त्रिवेणी, बढ़ते जाना गाते गीत, फूल और काँटे, अभिव्यक्ति, जय जवान जय किसान, मेरा देश मेरे गीत, बबूल सींचते रहे, हंसी-हंसी में व्यंग्य, रणभेरी वक्त की पुकार, धूम मचाले धूम एवं सूरज से सीखें जग रोशन करना।

संकलन संयोजन – उपासना, मंगल कलश, आँगन की आस्था, त्रिवेणी।

संपादन – वार्षिक पत्रिका भारत ज्योति, वातायन, ग्रेसिम संदेश, साप्ताहिक लोक दर्शन।

अभिनय – टी.वी. सीरियल चाचा-बंदूकची (दूरदर्शन दिल्ली)

लघु शोध प्रबंध – वर्ष 1998-1999 शोध विषय जगन्नाथ विश्व के काव्य का अनुशीलन – डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा के निर्देशन में प्रो. प्रेमचंद उपाध्याय द्वारा विक्रम विश्व विद्यालय उज्जैन, मध्यप्रदेश

प्रसारण : आकाशवाणी, दूरदर्शन (पत्रिका), सब टीवी (वाह वाह), जी नेटवर्क स्माईल टीवी (क्योंकि यह है हास्य कवि मुकाबला), एनडीटीवी इण्डिया (अर्ज किया है), रामोजी फिल्म सिटी ई-टी.वी. मध्यप्रदेश (गुदगुदी) तथा उपग्रह दूरदर्शन दिल्ली। लखनऊ, जालंधर, जयपुर, भोपाल, इन्दौर एवं अन्य चैनलों से कविताओं का निरंतर प्रसारण।

सम्मान : देश के अनेक सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक एवं शासकीय संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

संपर्क : मनोबल, 25, एम.आई.जी. हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, हनुमान नगर, नागदी (मध्यप्रदेश)

(www.jagannathvishwa.com से)

काव्योदाहरण :

जीत का क्या असर हर्ष होता नहीं
व्यर्थ है त्याग गर गर्व होता नहीं
देश के शिल्पीओ, हो सके तो सुनो
दिन मिटे तो कोई देव होता नहीं
सत्य है झूठ के पाँव होते नहीं
सर्प में दूध के दाँत होते नहीं
जिस नदी में बहे आदमी का लहु
उस नदी में कोई हाथ धोता नहीं
वक्त की माँग है बल संभल जाइए
आग घर में लगी अब बुझवाइए
देश के लाडलो माँ पुकारे तुम्हें
अब वतन के लिए एक हो जाइए।

(www.jagannathvishwa.com से)

मधुप पाण्डेय

जन्म : 1941

जन्म स्थान : परतवाड़ा (महाराष्ट्र)

शिक्षा : बी.ए. (साहित्य रत्न)

प्रकाशन : हास्य और व्यंग्य मधुप पांडेय के संग, राष्ट्रीय स्तर पर 1984 से प्रतिवर्ष हास्य व्यंक्य कविताओं की वार्षिकी 'श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य कविताएं' में ससम्मान रचनाएं संकलित। राष्ट्रीय स्तर की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में सतत रचना प्रकाशन।

काव्य स्तंभ - नवभागर (मुंबई, पुणे, नागपुर, भोपाल, इंदौर, रायपुर, जबलपुर, बिसालपुर, ग्वालियर, सतना, छिंदवाड़ा) के लोकप्रिय साप्ताहिक चुटीले व्यंग्य - काव्य स्तंभ 'मधुपजी' में चार दशक से निरंतर लेखन का अनूठा कीर्तिमान। सन्मार्ग (कोलकाता), आज का आनंद (पुणे), उदितवाणी (जमशेदपुर), धीर (बंगलोर) में नियमित व्यंग्य काव्य स्तंभ।

संपर्क : 11 देवत के विन्यास, अंबाझरी उद्यान के पास, नागपुर, महाराष्ट्र।

(पत्र व्यवहार से)

'चीनी' चक्रम

दुकानदार ने
ग्राहक को चीनी भिजवाई
और साथ में
एक चिट्ठी भी चिपकाई
उसमें लिखा था –
मुझे खेद है
जो चीनी भेजी है
उसमें रेत है
ग्राहक ने चीनी
दुकानदार को वापस भिजवाई
और साथ में
उसने भी चिट्ठी चिपकाई
लिखा था –
चीने में रेत है
इसलिए संभव नहीं है
इस चीनी को खाना
और रेत इतनी कम है कि
उसमें संभव नहीं है
अपना मकान बनवाना।

(पत्र व्यवहार से)

सुभाष काबरा

जन्म : 4 फरवरी 1955

शिक्षा : वाणिज्य स्नातक

प्रकाशन : देश की लगभग सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित।
कुछ तो है (काव्य संग्रह), कबूतरखाने के लोग (गजलें दुष्यंत विधा की), मझधार के पार (भजन), पढ़ो : समझो और मत मानो (व्यंग्योक्तियाँ)।

धारावाहिक एवं टेलीफिल्म लेखन – घर जमाई, विलायती बाबू, हेरा फेरी, रिश्ते, हम आपके हैं वो, अलविदा डार्लिंग, इंतकाम सिंहासन, नर्तकी, मुल्क, ये बंधन कच्चे धागों का, अपनापन, घराना, रिश्तों की डोरी, बांदी, कलाकार्ज, लोक-परलोक, घूंघट के पट खोल, इश्क कमबख्त इश्क, जागृति आदि।

प्रस्तुति – विभिन्न चैनलों पर – नहले पर दहला, फिलिप्स टॉप टेन, सुरभि, अंदाज अपना अपना, सारी मेरी लारी आदि।

परिकल्पना एवं प्रस्तुति – अंगूर – ई.टी.सी. चैनल पर हास्य कवि सम्मेलन-26 एपिसोड, 104 कवि, वाह वाह – सब टीवी पर कवि सम्मेलन-60 एपिसोड, 75 कवि।

भूमिका तथा स्तम्भ लेखन – ओशो रजनीश की किताबों 'माटी कहे कुम्हार सूं' तथा 'उपनिषद' की भूमिकाएं, ओशो टाइम्स इंटरनेशनल में स्तम्भ 'मुक्त मन'।

सम्मान/पुरस्कार : दीक्षित पुरस्कार, मुम्बई (1981); पश्चिम रेलवे हिन्दी समिति, कोटा (1989); माहेश्वरी सभा, मुलुंड (1991); माहेश्वरी प्रगति मंडल, मुंबई (1993); रोटरी क्लब ऑफ बॉम्बे नार्थ, मुंबई (1995); राटरी क्लब ऑफ शिवाजी पार्क, मुंबई (1996); विश्व हिन्दी समिति, न्यूयार्क (1997); नगर पालिका परिषद्, इटारसी (1998); अग्रवाल समाज, पुणे (1999); माहेश्वरी सेवा समिति, वापी समाज गौरव की उपाधि (2000); लाफ्टर क्लब इंटरनेशनल, मुंबई – स्वर्ण पदक (2000); अग्रवाल समाज, कोयम्बटूर (2001); गोरेगाँव स्पोर्ट्स क्लब-मानद सदस्यता (2002); सद्भावना पुरस्कार-सद्भावना समिति, मुंबई (2003); पुणे न्यू इयर फेस्टीवल, पुणे (2004)

संपर्क : 1बी-8-9, खत्री एपार्टमेन्ट, स्कूल रोड, मलाड (प.) मुम्बई।

(उत्कंठा, मासिक पत्रिका, प्रकाशक-संपादक श्रीमती चन्दा मोहता, पृ. 4)

तितलियाँ

अब नहीं मिलती
बगीचो में फूलों के आसपास
मिलती हैं सड़कों पर
आधे-अधूरे आधुनिक परिधानों में
या नए जमाने के नए रेस्तरांओं में
कुछ खास भेजों के आसपास
या फिर
किताबों के बीच सूखी हुई मृत
खामोश
किसी शरारती बच्चे के
खेल का सामान बनी हुई
तितलियाँ
कब लौटेंगी बगीचों में
फूलों के आसपास

(उत्कंठा, मासिक पत्रिका, प्रकाशक-संपादक श्रीमती चन्दा मोहता, पृ. 6)

डॉ. कीर्ति काले

जन्म : 23 नवम्बर 1968

जन्म स्थान : ग्वालियर

शिक्षा : बी.एस.सी, एम.ए.–हिन्दी साहित्य, डिप्लोमा इन इंग्लिश, बी.एड., पीएच.डी.।

भाषाओं का ज्ञान : हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी एवं संस्कृत

साहित्यिक क्रियाशीलता : गत 18 वर्षों से विभिन्न गरिमामय मंचों से काव्य पाठ, मंच संचालन एवं संयोज बाल पुस्तकों का संपादन

महत्वपूर्ण मंच जिनसे काव्य पाठ किया : गणतंत्र दिवस कवि–सम्मेलन, लाल किला, दिल्ली; इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन द्वारा आयोजित कवि–सम्मेलन, नई दिल्ली; श्री राम कवि–सम्मेलन, नई दिल्ली; हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा आयोजित विभिन्न कवि–सम्मेलन; इंडियन रेल्वे के विभिन्न कार्यक्रम, हिन्दी दिवस पर आयोजित विभिन्न सरकारी कार्यालयों में आयोजित कवि–सम्मेलन; एन.टी.पी.सी, एम.एम.टी.सी., हिण्डालको, इफ्को, आदि द्वारा आयोजित अनेक कार्यक्रम; ब्रजमण्डल मुम्बई, राजस्थान, एसोसिएशन, चेन्नई, सौरभ साहित्यिक संस्था कानपुर, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयोग जैसी संस्थाओं द्वारा आयोजित अनेक कवि–सम्मेलन।

प्रसारण एवं प्रकाशन : गत बीस वर्ष से आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से समय पर कविताएँ अन्य साहित्यिक कार्यक्रम प्रसारित, दूरदर्शन के विभिन्न केन्द्रों से कविताएँ एवं अन्य साहित्यिक कार्यक्रम प्रसारित, विभिन्न टी.वी. चैनलों (सब टीवी., एन.डी.टी.वी., सहारा टी.वी., ई टी.वी., स्टार टी.वी. इत्यादि) से कविताएँ एवं अन्य साहित्यिक कार्यक्रम प्रसारित, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में समय–समय पर कविताएं प्रकाशित (जैसे राजस्थान पत्रिका, नई दुनिया, दैनिक भास्कर, सौरभ, कादंबिनी, गीतकार, सार्थक, एवं समांतर आदि), हिरनीला मन गीत संग्रह प्रकाशित एवं स्वर एहसासों के समवेत संकलन में गीत प्रकाशित, एक गीत संग्रह, एक गजल संग्रह एवं एक शोध ग्रंथ प्रकाश्य।

ऑडियो कैसेट इत्यादि : पहला पहला प्यार एवं खुशबुओं का सफर

पुरस्कार/सम्मान : हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा हिन्दी दिवस पर सम्मानित, हिन्दी साहित्य सम्मेलन ग्वालियर द्वारा युवा कवयित्री सम्मान, ग्वालियर जूनियर

चेंबर द्वारा 'महियसी महादेवी सम्मान', साहित्य भारती, उन्नाव द्वारा ''साहित्य वाचस्पति'' अलंकरण, इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती द्वारा डॉ. सत्यपाल चुघ सम्मान।

विदेश यात्रा : मिश्र स्थित भारतीय दूतावास में काव्य पाठ, दुबई स्थित भारतीय ऐसोसीएशन द्वारा गणतंत्र पर आयोजित कवि-सम्मेलन में काव्य पाठ, दुबई स्थित इंडियन क्लब द्वारा आयोजित कवि-सम्मेलन में काव्यपाठ, फुजुरीया (युएई) में आयोजित कवि-सम्मेलन में काव्यपाठ, पोर्ट ऑफ स्पेन (ट्रिनिडाड) में काव्यपाठ, परामारीबो (सूरीनाम) में काव्यपाठ, लंदन एवं बर्मिंघम (ब्रिटेन) में काव्यपाठ, वार्सा (पोलैण्ड) में काव्यपाठ, बैंकॉक स्थित कलरचरल काउनसिल ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित कवि-सम्मेलन में काव्यपाठ, सिंगापुर स्थित मारवाड़ी मित्र मण्डल द्वारा आयोजित कवि-सम्मेलन में काव्यपाठ।

(www.kirtikale.com से)

जब भी मन में माला फेरी

जब भी मन की माला फेरी
मर्यादा ने आँख तरेरी
परम्परा के लश्कर जागे
गूँजी अम्बर तक रणभेरी

जिनको है स्वीकार सदा से
तालाबों में घिरकर जीना
वो क्या जाने क्या होता है
झरनों का पावन जल पीना?
आँखों में आकाश सजाना
बाहों में बादल भर लेना
कर–तूरी के लिए भटक कर
खुद को ही पागल कर लेना

सूरन के संगे जगने–सोने
वाले कैसे जान सकेंगे
मतवालों की इस महफिल में
कैसी जल्दी कैसी देगी?

जो देखा है सूरदास ने
आँखों वाले क्या देखेंगे ?
जो महसूस किया मीरा ने
ज्ञानी–ध्यानी क्या सोचेंगे ?
दीवानों की इस बस्ती में
कैसा पाना, कैसा खोना ?
आसमान की चादर ओढ़ी
धरती का कर लिया बिछौना

(www.kirtikale.com से)

अशोक अंजुम

जन्म : 15 दिसम्बर 1966

शिक्षा : बी.एससी., एम.ए. (अर्थशास्त्र, हिन्दी), बी.एड.

विधाएँ : ग़ज़ल, दोहा, गीत, हास्य व्यंग्य, लघुकथा, कहानी, व्यंग्य, समीक्षा, भूमिका, साक्षात्कार, नाटक आदि।

प्रकाशित पुस्तकें : भानुमति का पिटारा (हास्य-व्यंग्य कविताएँ), खुल्लम खुल्ला (हास्य-व्यंग्य कविताएँ), मेरी प्रिय गजलें (गजल संग्रह), मुस्कानें हैं ऊपर-ऊपर (गजल संग्रह), दुग्गी चौके छक्के (हास्य-व्यंग्य कविताएँ), अशोक अंजुम की प्रतिनिधि गजलें, तुम्हारे लिए गजल, एक नदी प्यासी (गीत संग्रह), जाल के अन्दर जाल मियाँ (व्यंग्य गजलें), क्या करें कन्ट्रोल नहीं होता (हास्य-व्यंग्य कविताएँ), प्रिया तुम्हारा गाँव (दोहा-संग्रह), यमराज ऑन अर्थ (नाटक संग्रह)

सम्पादित : श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ (हास्य-व्यंग्य कविताएं), अंजुरी भर गजलें, हास्य-व्यंग्य में डूबे 136 अजूबे (हास्य-व्यंग्य कविताएं) हास्य भी, व्यंग्या भी (हास्य-व्यंग्य कविताएं), गजल से गजल तक (गजल संग्रह), रंगारंग हास्य कवि सम्मेलन (हास्य-व्यंग्य), आह भी वाह भी (हास्य-व्यंग्य कतिाएं), लोकप्रिय हास्य-व्यंग्य कविताएं (हास्य व्यंग्य कविता संकलन), लोकप्रिय हिन्दी गजलें (गजल संकलन, दोहे समकालीन (दोहा संकलन, रंगारंग दोहे (दोहा संकलन), दोहा दशक (दोहा संकलन, दोहा दशक-2 (दोहा संकलन), दोहा दशक-3 (दोहा संकलन), हँसता खिखिलाता हास्य कवि सम्मेलन (हास्य-व्यंग्य कविताएँ), गजलें रंगबिरंगी (हास्य-व्यंग्य गजल संग्रह), व्यंग्य कथाओं का संसार (व्यंग्य लघुकथाएं), नीरज के प्रेम गीत (गीत संग्रह, नई सदी के प्रतिनिधि दोहाकार (दोहा संकलन), श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य गीत (गीत संकलन, हास्य वएं व्यंग्य गजलें (हास्य व्यंग्य गजल संकलन), नए युग के बीरबल (व्यंग्य लघुकथाएँ), हास्य कवि दंगल (हास्य व्यंग्य कविताएं), हिन्दी के लोकप्रिय गजलकार (पद्मभूषण नीरज के साथ संपादित), नए दैर की गजलें (गजल संग्रह), आनन्द आ गया (आनन्द गौतम की व्यंग्य कविताओं का संपादन), आधुनिक कवियित्रियाँ (श्री जितेन्द्र जौहर द्वारा संपादित)

सम्पादक : अभिनव प्रयास (कविता को समर्पित त्रैमासिकी)

सलाहकार सम्पादक : हमारी धरती (पर्यावरण द्वैमासिक)

अतिथि संपादक : प्रताप शोभा (त्रैमा.) (सुलतानपुर) का दोहा विशेषांक, खिलखिलाहट (अनि.) (सुल्तानपुर) हास्य-व्यंग गजल विशेषांक, सरस्वती सुमन (त्रैमा.) देहरादून का दोहा विशेषांक, हमारी धरती (द्वैमासिकी) के दो जल विशेषांक तथा एक प्राकृतिक विशेषांक तथा एक प्राकृतिक आपदा विशेषांक।

सम्मान : विशिष्ट नागरि, राष्ट्रभाषा गौरव, हास्य-व्यंग्य अवतार, श्रेष्ठ कवि, लेखकश्री, काव्यश्री, साहित्यश्री, समाज रत्न, हास्यावतार, मेन ऑफ द इयर, साहित्य शिरोमणि... आदि दर्जनों सम्मोपाधियाँ।

पुरस्कार : श्रीमती मुलादेवी काव्य-पुरस्कार भारत भारती साहित्य संस्थान द्वारा मेरी प्रिय गजल पुस्तक पर 1995; स्व. रुदौलवी पुरस्कार (मित्र संगम पत्रिका, दिल्ली) द्वारा; दुष्यंत कुमार स्मृति सम्मान 1999 (युवा साहित्य मंडल, गाजियाबाद) द्वारा; सरस्वती अरोड़ा स्मृति काव्य पुरस्कार-2000 (भारत-एशियाई साहित्य अका., दिल्ली) द्वारा; डॉ. परमेश्वर गोयल व्यंग्य शिखर सम्मान-2001 (अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद) द्वारा, रजा हैदर गजल सम्मान-2005 (सृजनमंच, रायपुर (छ.ग.) द्वारा; साहित्यश्री पुरस्कार-2009, डॉ. राकेशगुप्त, ग्रन्थायन प्रकाशन, अलीगढ़ द्वारा; स्वर्गीय प्रभात शंकर स्मृति सम्मान-2010, नमन प्रकाशन तथा माध्यम संस्था, लखनऊ द्वारा; विशाल सहाय स्मृति सम्मान-2010, मानस संगम, कानपुर द्वारा, मालती देवी-विलसन प्रसाद सम्मान-2010

संपर्क : 615 ट्रक गेट, कासिमपुर पावर हाउस, अलीगढ़ - 202127 उत्तरप्रदेश

(पत्र व्यवहार से)

गायब है

प्रेम की सच्चाई की बोलियाँ ही गायब हैं
आदमी के अन्दर से बिजलियाँ ही गायब हैं

साबजी पधारे थे सैर को गुलिस्तां की
तबसे इस चमन की सब तितलियाँ ही गायब हैं

हाथ क्या मिलाया था दिल ही दे दिया था उन्हें
हाथ अपने देखे तो उँगलियाँ ही गायब हैं

यूँ ही गर्भ पे जो चली आपकी ये मनमानी
कल जहाँ से देखोगे लड़कियाँ ही गायब हैं

वे भले पड़ौसी थे, आए थे नहाने को
बाथरूम की तबसे टौंटियाँ ही गायब हैं

होटलों में खाते हैं वे चिकिन–ओ–बिरयानी
और कितने हाथों से रोटियाँ ही गायब हैं

(पत्र व्यवहार से)

प्रदीप चौबे

जन्म : 26 अगस्त 1949

स्थान : चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

शिक्षा : कला स्नातक

प्रकाशित पुस्तकें : बहुत प्यासा है पानी (पहला गजल संग्रह), बाप रे बाप (हास्य-व्यंग्य कविताएं)।

प्रकाश्य पुस्तकें : आलपिन (छोटी कविताएं), खुदा गायब है (गजल संग्रह), चले जा रहे हैं (हास्य-व्यंग्य गजलें)

सम्पादन : आरंभ-1 (वार्षिकी), आरंभ-2 (गजल विशेषांक-1), आरंभ-3 (गजल विशेषांक), आरंभ-4 (गजल विशांक-2)

सम्मान/पुरस्कार : पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा लोकप्रिय हास्य-कवि के रूप में सम्मानित, काका हाथरसी पुरस्कार (कोलकाता), माध्यम युवा पुरस्कार (लखनऊ), टेपा (उज्जैन) के प्रतिष्ठित पुरस्कार

साहित्यिक यात्राएँ : बैंकांक, हौंगकाँग, सिंगापुर, दुबई, बेल्जियम, अमरीका, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, मस्कट आदि।

संपर्क : 402, सार्थक अपार्टमेन्ट, सत्यदेव नगर, गाँधी रोड, ग्वालियर, म.प्र.

(साक्षात्कार द्वारा)

प्रदीप चौबे

इस देश में
तीन तरह के लोग रहते हैं

एक–खून पसीना बहानेवाले,
दूसरे–पसीना बहाने वाले,
तीसरे–खून बहाने वाले

खून–पसीनेवाला
रिक्शा चलाता है,
पसीनेवाला
घर चलाता है
और खून बहानेवाला
देश चलाता है

रिक्शेवाला
मजदूर होता है,
घरवाला
मजबूर होता है
और
देश चलानेवाला
मशहूर होता है

(साक्षात्कार द्वारा)

प्रो. श्याम वशिष्ठ 'शाहिद'

जन्म : 24 फरवरी 1970

स्थान : भिवानी, हरियाणा

शिक्षा : एम.कॉम., बी.एड., यू.जी.सी. नैट उत्तीर्ण एवं पीएच.डी. (शोधार्थी)

सम्प्रति : बरवारी लाल जिन्दल सूईवाला महाविद्याल, तोशाम के वाणिज्य विभाग में बतौर साहयक प्रोफेसर पिछले 15 वर्ष से कार्यरत

प्रकाशित पुस्तकें : मेरे हिस्से का आसमान (गजल संग्रह), मुखौटे (काव्य संग्रह), मैं अपना प्यार क्यूँ रोकूँ ? (काव्य संग्रह), राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर कविताएं, गजलें, लघु कथाएं एवं लेख प्रकाशित

काव्य गुरू : श्री कैलाश चन्द्र 'शाही'

सम्मान/ पुरस्कार : कला सुधारक पुरस्कार (2006) लायंस क्लब, भिवानी; साहित्य सृजक पुरस्कार (2007) नटराज कला मंच, भिवानी; राज्य स्तरीय राजेश चेतन काव्य पुरस्कार (2010), श्रेष्ठ कवि एवं संचालक सम्मान (2010) राष्ट्रीय कवि संगम, दिल्ली; काव्य सेवक पुरस्कार (2007) जिला प्रशासन, भिवानी; जन साहित्य सेवा सम्मान एवं जन नाट्य कला सेवा सम्मान (2011) (भिवानी की 100 साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं जन-कल्याण संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों द्वारा समय-समय पर विभिन्न पुरस्कार एवं सम्मान।

अन्य साहित्य सृजन : 15 वर्ष से सतत् साहित्य सेवा। दो नाटक शिखंडी एवं साधो ये मुर्दों का गाँव लिखे। तीन रेडियो नाटक - चेतना, जहाँ प्यार ही प्यार पले और कटे पंख का लेखन। अतुकान्त कविता, गीत एवं लघुकथा लेखन में भी हस्तक्षेप। अनकों नाटकों के लिए गीतों एवं संवादों का लेखन। परन्तु छन्द लेखन (तुकान्त कविता विशेषकर गजल एवं नज़्म) में विशेष रूचि। साहित्यिक संगोष्ठियों में सक्रिय भागीदारी। क्षेत्रीय बोली हरियाणवी में भी प्रहसन एवं कविता लेखन।

संपर्क : फूल चन्द गली, लोहड़ बाजार, भिवानी।

(पत्र व्यवहार से)

कविता

आँखों में जब ख्वाब बहुत थे, लम्हे वो नायाब बहुत थे
जब लगता हूँ सहारा जैसा, तब मुझमें सैलाब बहुत थे

साथ-साथ जीने मरने के अपने वादे
वो ख्वाबों की दुनिया वो मासूम इरादे
एक तेरा चेहरा था भीड़ मुखौटों की थी,
मगर किसी परवाह वक्त की चोटों की थी।

लेकिन अब वो सारी बातें बदल गई हैं,
वो मौसम, वो दिन, वो रातें, बदल गई हैं,
दिल की देखूँ इतना वक्त कहाँ पाता हूँ,
चलते-चलते थक जाता हूँ, सो जाता हूँ।

सारेवादे, सारी कसमसमें भूल चुका हूँ,
मैं उल्फत की सारी रस्में भूल चुका हूँ
जिस दिल पर लिखी थी तुमने बातें प्यारी
उस दिल पर दुनिया ने लिख दी दुनियादारी

खरा समझती थी तुम जिसको खोटा निकाला,
कद मेरा मेरे ही कद से छोटा निकला,
वही तेरा चेहरा है, भीड़ मुखोटों की है,
उसी भीड़ में मैं भी एक मुखौटा निकला

(पत्र व्यवहार से)

प्रवीण शुक्ल

जन्म : 7 जून 1970

स्थान : पिलखुवा, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश

शिक्षा : एम.ए (अर्थशास्त्र) (हिन्दी), बी.एड., शोधरत

संप्रति : अध्यापन (व्याख्याता, अर्थशास्त्र)

अन्य उपलब्धियाँ : आकाशवाणी, टाइम्स एफ.एम., दूरदर्शन, जी.टी.वी., स्टार टी.वी, एन.डी.टी.वी, सहारा टी.वी., सब टी.वी. व अन्य अनेक चैनल्स के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित।

प्रकाशित पुस्तकें : **काव्य कृतियाँ** – स्वर अहसासों के (अमृत प्रकाशन, दिल्ली), कहाँ वे कहाँ ये (डायमण्ड प्रकाशन, दिल्ली), हँसते हँसाते रहो, डायमण्ड प्रकाशन, दिल्ली।

गीत संग्रह – तुम्हारी आँख के आँसू, डायमण्ड प्रकाशन, दिल्ली।

गद्य कृतियाँ – गाँधी और गाँधीगिरी, डायमण्ड बुक्स, गुजराती, मराठी और अंग्रेजी भाषा में अनुवादित।

यात्रा वृतान्त – सफर बादलों का, डायमण्ड बुक्स, दिल्ली।

संपादित कृतियाँ : हर हाल में खुश हैं (अल्हड़ बीकानेरी की लोकप्रिय कविताएँ), इक प्यार का नगमा है (संतोषानन्द के लोकप्रिय गीत), मुहब्बत है क्या चीज (संतोषानन्द के लोकप्रिय गीत)

प्रकाश्य कृतियाँ : आइना अच्छा लगा, (गजल-संग्रह), नेताजी का चुनावी दौरा (व्यंग्य लेख)

स्तंभ : पंजाब केसरी, दैनिक हिन्दुस्तान, नवभारत और हरिभूमि जैसे दैनिक समाचार पत्रों में नियमित हास्य-व्यंग्य स्तंभ लेखन।

सम्मान/ पुरस्कार : काव्य गंगा पुरस्कार (1993), हापुड़, उत्तरप्रदेश; व्यंग्य श्री सम्मान (1998), भरतपुर, राजस्थान; हिन्दी गौरव सम्मान (1998), दिल्ली, श्रेष्ठ कवि सम्मान (1999), जबलपुर, मध्य प्रदेश; परसोन स्मृति सम्मान (2003) भोपाल, प्र.प्र.न; शारदा सम्मान (2003), गाजियाबाद, उ.प्र.न; अट्टहास युवा रचनाकार सम्मान (2004) लखनऊ, उ.प्र.; श्रेष्ठ हिन्दी सेवी सम्मान (2006) दिल्ली; डॉ. उर्मिलेश शंखधार सम्मान (2007), लखनऊ, उ.प्र.।

अन्य साहित्य सृजन : 15 वर्ष से सतत् साहित्य सेवा। दो नाटक शिखंडी एवं साधो ये मुर्दो का गाँव लिखे। तीन रेडियो नाटक – चेतना, जहाँ प्यार ही प्यार पले और कटे पंख का लेखन। अतुकान्त कविता, गीत एवं लघुकथा लेखन में भी हस्तक्षेप। अनकों नाटकों के लिए गीतों एवं संवादों का लेखन। परन्तु छन्द लेखन (तुकान्त कविता विशेषकर गजल एवं नज़्म) में विशेष रूचि। साहित्यिक संगोष्ठियों में सक्रिय भागीदारी। क्षेत्रीय बोली हरियाणवी में भी प्रहसन एवं कविता लेखन।

विशेष : आपकी काव्य–प्रतिभा के आधार पर आपके विषय में पद्मश्री गोपालदास नीरज ने आपके गीत संग्रह 'आँख के आँसू' की भूमिका में लिखा है कि 'प्रवीण शुक्ल ने अपने काव्य प्रतिभा का जो स्वरूप प्रस्तुत किया है उसे देखने के बाद मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ कह सकता हूँ कि उनके पास नई सोच, नया कथ्य, नया बिम्ब सभी कुछ अनूठा है। यह युवा कवि आगे चलकर साहित्य जगत को कोई ऐसी कृति अवश्य देगा जिससे वह स्वयं तो बड़ा कवि माना ही जायेगा साथ ही उसकी इस कृति से साहित्य–जगत भी गौरवान्वित होगा।'

संपर्क : 4649/15–ए, न्यू मॉडर्न शाहदरा, दिल्ली।

(http://kavisammelan.net/index.html से)

कहाँ वे कहाँ ये

चन्द्रशेखर
तुम इस आजादी के लिए
अपना बलिदान दे गये,
भगतसिंह
तुम यूँ ही अपनी जान दे गये।
देखो तुम्हारे ख्वाबों को इन्होंने
शीशे की तरह
चटका दिया है
तुम जिस देश के लिए
फाँसी पर लटक गये
इन्होंने उस देश को
फाँसी पर लटका दिया है।

(http://kavisammelan.net/index.html से)

आर. एल. दीपक

जन्म : 28 अगस्त 1957

शिक्षा : एम.ए (इतिहास), पत्रकारिता में स्नातकोत्तर

संप्रति : राजस्थान पशु पालन विभाग

प्रकाशित कृति : दीपांजलि (आध्यात्मिक दोहों की सतसई)

काव्यपाठ : पूरे भारत में आयोजित हजारों कवि सम्मेलनों में

संपर्क : 'स्वाधीन', प्लॉट नं. 10, साकेत नगर, मालपुरा, जिला टोंक (राजस्थान)

अहिल्या प्रसंग

शिलाबरी गौतम की नारी, धरती-सा धीरज उर का।
कौन सुने अबला का रोना, चीत्कार उस पत्थर का।।

जिसके मन की मौन व्यथा में, सारा जंगल काँप गया।
व्यर्थ में हुई कलंकित नारी, पत्ता-पत्ता भाँप गया।।

नर करते मर्यादा खंडित, नारी का तथा दोष भला?
नर की काली करतूरों का, नारी पर क्यों शेष भला?

धरती जैसा धीरज धरती, सहनी सबके अत्याचार।
करुण कथा-सा नारी जीवन, रिसते घावों का संसार।।

(पत्र व्यवहार से)

अब्दुल हलीम अन्सारी 'आईना'

जन्म : 6 मई 1966

जन्म स्थान : सकतपुरा, कोटा, राजस्थान

शिक्षा : एम.ए (हिन्दी साहित्य), तथा फिल्म कथा-पटकथा लेखन पाठ्यक्रम।

प्रकाशन : देश-विदेश की पत्र पत्रिकाओं, वेब पत्रिकाएं और पॉकेट बुक्स संकलनों में विगत बीस वर्षो से सैकड़ों रचनाएं प्रकाशित, यथा-पंजाब केसरी, दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, दैनिक ट्रिव्यून, हरिगंधा (हरियाणा साहित्य अकादमी), जागती जोत (राजस्थान भाषा साहित्य अकादमी), मधुमति (राजस्थान साहित्य अकादमी), पंजाब सौरभ (पंजाब साहित्य अकादमी), भारतीय रेल (रेल मंत्रालय, नई दिल्ली), आखर जोत (साक्षरता एवं शिक्षा निदेशालय, जयपुर), सरस सलिल, नूतन सवेरा (मुम्बई), चौथी दृष्टि (लखनऊ), साहिती सारिका (पटना), समरलोक (भोपाल), व्यंग्य-यात्रा (नई दिल्ली).... आदि।

संकलन : श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएं (डायमंड पॉकेट बुक्स, दिल्ली), हास्य-व्यंग्य जिन्दाबाद (मनोज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली), हंगामा एक्सप्रेस (रवि पॉकेट बुक्स, मेरठ), व्यंग्य भरे हँसगुल्ले (राधा पॉकेट बुक्स, मेरठ), छपते-छपते (कोलकाता), अकेला (आसाम), डुमडुमी (भरतपुर), मध्यान्तर (हैदराबाद).... आदि।

पुरस्कार एवं सम्मान : 1999 में हास्य-व्यंग्य कविता 'आओ पर्यावरण स्वच्छ बनायें' के लिए राजस्थान सरकार में पर्यावरण विभाग द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित; 2005 में हास्य-व्यंग्य कविता 'जर्दा नहीं खाऊँगा' को श्री भगवान महावीर कैंसर चिकित्सालय एवं अनुसंधान के जागरूकता कार्यक्रम में सम्मिलित की गई; 2005 में दहेज पर आधारित हास्य-व्यंग्य कविता 'मुझे पाप का भागी मत बनाओ, पापा!' को मनीषिका संस्था कोलकाता द्वारा अखिल भारतीय सामाजिक चेतना कविता प्रतियोगिता का राष्ट्रीय प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया; 2005 का 'सारस्वत साहित्य सम्मान' भारतीय वाङ्मय पीठ कोलकाता; 2005 का प्रथम स्व. श्री शिवनारायण रावत राज्य स्तरीय अवार्ड एवं नागरिक अभिनन्दन (संस्कार भारती संस्थान, दीसा); 2008 'शब्द सारथी सम्मान' (ग्वालियर साहित्य कला

परिषद्); 2009 'राजस्थान रत्न सम्मान' जैमिनी अकादमी, हरियाणा।

काव्यपाठ : आकाशवाणी/दूरदर्शन/विभिन्न चैनलों सहित अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में हास्य-व्यंग्य कवि के रूप में काव्य पाठ एवं विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन। राष्ट्रीय एकता, अखंडता, सद्भाव एवम् समाज सुधार के लिए मिशनरी भाव से रचनाधर्मिता।

प्रकाश्य : 'हम कब सुधरेंगे' एवं 'व्यंगमेव जयते'

संपर्क : निकट बी.एड. कॉलेज, सकतपुरा, कोटा (राजस्थान)

आदमी से अच्छा हूँ

भेड़िये के
चंगुल में फँसे
मेमने के
बच्चे ने कहा-
'मुझ मासूम
को खाने वाले
हिम्मत है तो
आदमी को खा।'

भेड़िया बोला-
अबे, तूने
मुझे उल्लू का पट्ठा!
समझ रखा है क्या?
मैं आदमी को खाऊँगा,
तो आदमी बन जाऊँगा।
तू अभी बच्चा है,
अक्ल से कच्चा है।
अरे, भेड़िया ही तो
आजकल
आदमी से अच्छा है।

(पत्र व्यवहार से)

आनन्द कुमार 'गौरव'

जन्म : 12 दिसम्बर 1958

जन्म स्थान : ग्राम भगवानपुर रैहनी (बिजनौर) उत्तरप्रदेश

शिक्षा : स्नातक, पत्रकारिता डिप्लोमा

कृतियाँ : **प्रकाशित** – आँसुओं के उस पार (उपन्यास), मेरा हिन्दुस्तान कहाँ है (गीत संग्रह), थका हारा सुख (उपन्यास), शून्य के मुखौटे (कविताएं)
प्रकाश्य – साँझी साँझ (गीत संग्रह), सुबह होने तक (गजलें)

प्रकाशन : दर्जन भर संकलनों में रचनाएं प्रकाशित, पत्र/पत्रिकाओं में लगभग 300 रचनाएँ आकाशवाणी (रामपुर) व दूरदर्शन (दिल्ली) से अनेक कविता कार्यक्रम प्रसारित

संयोजक : विप्रकला साहित्य मंच, मुरादाबाद (उ.प्र.)

संपर्क : ई–8, हिमगिरी कॉलोनी, काँट रोड, मुरादाबाद, उ.प्र.

(पत्र व्यवहार से)

चिट्ठी जैसा मन

पते पर नहीं जो पहुँची
उस चिट्ठी जैसा मन है
रिक्त अंजली-सा मन है

आहत सब परिभाषाएँ
मुझमें सारी पीड़ाएँ
मौन को विवश वाणी-सी
बुझी अनगिनत प्रतिभाएँ
आस का गगन निहारती
खो गई सदी-सा मन है

मीरा में भजन-सा बहा
राधा में गगन-सा दहा
बानी तो नित बाली पर
मंत्र मौन अनकहा रहा

दिवस-दोपहर बुझा-बुझा
शाम बावरी सा मन है
मीठी यादों से छन-छन
उभरे जख्मों के रुदन
दमन कालजयी हो गए
नीलामी पर चढ़े नमन
अधरों पर जो सखी नहीं
उसी बाँसुरी-सा मन है।

(पत्र व्यवहार से)

डॉ. सरेश पारीक शशिकर

जन्म : 6 दिसम्बर 1949

जन्म स्थान : बड़ली, जिला अजमेर, राजस्थान

शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी. (जैन महाकाव्य)

व्यवसाय : काव्यपाठ, सम्पादन एवं राज्य सेवा से व उप जिला शिक्षा अधिकारी पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत

कृतियाँ : एक इंदिरा एक भारत, तालियों की गड़गड़ाहट, जो अनकहा रह गया, नई रोशनी बाँट दो, भक्त मंजरी, हँसे ज्यारा घर बसे (राजस्थानी), कीतल सर का कलहंस (महाकाव्य), नए सूरज की तलाश, सुनो-सुनो ए दुनियाँ वालो (खण्ड काव्य)

प्रसारण : आकाशवाणी, दूरदर्शन, ई.टी.वी. गुदगुदी, सब टी.वी. वाह...वाह...!, लाइव इंडिया क्या बात है आदि

सम्मान : जय साहित्य संसद सम्मान, जयपुर; ज्ञान ज्योति सम्मान, नई दिल्ली; गुरु गणेश सम्मान, उदयपुर; प्राज्ञ पुरस्कार, विजयनगर।

संपर्क : कवि कुटीर, बिजयनगर, जिला-अजमेर, राजस्थान।

(साक्षात्कार द्वारा)

नए सूरज की तलाश

सिर्फ एक क्षण के लिए आप जरा समय से कहें
कि वह कुछ रुके ताकि
मैं अपनी पलकों में आँसू को सी लूँ,
कल मरने के लिए
मैं थोड़ा बहुत आज और जी लूँ,
मैंने आज उनको बहुत बुरा लतेड़ा
जिन्होंने कल कहा था
कि साँच को आँच नहीं
मैंने साँच को बिना धुंए आज जलते हुए देखा है
उन्होंने बताया था कि झूठ के पाँव नहीं होते
वह एक कदम भी आगे चल नहीं सकता
मैंने आज सवेरे-सवेरे बेशाखियों के सहारे
उस बीच बाजार में भागते हुए देखा है।

तुम क्या करोगी मेरी
पीड़ा को जानकर
जिन्होंने सुनी उनके स्वर
होठों पर आकर अटक गये
साथ ही उनके मुरझाये चेहरे
गर्दन पर धुली जुराबों से
अचानक लटक गये
मुझे अभी जीना है समय का गरल पीना है
भीतर के घावों को अन्दर ही अन्दर सीना है
रंगों में बहते लहू को मुझे पसीना बनाना है।
नए सूरज की तलाश में
मुझे अभी बहुत दूर जाना है।।

SMT HANSA MEHTA LIBRARY The M.S. U... Baroda

गजेन्द्र सोलंकी

जन्म : 31 दिसम्बर

सामाजिक एवं साहित्यिक गतिविधियाँ

चेयरमैन : अलर्ट स्पोर्ट्स अकादमी

स्वयं सेवी सदस्य : हिन्दी (यू.एस.ए.)

संस्थापक संयोजक : 'शब्दांचल', 'अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यिक सांस्कृतिक मंच'

आजीवन सदस्य : अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद् (भारतवंशियों के लिए समर्पित संस्था)

उपलब्धि एवं सम्मान :

सदस्य : सलाहकार समिति 'केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड' (फिल्म सेंसर बोर्ड-CBFC) 1999-2004; सदस्य : हिन्दी सलाहकार समिति, 'केन्द्रीय श्रम मंत्रालय' वर्ष 2000-2003; वर्ष 2002 में यू.के. हिन्दी समिति लंदन द्वारा सम्मानित; वर्ष 2003 में त्रिनिडाड (पोर्ट ऑफ स्पेन) में भारतीय विद्या संस्थान द्वारा 'युवा भूषण सम्मान'; रोटरी क्लब, लायन्स क्लब, भारत विकास परिषद् जैसी राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं क्लबों द्वारा सम्मानित; देश-विदेश में 2000 से अधिक कवि सम्मेलनों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में काव्यपाठ एवं मंच संचालन के लिए प्रशंसा एवं पुरस्कार (देश के लगभग सभी प्रतिष्ठित कवि सम्मेलनों में काव्यपाठ जैसे – लाल किला, डी.सी.एम. इंडियन आयल, संगीत कला मंदिर (कोलकाता), जनता की पुकार (मुंबई) अट्हास, पातञ्जलि योग पीठ आदि।

(रेडियो, दूरदर्शन एवं अनेक चैनलों से काव्य प्रस्तुति जैसे अर्ज किया है, एन.डी.टी.वी. इण्डिया, 'वाह-वाह'-सब टी.वी., साधना, आस्था एवं अन्य कई चैनल जैसे संस्कार, प्रज्ञा, लाइव इंडिया, दूरदर्शन, ऑल इंडिया रेडियो, रेडियो बी.बी.सी. लन्दन, रेडिया सबरंग (डेममार्क), पतंजलि योगपीठ (हरिद्वार), हिन्दी महोत्सव (हिन्दी यू.एस.ए.), अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति (यू.एस.ए.) अग्रवाल समाज (यू.एस.ए.)

कृतियाँ : क्रांति कलश (गीत-कविताओं का संग्रह), भोर की किरण, मन का पंछी।

प्रकाशन : दर्शन, प्रकृति, देशभक्ति, राजनीति, समाज, शिक्षा, धर्म, अध्यात्म आदि समसामयिक एवं सार्वभौमिक विषयों पर लगभग 400 से अधिक गीतों, कविताओं, छंदों, मुक्तकों आदि की रचना।

सम्मान : जय साहित्य संसद सम्मान, जयपुर; ज्ञान ज्योति सम्मान, नई दिल्ली; गुरु गणेश सम्मान, उदयपुर; प्राज्ञ पुरस्कार, विजयनगर।

सम्बन्धों से डर लगता है

अपना प्यारा घर लगता है
यूँ तो सारा जग ही मुझको
करना माफ मुझे यारो
सम्बंधों से डर लगता है
चाहत है चंदन बन महकूँ
पर कैसे समझाऊँ मन को
अब गंधों से डर लगता है
करना माफ मुझे पर यारो
प्रीत-रीत की पावन बेदी
तन-मन-धन सब कुछ न्योछावर,
नहीं बाँधना पर बंधन में
अनुबंधनों से डर लगता है
करना माफ मुझे पर यारो
एक बूँद हूँ पर अन्तस में
बनने को सागर बन जाऊँ
तटबंधों से डर लगता है
करना माफ मुझे पर यारों

(www.gajendrasolanki.com से)

डॉ. सुनील जोगी

जन्म : 1 दिसम्बर 1971

जन्म स्थान : कानपुर, उत्तर प्रदेश

शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी. (हिन्दी)

कृतियाँ : त्यौहारों के गीत, सामान्य ज्ञान कोश – एक और सरगम, कान्ति की दहकती मशान : लोहिया, महान क्रान्तिकारी : सुभाषचन्द्र बोस, पर्यावरण और जनसमस्याएँ, मधुर गीत – भाग एक, राजभाषा हिन्दी और उसका स्वरूप, सरकारी कार्यालयों में हिन्दी, अंदाज अपने-अपने, माँ से बढ़कर कौन महान, सर्वश्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ, भारतीय क्रान्तिकारी महिलाएँ, सच्चे हिन्दुस्तानी, मधुर गीत-भाग दो, खबरों का पोस्टमार्टम, कारगिल की हुंकार, सरस गीत, शब्द-शब्द साहित्य, व्यावहारिक हिन्दी, सर्वश्रेष्ठ हास्य कोश, मधुर गीत-भाग तीन, ढोल के भीतर पोल, 151 श्रेष्ठ राष्ट्रीय गीत, प्रयोजनमूलक एवं व्याकरणिक हिन्दी, बीसवीं सदी की बहुचर्चित हिन्दी कहानियाँ, हिन्दी काव्य मंच की लोकप्रिय कविताएँ, कम्प्यूटर के सिद्धान्त, तकनीक और देखभाल, स्वतंत्रता-सेनानियों के संस्मरण, महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग, शुभकामनाएँ, शिखरों से साक्षात्कार, कहानी के नए हस्ताक्षर, हास्य-व्यंग्य के रंग, एक इंच मुस्कान, चुटकुला चैनल, कबीर की प्रासंगिकता, हंसोगे तो फंसोगे, बधाइयाँ (एस.एम.एस), जोगी का इकतारा, जोगी के छक्के, अभिनव मुहावरा कोश, सम्पूर्ण चाणक्य नीति, जोगी के व्यंग्य बाण, मोहब्बत भरे (एस.एम.एस.), सिर्फ आपके लिए।

प्रसारण : देश की प्रतिष्ठित कैसेट कम्पनियों गैम्रासाउण्ड, टाइम्स म्यूजिक, टी. सीरीज, एच.एम.वी., विम्स, पॉम ऑडियो, दास म्यूजिक और बी.बी.एस. द्वारा गीत, गजल, भजन एवं कविता के 25 ऑडियो कैसेट प्रसारि। हास्य-व्यंग्य का ऑडियो कैसेट 'ढोल की पोल' एवं 'जोगी हास्य-हंगामा' टी सीरीज द्वारा प्रसारित

सम्मान : नार्वे में अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मान – 2002; लखनऊ में अट्टहास युवा सम्मान – 2004 सहित अनेक सम्मान एवं पुरस्कार

संपर्क : फ्लेट नं. सी-यु.बी.एफ., आर. 101 ए, गीता एपार्टमेन्ट, खिड़की एक्सटेंशन, मालवीय नगर, नई दिल्ली

अब देश में गाँधी मत आना

(कविता का एक अंश है)

अब देश में गाँधी मत आना, मत आना, मत आना
सत्य, अहिंसा खोए अब तो, खेल हुआ गुंडाना
आज विदेशी कंपनियों का, है भारत में जोर
देशी चीजें अपनाने का करोगे कब तक शोर
गली-गली में मिल जाएंगे, लूच्चे, गुंडे, चोर
थाने जाते-जाते बापू, हो जाओगे बोर
भ्रष्टाचारी नेताओं को, पड़ेगा पटियाना।
अब देश में गाँधी मत आना, मत आना, मत आना
डी.टी.सी. की बस में धक्का कब तक खाओगे
बिजली वालों से भी कैसे जान बचाओगे
अस्पताल में जाकर दवा कभी न पाओगे
लाठी लेकर चले तो 'टाडा' में फँस जाओगे
खुजली हो जाएगा, जमुना जी में नहीं नहाना
अब देश में गाँधी मत आना, मत आना, मत आना

(www.kavisuniljogi.com से)

अशोक शर्मा

जन्म : 1 अगस्त 1958

जन्म स्थान: हाथरस, उत्तर प्रदेश

शिक्षा : एम.कॉम, एम.ए. (साहित्यिक हिन्दी)

लेखन विधा: हास्य व्यंग्य

कृतियाँ : मंचीय हास्य-व्यंग्य एवं कविताएं, मंचीय हास्य-व्यंग्य कविताएं, हास्य कवियों की धमाचौकड़ी, हास्य कविताओं के चैम्पियन, हँसते रहो हँसते रहो।

प्रकाशन : देश की सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में हास्य-व्यंग्य कविताओं का लेखन, नवभारत टाइम्स (हिन्दी दैनिक) में काँटे की बात का लेखन, पंजाब केसरी (हिन्दी दैनिक) में हास्य कवियों से साक्षात्कार शृंखला का लेखन।

वीडियो कैसेट: ईगल वीडियोज की कैसेट 'हास्य-रस' में हास्य कविताएं सम्मिलित।

टी.वी. कार्यक्रम : डी.डी. 1 द्वारा प्रसारित कार्यक्रम 'कहकहे' में हास्य कविताओं का काव्य पाठ, डी.डी.2 द्वारा प्रसारित 'साहित्यिकी' में 'काव्य गोष्ठी' का संचालन, एन.डी.टी.वी द्वारा प्रसारित 'अर्ज किया है' में काव्य पाठ, ई टी.वी. भोपाल में प्रसारित 'गुदगुदी' में अनेकों बार कविताओं का प्रसारण, जैन टी.वी. में लाइव कार्यक्रम, 'लाइव इण्डिया' में अनेकों बार काव्य प्रस्तुति।

सम्मान : महामहिम उप राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा द्वारा सम्मानित।

संपर्क : जी-6/21, सैक्टर-11, रोहिणी, नई दिल्ली।

(पत्र व्यवहार से)

सब्जी मण्डी में डॉक्टर की दुकान

एक बात
समझ में नहीं आई श्रीमान,
सब्जी मण्डी
और उसमें डॉक्टर की दुकान
सब्जी की दुकान पर इक्का-दुक्का,
और डॉक्टर की दुकान पर
भीड़-भड़क्का।
हमने डॉक्टर से पूछा-
'इसका कारण बताएँगे?'
वह बोला-"आइए
विस्तार से समझाएंगे।"
यह
अपने आप ही मौत से बुझ फिदा था,
राह चलते-चलते
भिण्डी का भाव पूछ लिया था
भाव सुनते ही सुन्न हो गया,
इसका आधा हिस्सा
सुन्न हो गया।
और इसने
सब्जी मण्डी में आकर
अपनी जान को आफत लगाई है,
सब्जियों के भाव से ज्यादा
अब इसका
'ब्लड प्रेशर' हाई है।

(पत्र व्यवहार से)

देवकरण मेघवंशी

जन्म :

जन्म स्थान :

शिक्षा : बी.ए., बी.एड. (अंग्रेजी)

व्यवसाय : वरिष्ठ अध्यापक (अंग्रेजी)

कृतियाँ : कुरजां, राष्ट्रीय पर्व से उच्छब, सावधान विश्वयुद्ध क्रिकेट जारी है (व्यंग्य लेख), बाबा रामदेव पर काव्य संग्रह, गौरी फागुन महिना मांय सी.डी.

प्रकाशन : दैनिक नवज्योति, दैनिक भास्कर में चुनावी दोहे एवं जागती जोत द्वारा

वीडियो कैसेट: ईगल वीडियोज की कैसेट 'हास्य–रस' में हास्य कविताएं सम्मिलित।

प्रसारण : आकाशवाणी जयपुर एवं दूरदर्शन जयपुर द्वारा अनेकों बार प्रसारण

सम्मान : काव्य संगम संस्था, अजमेर – युवा राजस्थानी गीतगार; साहित्य सृजन कला मण्डल, शाहपुर – राजस्थानी कवि; जिला कलेक्टर, अजमेर – पुष्कर कमेटी द्वारा प्रशस्ति पत्र; भारत विकास परिषद् – प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान; बिजयनगर क्लब (जैन समाज) द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान; उपखण्ड स्तर पर उपखण्ड अधिकारी द्वारा 5 बार सम्मानित; अखिल भारतीय स्तर पर मेघवंश शिरोमणि से सम्मानित; भारती मंच लाडनूं द्वारा सम्मानित।

विशेष : अत्यन्त निर्धन पिछड़े कृषक परिवार में जन्म एवं तीन वर्ष बाद ही पिता विहीन, माँ की मेहनत से पढ़ाई शुरू की एवं स्वयं मेहनत मजदूरी कर पढ़ाई जारी रखी। मसूदा डाइट से श्रेष्ठ छात्राध्यापक के रूप में अवलेश्वर ग्राम पंचायत में 1 वर्ष तक राजकीय सेवाएं प्रदान की।

संपर्क : कैलाश जैन बर्फ फैक्ट्री के पीछे, जगदीश कॉलोनी, अजमेर रोड, केकड़ी, जिला अजमेर, राजस्थान।

(पत्र व्यवहार से)

खत में सारी बात...............

खत में सारी बात लिखी है, पढ़ ले म्हारी माय।
बेटी न पैदा करबा स्यूं इतनी क्यूं घबराय।
मायड़ मत ले म्हारी जान,
धरती पर आबादे म्हां पे इतनू कर एहसान।।
सोनोग्राफी की किरणां,
नाजुक तन स्यूं टकराई थी।
कंवळी काया सूख गयी,
काची आख्यां भर आई थी।
डर के मारे सिमट गई मूं, धर-धर कांप्या प्राण

(पत्र व्यवहार से)

शरद जयसवाल

जन्म : 17 जून 1956

जन्म स्थान : कटनी, मध्यप्रदेश

शिक्षा : एम.ए. (अर्थशास्त्र)

व्यवसाय : खुली चायपत्ती का व्यवसाय

प्रकाशन : क्षणिकाओं के माध्यम से नियमित पत्रिकाओं में प्रकाशन।

प्रसारण : टी.वी., दूरदर्शन एवं रेडियो प्रसारण तथा हास्य कवि सम्मेलन

संपर्क : घंटाघर, कटनी, मध्यप्रदेश

अ अनार का

(कविता का एक अंश है)

अ अनार का आ आम का
इ इमली का ई ईख का
चूस-चूस के खाया।
मुझको घुटनों के बीच फंसा के
माँ ने मुंह धुलवाया।।
उ उल्लू से ऊ ऊंट तक
मनी प्लान्ट की बेल
चढ़ी थी छत तक
उल्लू का पट्ठा बन बैठा
खा गया उसको चट-चट।।
ऋ ऋषि से बनना है
मुनियों का आकार।
माथे पे चंदन टीका है
गले जटा-जूट का हार।।
ए एड़ी से ऐ ऐनक तक
दिखती वो हरजाई।
अक्ल नहीं घुटनों में अब
वो एड़ी तक आई।

(पत्र व्यवहार से)

राम प्रकाश शुक्ल 'शतदल'

जन्म : 25 अक्टूबर 1944

शिक्षा : अपूर्ण स्नातक

लेखन : सन् 1962 से गीत सृजन में रत। सबसे पहली कविता अप्रैल 63 'सहयोग' साप्ताहिक पत्रिका, कानपुर में प्रकाशित हुई थी। सबसे पहला कवि सम्मेलन–नौचन्दं (मेरठ) अप्रैल 1963 का था।

प्रकाशित पुस्तकें : पवन गया नीली घाटी में (गीतसंग्रह)

प्रकाश्य : आवारा वंशी (संस्मरणों, यात्राओं फीचर आदि की पुस्तक), नश्तर (मुंशी हर गोविन्द दयाल नश्तर के दीवन का देवनागरी लिपि में लिप्यांतरण), पवन गया नीली घाटी में (भाग–2)

सम्पादन : चलौ मोती उगाउ (लोकगीतों का संकलन), श्रृंगार संध्या (वार्षिक पत्रिका), उमाकान्त मालवीयःस्मृतियों के गवाक्ष (गजल संकलन), स्मृति (वार्षिक पत्रिका) आदि।

सम्मान : ब्रह्मर्षि समाज कानपुर इकाई; मानस संगम, कानपुर; महाराष्ट्र हिन्दी समाज, बम्बई; जन अधिकार एसोसिएशन द्वारा 2004 व 2005 में; लखनऊ प्रशासन द्वारा गणतन्त्र दिवस 2004; माधवी रत्न सम्मान 2005; उन्नाव की अनेक संस्थाओं द्वारा; कृष्णेश–स्मृति सम्मान, मई 2008 आदि

संपर्क : 117/461 ओ ब्लॉक, नारायण धाम, गीतानगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

(पत्र व्यवहार से)

अधर तय करें

स्वप्न जो भी बँधे रेशमी डोर में
टूट कर गिर पड़ेंगे नयन-कोर से
और फिर हम न जाने कहाँ किस तरह
उम्र के जंगलों का सफर तय करें।

जब हमारे अहं का विसर्जन हुआ
बिम्ब जो भी उगा एक दर्पन हुआ
किन सुरों में बजे प्राण की बाँसुरी
अब हमारे-तुम्हारे अधर तय करें।

प्यार को प्रार्थना जो नहीं मानते
वे समझ लो स्वयं को नहीं जानते
पीर को राजरानी बनाकर जहाँ
रख सकें हम, चलो वह नगर तय करें।

रोशनी का यहाँ एक झरना नहीं
दिन ढले तो किसी को ठहरना नहीं
शाम को गीत का रूप जिसमें मिले
हम चलो एक ऐसी बहार तय करें।

(पत्र व्यवहार से)

अशोक चक्रधर

जन्म : 25 अक्टूबर 1944

जन्म : 8 फरवरी 1959

स्थान : खुर्जा, उ.प्र.

शिक्षा : एम. ए. एम. लिट., पीएच.डी. (हिंदी)

विधाएँ : हास्य–व्यंग्य, कविता, अनुवाद, नाटक, फिल्म – निमार्ण, निर्देशन।

कार्यक्षेत्र : पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग एवं मीडिया अध्ययन विभाग, झामिआ मिल्लिआ इस्लामिया (केंद्रीय विश्व विद्यालय नई दिल्ली।)

कृतियाँ : **काव्य** –

बूढ़े बच्चे, भोले–भाले, तमाशा, चुटपुटकुले, सो तो है, हंसो और मर जाओ, ए. जी. सुनिए, इलिए बौड़म जी इसलिए, खिड़कियाँ, बोल–गप्पे, जाने क्या टपके, देश धन्या पंच कन्या, चुनी चुनाई, सोची समझी।

नाटक –

रंग जमालो, बिटिया की सिसकी, बंदरिया चली ससुराल, जब रहा न कोई चारा, लल्लेश्वरी।

बाल साहित्य –

कोयल का सितार, एक बगिया में, हीरों की चोरी, स्नेहा का सपना, प्रौढ एवं नवसाक्षर।

साहित्य –

नई डगर, अपाहिज कौन, हमने मुहिम चलाई, भई बहुत अच्छे, बदल जाएँगी रेखा, ताउम्र का आराम, घड़े ऊपर हँडिया, तो क्या होता जी, ऐसी होती है शादी, रोती ये धरती देखो, कब तलक सहती रहें, अपना हक अपनी जमीन, कहानी जो आँखों से बही, और पुलिस पर भी, मज़दूरी की राह, जुगत करो जीने की, और कितने दिन।

समीक्षा –

मुक्तिबोध की काव्यप्रक्रिया, मुकित बोध की कविताई, मुक्तिबोध की समीक्षाई, छाया के बाद (सह संपादन) मंच–मचान, नेपथ्य से।

अनुवाद –

इतिहास क्या है (ई. एच. कार)

प्रकाश्य काव्य–संकलन –

जीवन हँसीजन्य, जो कर दे जोकर, मसाला मसलाराम का।

पटकथा –

गुलाबड़ी, बिटिया।

बाल उपन्यास –

गुलाम के बेटे का बेटा।

फ़िल्म लेखन, निर्देशन : जीत गई छन्नो, मास्टर दीपचंद, झूमेवाला झुमे बाली, गुलाबड़ी, हाय मुसधी, तीन नज़ारे, बिटिया।

वृतिचित्र : पंगु गिरी लंघे, गोरा हट जा, साक्षरता निकेतन, विकास की लकीरें, हर बच्चा हो कक्षा पाँच।

धारावाहिक : भोरो तरंग, ठाई आखर, बुआ भतीजी, बोले बसंतो।

फीचर–फ़िल्म–लेखन : वंस, अलबेला सुरमेला, कह कहे, परदा उठता हैं, फुलझड़ी एक्सप्रेस, बात इसलिए बताई, पोल टॉप टैन, न्युजी काउंट डाउन, चुनाव–चालीसा, वाह–वाह, चुनाव चकल्लस, बजट–व्यंग्य।

वृतचित्र लेखन : बहू भी बेटी होती है, जंगल की लय ताल, साड़ियों में लिपटी सोदर्या, साथृसाथ चलें, ये है चारा, म्हामोदय, ज्ञान का उजाला, वस्तीनाव, रयूमैटिक हृदय रोग, घेंघा पाडुरना, ऐड्रमौण्डी टापू, छोटा नापगुर। जल और बल, लोकोत्सव, नगर, विकास आदि।

महत्वपूर्ण दूरदर्शन कार्यक्रम : नई सुबह की ओर, रेनबो फैंटेसी, कृति में चमत्कृति, हिंदी धागा प्रेम का अपना उत्सव, भारत महोत्सव, पत्रिका।

आकाशवाणी : 1967 से अध्यतन सेकड़ो कार्यक्रमों का लेखन–प्रस्तुतिकरण।

अभिनय : बोल बसंतो, छोटी सी आशा (धारावारिक), रंगमंच–संस्थापक सदस्य – जननाट्य मंच 'बंदरिया चली ससुराल'

– नाट्य का नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा द्वारा मंचन

– श्री रंजीत कपूर के नाटक (आदर्श हिंदु होटल) एवं 'शोर्टकर्ट' के गीत लेखन, रंगमंडल, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के लिए।

कवि सम्मेलन – अध्यतन देश और विदेश में हज़ारो कवि सम्मेलनों में काव्यपाठ।

– कंम्यूटर और हिंदी (हिंदी के विकास में कंप्यूटर की भूमिका विषय से संबंधित शताधिक पावरपाइंट प्रस्तुतियाँ)

अंतराष्ट्रीय समारोह सहभागिता :– भारत महोत्सव सोवियत संग (87); महात्मा गांधी संस्थान, हिंदी संगोष्ठी मॉरिशस (87); अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति – हिंदी संगोष्ठी, ऑस्टिन, अमरीका (93); हरिवंशराय बच्चन पीठ समारोह मैनचैस्टर, यू.के. (94); नेपाल हिंदी सम्मेलन, काठमांडू, नेपाल (97); छठा विश्व हिंदी सम्मेलन, लंदन (99); बोस्टन अमेरिका (2000); हिंदी और कम्प्यूटर गोष्ठी, सिडनी विश्वविद्यालय सिडनी, ऑस्ट्रेलिया (2000); कम्प्यूटर में हिंदी की संभावनाएँ, सैराफ्यूज विश्वविद्यालय सैराक्यूज, अमेरिका (2001); अंतराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन, त्रिनिदाद टैबेगो (2002); सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन, सूरीनाम (2003); अंतर्राष्ट्रीय हिंदी अधिवेशन, डैलस, अमेरिका (2003); हिंदी शिक्षण संगोष्ठी, यूनिवर्सिटी ओफ टैक्सास, अमरीका (2003); अंतर्राष्ट्रीय हिंदी अधिवेशन, न्यूजर्सी, अमरीका (2004); भारतीय विधा भवन, ऑस्ट्रेलिया (2005)

पुरस्कार–सम्मान : 'मुकितबोध की काव्य प्रकिया' वर्ष की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक (किसी युवा लेखक द्वारा रचित) जोधपुर, विश्व विद्यालय राजस्थान (75); 'ठिठोली पुरस्कार' दिल्ली (80); 'हास्यरत्न' उपाधि, 'काका हाथरसी' हास्य–पुरस्कार (83); आकाशवाणी पुरस्कार– 'प्रौढ़ बच्चे' सर्वश्रेष्ठ आकाशवाणी रुपक लेखन – निर्देशक पुरस्कार, दिल्ली (83); 'समाजरत्न'उपाधी,साथी दल्ली(86); पं. जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय एकता अवार्ड, गीताजंलि, लखनऊ (88); 'मनहर पुरस्कार' , साहित्य कला मंच, बंबई (89); धारावाहिक 'ढाई आखर ' लेखन–निर्देशन के लिए भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा सम्मानित (91); 'बालसाहित्य पुरस्कार', हिंदी अकादमी, दिल्ली (91); 'आल राउंड पर्सनैलिटी', दिल्ली (92); आउट स्टैडिंग परसन अवार्ड, रोटरी क्लब, दिल्ली (92); 'टेपा पुरस्कार', उज्जैन(92); 'राष्ट्रीय सद्भाव कवि, सम्मान ' साईदास कला अकादमी दिल्ली (94); 'कीर्तिमान पुरस्कार', मैहर (95); ये हैं ब्रज के गौरव सम्मान ,मथुरा (95); राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा द्वारा राष्ट्रपतिभवन में काव्य पाठ के लिए सम्मानित (95–96); 'रौज़ अवार्ड' फाईन आर्टस

क्लब, दिल्ली (96); 'काका हाथरसी सम्मान' हिंदी अकादमी, दिल्ली (96); 'दिल्ली के गौरव' सम्मान, दिल्ली सरकार (97); 'सुमन सम्मान' भारती परिष्द एवं निराला शिक्षा निधि उन्नाव (98); 'सद्भावना पुरस्कार' ऑल इंडिया ज्ञानी जैलसिंह मेमोरियल सोसायटी दिल्ली (98); 'चौपाल सम्मान' मद्रास (99); 'काव्य गौरव पुरस्कार' सागर (99); 'आर्शीवाद पुरस्कार'आर्शीवाद साहितियक सांस्कृतिक संस्थान, मुंबई (2000); 'व्यंग्य-रसराज' भारतीय त्राषा एवं साहित्य परिषद्, पश्चिमी उ.प्र. शाखा, गजरौला (2000); 'नोएडा अट्टहास सम्मान', माध्यम साहित्यिक संस्थान, लखनऊ (2001); 'राजभाषा सम्मान' भारतीय स्टे बैंक, प्रधान कार्यालय, भोपाल (म.प्र.) (2001); बैस्ट हिंदी पोएट सर सैयद नेशनल अवार्ड (2001); महाफ़िल-ए-सनम, उर्दू पत्रिका, एवाने गालिब, नई दिल्ली (2001); भारतीय विधा संस्थान ट्रिनिडाड एण्ड टुबेगो इं., ट्रिनिडाड एंड टुबेगो द्वारा, 'दिल्ली रतन', ऑल इंडिया कोन्फ्रेंस ओफ़ इटैलेक्युअल्स, नई दिल्ली (2002); बदायूँ महोत्सव में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री विष्णुकांत शास्त्री द्वारा प्रदत्त (व्यंग्यश्री) (2003); 'काका बिहारी शिखर सम्मान' गुलाबबाग, पूर्णिया (2003); 'अट्टहास शिखर सम्मान', लखनऊ(2003); 'हिन्दी सम्मेलन', हिंदी टाईम्स, टोरंटो, कनाडा (2004); 'सरस्वती सम्मान', नई दिल्ली (2004); 'भास्कर अवार्ड' भारत निर्माण, नई दिल्ली (2004); 'हिंदी सेवा सम्मान', प्रवासी भारतीय सम्मेलन, अक्षरम् हिंदी भवन, नई दिल्ली (2005); ''कैफ़ी आज़मी अवार्ड कैफ़ी, आज़मी मैमोरियल सोसायटी, नई दिल्ली (2005); 'जीवनमल नाहटा ट्रस्ट', नई दिल्ली (2005)

विदेश यात्रा : साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक उदेश्यों के लिए अमेरिका, इंग्लैड, सोवियत संघ, ऑस्ट्रेलिया, मॉरिशस, मकाऊ, इटली, फिलिस्तीन, इज़राईल, जोर्डन, ओमान, ट्रिनिडाड एवं टुबेगो, कनाडा, सूरीनाम आदी।

सम्पर्क : जे-116, सोरता विहार, नई दिल्ली 110044, दूरभाष :- 011-26949494, 26941616

फैक्स : 51401636

(www.chakradhar.com से)

कविता

"याद होगी आपको,
त्रेयायुग की वह राक्षसी–सुरसा
जिसके मुँह में हनुमान घुसे
और मच्छर बनकर
निकल आए थे सहसा।
विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है
कि एक बहन और थी उसकी
जिसका नाम था –सुरसी;
इस कालिकाल में वह सुरसी ही
बन गई है कुरसी।।"

("सुरसी" कविता का एक अंश)

(www.chakradhar.com से)

अरुण जैमीनी

जन्म : 22 अप्रैल 1959

स्थान : गाँव बादली (झज्जर) हरियाणा।

शिक्षा : एम. ए. (हिंदी), पत्रकारिता में डिप्लोमा

कृतिया : 'फिल्हाल इतना ही' (काव्य संग्रह)

अन्य : आकाशवाणी दूरदर्शन से प्रसारित 'धरती का आंचल' (26 एपिसोड्स का संचालन)

- एन.ई.पी.सी. से प्रसारित 'हँसगोला'
- जी.टीवी. से प्रसारित 'दरअसल'
- दूरदर्शन मेट्रो से प्रसारित 'यही है पौलिटिक्स'
- अनेक कार्यक्रमों का 'पटकथा-लेखन' अनेक कार्यक्रमों के लिए 'गीत-लेखन'

विदेश यात्रा : भारत के कोने-कोने में तथा संयुक्त राज्य अमरीका, थाईलैंड, हांगकांग, इंडोनेशिया, ओमान, दुबई, नेपाल, सिंगापुर, आदि देशों में समय-समय पर आयोजित कवि-सम्मेलनों में भागीदारी।

सम्मान व पुरस्कार : राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा सम्मानित (96); काका हाथरसी 'हास्य रत्न' सम्मान। (99); ओम प्रकाश आदित्य सम्मान । (2000); प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपेयी द्वारा सम्मानित (2002); हिंदी अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा काका हाथरसी सम्मान (2004); 'टेपा सम्मान' उज्जैन (2005)

सम्पर्क : ए-57, सरस्वती विहार, दिल्ली, 110034

दूरभाष : 011-27024700 / 27020124, 919868267523

ई-मेल : geminiarun@yahoo.com

अरुण जैमिनी को कविता की समझ और कविता की प्रस्तुति का कौशल विरासत में मिला। पारिवारिक माहौल में कविता इतनी रची बसी थी कि कब वे देश के लोकप्रिय-कवि हो गए, पता ही न चला। आपके पिता श्री जैमिनी हरियाणवी हिन्दी-कविता की वाचिक परम्परा में हास्य विधा के श्रेष्ठ-हस्ताक्षर माने जाते हैं। उन्हीं की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए, हरियाणवी लोक-शैली को आधार बनाकर विशुद्ध हास्य से जरा-सा आगे

बढ़ते हुए व्यंग्य की रेखा पर खड़े होकर आप काव्य-रचना करते हैं। मंचीय प्रस्तुति और प्रत्युत्पन्न मति के आधार पर आप हास्य-कविता के वर्तमान दौर की प्रथम-पंक्ति में खरे दिखाई देते हैं। बेहतरीन मंच-संचालन तथा तर्काधारित त्वरित संवाद आपके काव्य-पाठ को अतीव रोचक बना देता है।

हास्य के पाताल से प्रारंभ होकर दर्शन राष्ट्रभक्ति और संवेदना के चरम तक पहुँचने वाले आपका बौद्धिक कैनवास आपको अन्य हास्य-कवियों से अलग करता हैं।

(www.rajshri.com तथा www.kavyanchal.com से)

कविता

हिन्दी हत्या
सरकारी कार्यालय में
नौकरी मांगने पहुँचा
तो अधिकारी ने पूछा–
''क्या किया है''
मैंने कहा ''एम.ए''
वो बोला – ''किस में''
मैंने गर्व से कहा – ''हिन्दी में''
उसने नाक सिकोड़ी
''अच्छा.... हिन्दी में एम. ए. हो''
बड़े बेशर्म हो
अभी तक जिन्दा हो
तुम से तो
वो स्कूल का लड़का ही अच्छा था
जो ज़रा–सी हिन्दी बोलने के कारण
इतना अपमानित हुआ
कि उसने आत्म–हत्या कर ली
अरे
इस देश के बारे में कुछ सोचो
नौकरी मांगने आए हो
जाओ भैया!
कही कुआँ या खाई खोजो''

(www.kavyanchal.com से)

स्व. अल्हड 'बिकानेरी'

जन्म : 25 अक्टूबर 1944

जन्म : 17 मई 1967 और स्व. ता. 16 जून 2009

स्थान : बीकानेर (रेवाड़ी) हरियाणा

शिक्षा : मैट्रिक

कृतिया : 'भज प्यारे तू सीताराम', 'घाट-घाट घूमे' 'अभी हँसता हूँ,' 'अब तो आंसू पोंछ', 'भैंसा पीवे सोमरस', 'ठाठ ग़ज़ल के', 'रेत पर जहाज़', अनछुए हाथ, खोल न देना द्वारा, जय मैडम की बोल रे

सम्मान व पुरस्कार : गिरधारी लाल युवा ठिठोली पुरस्कार (1981); काका हाथरसी हास्य पुरस्कार (1986); थाईलैंड तथा सिंगापुर के प्रवासी भारतीयों द्वारा काव्यपाठ के लिए आमंत्रित व सम्मानित (1990); 'अखिल भारतीय नागरिक परिषद' सम्मान (1993); राष्ट्रपति द्वारा अभिनंदन (1996); यथासंभव सम्मान, उज्जैन (1997); काव्यगौरव सम्मान (1998); काका हाथरहसी सम्मान, दिल्ली सरकार (1999); टेपा पुरस्कार (2000); मानस पुरस्कार, कानपूर (2000); व्यंग्य श्री पुरस्कार बदापूँ (2004); नरेन्द्र मोहन सम्मान (2004); हरियाणा गौरव सम्मान, हरियाणा सम्मान (2004)

सम्पर्क : श्याम निकुजं, 9-सी, पाकेट-बी, मयूर विहार, फेज-II, दिल्ली - 110091

दूरभाष : 011-22778485- 22778486

विशेष : हरियाणा राज्य के रेवाड़ी ज़िले में बीकानेर नामक गाँव में जन्में श्याम लाल शर्मा को ये संसार अल्हड़ बीकानेरी के नाम से जानत हैं। सन् 1962 में आपने 'माहिर' बीकानेरी के नाम से ग़ज़ल की दुनिया में पदार्पण किया। शास्त्रीय संगीत (वोकल) में डिप्लोमा प्राप्त करे के बाद सन् 1967 में आप हास्य-व्यंग्य के रंगमंच पर 'अल्हड़' बीकानेरी के उपनाम से स्थापित हुए। सन् 1886 मैं आपने एक हरियाणवी फीचर फिल्म 'छोली साली'भी बनाई।

हास्य को गेय बनाने में दक्ष अल्हड़जी छन्द और ग़ज़ल के माहिर थे।

बेहद सहज, सरल और सरस शैली अल्हड़ की रचनाओं की लोकप्रियता का सबल है। जितनी सहजता उनकी रचनाओं में है उतना ही माधुर्य उनके व्यक्तित्व में भी था। लगभग 4 दशक से भी अधिक समयतक उन्होंने मंचो पर काव्यपाठ किया और 16 जून 2009 को वे हमे और हिन्दी मंच को छोड़कर हमेशां को लिए विदा हो गए।

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश–भाग–2; संपादक–डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 24)

मुझको सरकार बनाने दो

जो बुड्ढे खूंसट नेता है, उनको खड्डे में जाने दो।
बस एक बार, बस एक बार, मुझको सरकार बनाने दो

मेरे भाषण के डंडे से
भागेगा भूत गरीबी का।
मेरे व्यक्तित्व सुनें तो झगड़ा
मिटे मियां और बीब का।

मेरे आश्वासन के टानिक का
एक डोझ मिल जाए अगर,
चंदगी राम को करे चित
पेशेंट पुरानी टीबी का।

मरियल सी जनता को मीठे वादों का ज्यूस पिलाने
बस एक बार, बस एक बार, मुझ को सरकार बनाने दो

जो कत्ल किसी का कर देगा
मैं उसको बली करा दूँगा।
हर घिसी पिटी हीरोइन की
पलास्टीक सर्जरी करा दूंगा

लड़के लड़की और लैक्चरार
सब फिल्मी गाने गाएंगे,
हर कोलेज में सब्जेक्ट फिल्म
का कंपल्सरी कर दूंगा।

हिस्ट्री और बीज गणित जैसे विषयों पर बैन लगाने दो,
बस एक बार, बस एक बार, मुझको सरकार बनाने दो।

(www.geeta-kavita.com से)

आलोक शर्मा

जन्म : 25 अक्टूबर 1944

जन्म : 28 सितंबर 1970

स्थान : दुर्ग, छतीसगढ़

शिक्षा : एम. ए.

भाषा ज्ञान : हिंदी , अंग्रेजी

कार्यक्षेत्र : भिलाई इस्पात सयंत्र में कार्यरत।

विधाएँ : कविता, ग़ज़ल, व्यंग्य ।

कृतिया : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित।

सम्मान व पुरस्कार : कादंबिनी साहित्य महोत्सव रायपुर में काव्य-सृजन पुरस्कृत, गहोई वैश्य समाज द्वारा सम्मान।

अन्य : अन्य-देश के विभिन्न स्थानों पर अ.भा. काव्यमंचो से एक व्यंग्य कवि के रूप में अनवरत काव्यपाठ, एन.डी.टी.वी. के 'अर्ज किया है', सब टीवी. के 'वाह-वाह' और टी.वी. के 'गुदगुदी' में काव्यप्रस्तुति। आकाशवाणी रायपुर में रचनाएँ प्रसारित।

सम्पर्क : क्वार्टर नं. 3, डी. स्ट्रीट्-29, सेक्टर -1,भिलाई नगर-490001, छतीसगढ़।

दूरभाष : 0788-2223917

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश-भाग-2; संपादक-डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 41)

तमन्ना

विश्व के दस प्रथम
भ्रष्ट देशो में
भारत ने भी
अपनी पहचान बनाई
देश के कर्णधार बोले–
देखो अपनी मेहनत
रंग लाई !
मंदी पर महंगाई
पुरजोर है
चारों तरफ
भद्र और आंतक का
जोर है
अफसर–व्यवस्था को चूना
लगा रहे है
पुलिस और चौरो से भी
कमीशन खा रहे है
और हमारे नेताओ ने
अपना चरित्र–
तिरंगे पर निचोड़ दिया है
भगवन !
तू कुछ एसा कर कि
इन नेताओं
पुलिसियो और अफसरों की
बेईमानी छू हो जाए
यो फिर इनको
स्वाईन फ्लू हो जाए।

(www.kavyanchal.com से)

कुँवर बैचेन

जन्म : 1 जुलाई, 1942

स्थान : उमरी (मुरादाबाद- उ.प्र.)

शिक्षा : एम. कोम, एम. ए. पी.एच.डी.

कार्यक्षेत्र : पूर्व अध्यत्र हिंदी विभाग, एम. एम. एच. कालेज, ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)

कृतिया : कविता-पिन बहुत सारे, भीतर सांकल, बाहर सांकल, शामियाने काँच के, महावर इंतज़ारों का, उर्वशी हो तुम, रस्सियाँ पानी की, पत्थर की बांसुरी, झुलसो मंत मोरपंख, दीवारों पर दस्तक, नाव बनता हुआ काग़ज, आग पर कंदील, आँधियों में पेड़, नदी तुम रुक क्यों गई, शब्द एक लालटेन, आँगन की अलगनी, तो सुबह हो नदी पसीने की, दिन दिवगंत हुए, कोई आवाज़ देता है, कुंवर बैचैन के प्रेमगीत, कुँवर बेचैन के नवगीत।

उपन्यास : मरकत द्वीप की नीलमणि

अन्य : ग़ज़ल की व्याकरण, छन्द-बद्ध तथा छन्दृमुक्त-दोनों प्रकार की रचनाएँ लिखने में सिद्धहस्त, परम्परागत ेवं नवीनतम-सभी शैलियों में काव्य-सृजना फ़िल्मों में गीत-लेखन, सुर-संकेत त्रैमासिक हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू में भी काव्य-सृजन।

विदेश यात्रा : मोरीशस, रुस, सिंगापुर, इंडोनेशिया, ओमान, अमरीका, कनाडा, यु.के. दुबई, सूरीनाम, होलैंड

सम्मान व पुरस्कार : हिंदी-साहित्य अवार्ड (उ.प्र.); साहित्य -भूषण (उ.प्र.); परिवार पुरस्कार सम्मान (मुंबई); कबीर पुरस्कार (आथर्स गिल्ड ओफ इंडिया); पूर्व राष्ट्रपति महामहिम श्री ज्ञानी जैलसिंह एवं डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा राष्ट्रपति भवन में सम्मानित; 'कवि रत्न', 'भारत श्री' आदि।

सम्पर्क : 2 एम-51, नेहरुनगर, ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.) 201001

दूरभाष : 0120-2793248, 2793057

मोबाईल : 91- 9818379422

ई-मेल : kbechain@yahoo.co.in

विशेष : मुरादाबाद में जन्में कुँवर बहादूर सक्सेना उर्फ कुँवर बेचैन का बचपन चंदौसी में बीता। आज के दौर में आपका नाम सबसे बड़े गीताकारों तथा शायरों में शुमार किया जाता है। आपके मुक्तक, ग़ज़लियात, गीतांश और अशमार रोज़ाना मुशांइरो तथा कवि–सम्मेलनों के संचालन में प्रयोग किए जा रहें है। आपने ग़ज़ल का व्याकरण लिखा और 'रस्सियाँ पानी की' नामके संग्रह के माध्यम से ग़ज़ल को अगली पीढ़ी, तक पहुँचाने का पुनीत कार्य किया।

वर्तमान में मंच पर मौज़ूद, सबसे वरिष्ठ–रचनाकारों में डॉ. कुँवर बेचैन एक है।

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश–भाग–2; संपादक–डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 79)

अंगुलिया थाम के

अंगुलियाँ थाम के खुद चलना सिखाया था जिसे
राह में छोड़ गया, राह पे लाया था जिसे।
उसने पोछें ही नहीं अश्क मेरी आखों से
मैंने खुद रो के बहुत देर हंसाया था जिसे।
छू के होठों को मेरे मुझसे बहुत दूर गई
वो ग़ज़ल, मैने बड़े शौक से गाया था जिसे।
मुझसे नाराज़ है इक शख्स का नकली चहेरा
धूप मे आईना इक रोज़ दिखाया था जिसे।
अब बड़ा हो के मेरे सर पे चढ़ा जाता है।
अपने काँधे पे कुँवर हँस के बिठाया था जिसे।

(www.geeta-kavita.com से)

बाल कवि वैरागी

जन्म : 30 फरवरी 1931

स्थान : रामपुरा (मंदसौर) म.प्र.

शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी)

भाषा ज्ञान : हिंदी, अंग्रेजी

कार्यक्षेत्र : साहित्य, राजनीति, फ़िल्म, पत्रकारिता, पूर्वमंत्री, मध्यप्रदेश शासन, पूर्व सांसद लोकसभा।

कृतियाँ : कविता – दरद दीवानी, झूँस रहा है – हिंदुस्तान, ललकार, भावी रक्षक देश के, दो टूक, आओ बच्चो, गाओ बच्चो, शीलवती आग, रेत के रिश्ते, कच्छ का पदयात्री, मन ही मन, चटकम्हारा चंपा (मालवी गीत–संग्रह)

विविध : दादी का क़र्ज़ सरपंच (सहयोगी–उपन्यास) बर्लिन से बब्बू को पत्र (पत्र–संग्रह) अनुवाद–सिंडेला, गुलीवर।

सम्पर्क : 153, शिक्षक नगर, नीमच (मंदसौर)

दूरभाष : 07423-221819

विशेष : रामपुर में जन्मे श्री नन्दराम दास वैरागी जो सामायिक विषयों पर लिखी रचनाओं द्वारा नौटंकी जैसे टीपदार–स्वर में नाटकीयता पूर्ण काव्य–पाठ से सामान्य–श्रोताओं को प्रभावित करने में दक्षा। हिन्दी के अतिरिक्त कुछ रचनाएं मालवी में भी लिखी हैं। छन्दोबद्ध तथा छन्द–मुक्त–दोंनो प्रकार की कवितओं का सृजन। साहित्यिक–दृष्टि से रचनाएँ सामान्य। राजनीतिक–क्षेत्र में कार्यरत रहने के कारण सामायिक–रचनाएँ राजनीति का प्रतिबद्धता युक्त। आपने देश–विदेशों में अनेक बार भव्य तथा सफल काव्यपाठ किया है। आपने 16 से 17 हिन्दी फिल्मों के लि गीत लिखे हैं तथा कुछ डोक्युमेन्ट्री फिल्मों के स्क्रीप्ट राईटर भी रहे है। तदुपरांत आपने मालवी फिल्म भद्दा माता के लिए गीत और संवाद भी लिखे हैं।

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश–भाग–2; संपादक–डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 233)

जीवन का मतलब

रोज सवेरे सूरज आता
किरणों का कंचन बरसाता
तुमको हमको बड़े प्यार से
जीवन का मतलब समझाता

अपनी ही आहुती देकर
स्वयं प्रकाशित रहना सीखो
यश अपयश जो भी मिल जाए
उसको हँसकर सहना सीखो

थकना–रुकना, चूकना, झुकना
यहस जीवन का काम नहीं है
सच पूछो तो गति के आगे
लगता पूर्ण विराम नहीं है।

(कवि सम्मेलन समाचार, प्रकाशक एवं संपादक–सुरेन्द्र दुबे, 15 अक्टूबर 2008 पृष्ठ 23)

किशन सरोज

जन्म : 19 जनवरी 1939

शिक्षा : बी.ए. (हिन्दी)

भाषा ज्ञान : हिंदी, अंग्रेजी

विधाएँ : गीत, ग़ज़ल

कार्यक्षेत्र : रेल्वे विभाग से अवकाश ग्रहण करने के बाद पूण4कालीन साहित्य-साधना में रत।

कृतियाँ : **गीत-संग्रह** 'चंदन वन डूब गया'

प्रकाश्य : दो गीत संग्रह - प्रकाशनाधीन

प्रकाशन : पत्र-पत्रिकाओं में एवं संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित।

सम्मान व पुरस्कार : देश की अनेक प्रतिष्ठित साहितियक एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित एवं अलंकृत।

सम्पर्क : आज़ाद पुरम, निकट हार्ट मैन कोलेज, बरेली-243122 (उ.प्र)

दूरभाष : 0581-2412004

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश-भाग-2; संपादक-डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 77)

हमारे पास नहीं

नागफनी आंचल में
बाँध सको तो आना
धागों बिंधे गुलाब, हमारे पास नहीं

हम तो ठहरे निपट अभागे
आधे सोये–आधे जागे
थोड़े सुख के लिए उम्रभर
गाते फिरें भीड़ के आगे

कहाँ –कहाँ हम कितनी
बार हुए अपमानित
इसका सही हिसाब, हमारे पास नहीं

हमने व्यथा अनमती बेची
तन की ज्योत कंचनी बेची
कुछ न बचा तो अँधियारों को
मिट्टी मोल चाँदनी बेची

गीत रचे जो हमने
उन्हें याद रखना तुम
रत्नों मढ़ी किताब, हमारे पास नहीं

झिलमिल करती मधुशालाएँ
दिन ढलते ही हमें रिझाएं
घड़ी–घड़ी हर घूंट–घूंट हम
जी – जी जाएं, मर – मर जाएँ

पीकर जिसको चित्र
तुम्हारा धुंधला जाए
इतनी कड़ी शराब हमारे पास नहीं

आखर–आखर दीपक बाले
खोले हमने मन के ताले
तुम बिन हमें न भाए पल भर
अभिनन्दन के शाल–दुशाले

अब के बिछड़े कहाँ,
मिलेगें ये मत पूछो
कोई अभी जवाब, हमारे पास नहीं

(कवि सम्मेलन समाचार, प्रकाशक एवं संपादक–सुरेन्द्र दुबे, 15 अक्टूबर 2009 पृष्ठ 18)

प्रेम किशोर पटाखा

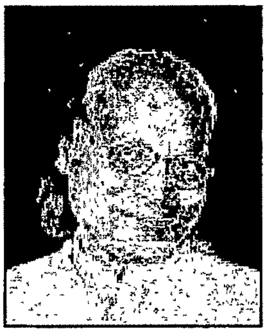

जन्म : 27 अक्टूबर 1943

स्थान : अलीगढ़ (म.प्र.)

शिक्षा : साहित्यरत्न

विद्याएँ : हास्य, व्यंग्य, बालसाहित्य, कहानी, गीत, लघु उपन्यास, संपादन

कार्यक्षेत्र : स्वतंत्र लेखन।

कृतियाँ : शाबाश डैडी (मौलिक हास्य–व्यंग्य रचनाएँ), रंगारंग हास्य कवि सम्मेलन, रंगारंग मुशायरा, रंगा रंग दोहे, गुदगुदी एक्सप्रेस ग़ज़ले, हिन्दुस्तानी, हास्य–व्यंग्य जिंदाबाद, हँसी के रंग कवियों के संग, रंग जमाएँ व्यंग्य–बौछार, हास्य–विनोद काव्कोश, हास्य कवि दरबार, हँसो बत्तीस फाड़ के, हँसता–खिल खिलाता हास्य– कवि सम्मेलन, अमृतज्ञान माला (संपादीत) अमृतमाला।

बाल साहित्य :– बाल–तरंग गीतमाला, बाल–उमंग गीत माला, नन्हे मुन्हे गीत, (दो भाग) आओ बच्चो गाओ बच्चो, सुनो कहानी नानी की, कहो मेरे आका, चाचा नेहरु का गुलाब, बापू का चरखा, खट्टे–मीठे गीत रसीले, (दो भाग) अनमोल अंताक्षरी, हाथी घोड़ा पालकी, सूरज की शैतानी, नन्ही सरगम गाएँ, गीत खिलोने सच्चे बोल अच्छे बोल, बोल बड़े अनमोल।

टेली फिल्म : वृजचित्रम्, जमींके सितारें, दास्ताने–अलादीन।

वीडियो : हास्यरस, कौमेडीप्लस

सम्पर्क : 8ऽ72, लक्ष्मीपुरी, अलीगढ़, 202001, उत्तरप्रदेश.

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश–भाग–2; संपादक–डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 221)

कविता :

''दुल्हन की हो रही थी विदाई
बार बार रोने के लिए कर रही थी ट्राई
बनावटी हिचली ली, पहली,
तभी दुल्हन की मां बोली– 'पगली'
यहीं रोने लगी तो सारा मेकअप धुल जायेगा,
तेरी सुन्दरता का राज खुल जायेगा।
सुनकर लड़की ने कहा – ''तब क्या करुँ मां ?''
माँ – बोली –
''अरी, तेरी अक्ल अभी तक मोटी है,
रोयेगा तेरा दूल्हा, तदू क्यों रोती है?''

नटवर नागर

जन्म : 25 अप्रैल 1950

स्थान : भगवतगढ़ (सवा ईमाधोपुर) राजस्थान

शिक्षा : एम. ए., पीएच.डी. साहित्यरत्न, एम. लिट्., विधा वाचस्पति।

कार्यक्षेत्र : अध्यापन कार्य

विधाएँ : काव्य, निबंध, समीक्षा।

कृतियाँ : विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।

संपादित–स्वर्ण जयंती स्मृति ग्रंथ, राग (काव्यसंग्रह) चापलूसी सी, बोल मेरी मछली कितना पानी, हिन्दी प्रहसन : उद्‌भव एवं विकास।

सम्मान व पुरस्कार : आशीर्वाद साहित्य पुरस्कार (1978); विद्यासागर (1987); साहित्यमणि (1987); गीतकार शैलेंद्र पदक (1987); प्रेमचंद लेखक पुरस्कार (1999); प्रशस्तिपत्र (1983); अमरनाथर विधा आश्रम प्रशस्ति–पत्र (1981)

सम्पर्क : 539, बिहारी पुरा, मथुरा–281001, उत्तर प्रदेश

दूरभाष : 0565-2404824

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश–भाग–2; संपादक–डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 171)

माणिक वर्मा

जन्म : 25 दिसंबर 1938

शिक्षा : एम. ए. (हिंदी) अदीबो माहिर, अधीबो कामिल।

विधाएँ : ग़ज़ल एवं व्यंग्य

कार्यक्षेत्र : स्वतंत्र लेखन।

कृतियाँ : **काव्य संग्रह** – आदमी और बिजली का खंभा, महाभारत अभी जारी है मुल्क के मालिको जवाब दो।

व्यंग्य संग्रह – दस्तक

ग़ज़ल संग्रह – आखिरी पत्ता

सम्मान व पुरस्कार : काका हाथरसी पुरस्कार; ठिठोली पुरस्कार; टेपा पुरस्कार; श्री बालपांडे पुरस्कार;

विदेश यात्रा : बैंकाक, सिंगापुर, हांगकांग, एवं नेपाल

सम्पर्क : पावर हाउस के पीछे, हरदा (म.प्र.)

दूरभाष : 07577-222244

अन्य : आपके पिता श्री प्यारेलाल जी वर्मा प्रसिद्ध शायर थे। वे उर्दु में शायरी करते थे। उन्ही से आपको लेखन के संस्कार मीले। स्वातं6 संग्राम मे अंग्रेजो के खिलाफ उन्होंने कई ग़ज़ल कही। जो बहुत लोकप्रिय हुई। उनकी ग़ज़लों में व्यंग्य की धार थी और व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश भी था। आपने 1952 से लिखना शुरु किया। सन् 1952 से 1965 तक पने ग़ज़ले लिखी ओर एही भी लिखे तब उन दिनो आप मुशायरों में जाते थे। आपने सिमाएँ शीर्षक सो नज्म लिखि जिसमें भारतीय सैनिक के चिंतन को बताया हैं। इसी दौरान आबे हथात फिल्म में गीत भी गाया। आपने कविता की छन्द मुक्त शैली की तरह ही ग़ज़लें भी लिखी है। आप लम्बी-लम्बी कविताएँ लिखने में भी माहिर है।

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश-भाग-2; संपादक-डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 287)

सीमाएँ

(चिंतन एक, भारतीय सैनिक का)

मैं सैनिक संगीन संभाले
दूर-दूर तक दृष्टि डाले
हर एक पाँव की आहट लेता
सीमाओं पर पहरा देता
खड़ा-खड़ा मैं सोच रहा हूँ
धरती पर सीमाएँ क्यों है?
ये अनचाही रेखाएं क्यों है?

क्या मानव को मानव का विश्वास नहीं है
सीमाओं के इधर-उधर क्या इन्सानों का वास नहीं है

आदिम युग से लेकर अब तक
अपना सब कुछ देकर अब तक
जो पाया वो सभी लूट गया
विश्वासों का गला घूट गया
खड़ा-खड़ा मैं सोच रहा हूं
मानव का मन काट-काट कर
सीमाओं में बाँट-बाँट कर

इतनी उन्नती की हमने यह मानमवता लाचार हो गई
दर्बर से हम सज्य हुए तो ऊँची और दिवार हो गई

(सीमाएँ कविता का अंश)

(कवि सम्मेलन समाचार, प्रकाशक एवं संपादक-सुरेन्द्र दुबे, 15 मई 2009 पृष्ठ 23)

राम सनेहीलाल शर्मा 'यायावर'

जन्म : 5 जुलाई 1949

स्थान : तिलोकपुर (फिरोज़ाबाद) उ. प्र.

शिक्षा : एम.ए. पीएच.डी. डी. लिटा.

विधाएँ : गीत, ग़ज़ल, कहानी, दोहा, मुक्तक, हाइकू।

कार्यक्षेत्र : एस. आर. के (पी.जी.) कोलेज, फिरोजाबाद के (डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा से संबंध) के शोध एवं स्नातोकोत्तर विभाग में रीडर, प्राध्यापक, गीतकार, कवि, लेखक, व्यंग्यकार, कहानीकार, व शोध निर्दशक

कृतियाँ : **गीत एवं ग़ज़ल-संग्रह** - मन पलाश वन और दहकती संध्या।

नवगीत संग्रह - गलियारे गंदा के

मुक्तक संग्रह - पाँखुरी-पाँखुरी

ग़ज़ल संग्रह - सीप में समंदर

प्रकाशन : अनेक पत्र-पत्रिकाओं एवं संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित।

सम्मान व पुरस्कार : 'साहित्य वाचस्पति' (अखिल भारतीय व्रज साहित्य संगठन गीतश्री, सहस्त्राब्दी हिन्दी सेवी, गीत विहग से सम्मानित)

सम्पर्क : 86, तिलकनगर, बाइपास रोड, फिरोजाबाद- 283203

दूरभाष : 05612-281486

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश-भाग-2; संपादक-डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 275)

अग्नि परीक्षा क्यों?

हर बार समय लिख देता है
मस्तक पर
अग्नि परीक्षा क्यों?

क्यों अधरों पर लिख दिया तृषा
इस प्राण-पटल पर आकर्षण
मोती के भाग्य लिखा बिंधना
सीपी को सौंपा खालीपन

मेघों को तड़प-तड़प गलना
चातक को
विफल प्रतीक्षा क्यों?

ज्वारों को सौंप दिया सागर
गति को सौंपा सरिता का जल
वह नील गगन, नक्षत्र, धरा
ग्रह, चंन्द्र, सूर्य सारे चंचल
जब गति परवशता और नियति
तो फिर यह
विफल समीक्षा क्यों?

हर बार युद्ध में खड़ा हुआ
प्रश्नों के तीर सहे अर्जुन
क्यों कवि के हिस्से में रहते
दो आई नयन था काँच – मिथुन

आँसू का भार कहा कम था
फिर दे दी
पावक दीक्षा क्यों?

डॉ. विष्णु सक्सेना

जन्म : 12 जनवरी 1959

स्थान : साहदतपुर (सिकट्रारास) अलीगढ़, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा : बी. ए. एम. एस.

भाषा ज्ञान : हिंदी, अंग्रेजी

कार्यक्षेत्र : दयाल किलनिक (सिकन्दरा राव) काव्य सम्मेलनो में सक्रिय

कृतियाँ : गीत संग्रह–मधुबन मिले न मिले; कवि सम्मेलनीय मंचों के सरस गीतकार; 'शंख और दीप' नाम से गीतों का एक कैसेट।

सम्मान व पुरस्कार : मनहर पुरस्कार बंबई; श्रेष्ठ गीतकार सम्मान–उज्जैन; ओंकार तिवारी सम्मान–जबलपुर

विदेश यात्रा : अमेरिका, इजराईल, ओमान, एवं थाईलेंड

सम्पर्क : दयाल क्लीनिक, पुराना तहसील रोड, सिंकदराराउ (अलीगढ़)

दूरभाष : 05721–244380

विशेष : विष्णु सक्सेना भारत के प्रमुख गीतकार मे माने जाते है। उनके गीत हृदय को छू लेने वाले होते हैं, कवि सम्मेलनों में उनकी मौजूदगी ही एक अलग–सा माहौल पैदा करती है। वे अपने गीतों की एक अलग ही प्रस्तुति और अपनी गायन शैली के लिए जाने जाते हैं। उनके गीत लगभग भारत की सभी पत्रिकाओं में छपे हैं और उनका यह गीत मधुवन मिले न मिले काफी लोकप्रिय है। उनके 100 से ज्यादा बार रेडियो पर प्रसारित हो चुके तथा वह लखनऊ, दिल्ली तथा जयपुर दूरदर्शन चैनल पर कई बार कवि सम्मेलनों में काव्यपाठ भी कर चुके हैं।

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश–भाग–2; संपादक–डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 114)

समन्दर दिखेगा नहीं

तुम नदी कहकहों की तुम्हें आँख में
आँसुओं का समन्दर दिखेगा नहीं।
सब्र का बाँध यूँ तो है मजबूत पर
टूट जायेगा फिर कुछ बचेगा नहीं।।

तुम तो 'कादम्बनी' जैसी फुली फलीं
और शहरों के अधरों की 'सरिता' रही
मैं ''धर्मयुग'' सा हर रोज छोटा हुआ
पर कटे 'हंस' की सी उड़ाने भरी

ये तो तय है कि निःसार संसार में
सारगर्भित जो होगा बिकेगा नहीं।।

जो भी गिरकर उसूलों से मुझको मिला
जाने क्यों हाथ उसको बढ़ा ही नहीं
डाल से जो गिरा है धरा पर सुमन
आजतक देवता पर चढ़ा ही नहीं

आत्मसम्मान के पेड़ का ये तना
टूट जायेगा पर अब झुकेगा नहीं।।

ओ मेरे देवता, मुझको ये तो बता
मेरी पूजा मे क्या-क्या कमी रह गयी
मेरे अधुरों पे भरपूर मुस्कान थी
मेरी आँखों में फिर क्यों नमी रही ।

जो भी मिल जायेगा लूँगा सम्मान से
हाथ थे याचना को बढ़ेगा नहीं।।

(कवि सम्मेलन समाचार, प्रकाशक एवं संपादक-सुरेन्द्र दुबे, 15 अक्टूबर 2008 पृष्ठ 18)

शैल चतुर्वेदी

जन्म : 29 जून 1936

स्थान : अमरावती–महाराष्ट्र

शिक्षा : स्नातक,

भाषा ज्ञान : हिंदी, अंग्रेजी, मराठी

विधाएँ : हास्य, व्यंग्य, अभिनय

कार्यक्षेत्र : स्वतंत्र लेखन एवं फिल्म अभियन.

कृतियाँ : हास्य–व्यंग्य–चल गई (1980), बाज़ार का यह हाल है (1987)

सम्मान व पुरस्कार : काका हाथरसी, ठिठोली पुरस्कार।

सम्पर्क : श्री राम एपार्टमेंट्स, फ्लैट नं. 41–42, चौथा माला, प्लाट नं.–17 फिल्मसिटी रोड, सुचिधाम, मलाड़ (पूर्वी) बंबई।

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश–भाग–2; संपादक–डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 489)

बाजार का ये हाल है

बाजार का ये हाल है
कि ग्राहक पीला
और दुकानदार लाल है
दूधवाला कहता है –
''दूध में पानी क्यों है
गाय से पूछो।''

गाय कहेगी – ''पानी पी रही हूँ
तो पानी दूँगी
दूधवाला मेरे प्राण ले रहा है
मैं तुम्हारे लूगी।''

कोयलेवाला कहता है–
''कोयले कि दलाली में
हाथ काले कर रहे है
बर्तन खाली ही सही
हमारी बदौलत चूल्हे तो जल रहे हैं।''

कपडे वाला कहता है –
''जिस भाव में आया है
उस भाव मे कैसे दूँ''
आपको हंड्रेर परसेंट आदमी बनाने का
आपसे फिफ्टी परसेंट भी नहीं ले।

धोबी कहता है–
''राम ने धोबी के कहने से सीता को छोड़ दिया
आप कमीज़ नहीं छोड़ सकते
सौ रुपल्ली की कमीज़ भट्टी खा गई
तो आप तिलमिला रहे हैं
इस देश में लोग इमान को भट्टी में झोंककर
सारे देश को खा रहे है।''

(बाज़ार का ये हाल है कविता का अंश)

सरोजनी प्रीतम

जन्म : 6 अक्टूबर 1939

स्थान : मैलसी मुलतान (प. पाकिस्तान)

शिक्षा : एम. ए., पीएच.डी. (हिंदी)

विधाएँ : कविता, उपन्यास, निबंध, बाल साहित्य, हास्य-व्यंग्य

कार्यक्षेत्र : पूर्व वरिष्ठ प्राध्यापक, दृश्य-श्रव्य विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली। हास्य धारावाहिक वृत्तचित्र निर्माण कार्य।

कृतियाँ : **कविता** - सीता का महाप्रयाण हँसिकाएँ

उपन्यास - बिके हुए लोग, उसकी शादी

निबंध - ज़रूरतचंद

बालसाहित्य : पंखींवाला फूल, सुबोध बालगीत, सैनिक की बेटी, उदासचंद, आशीर्वाद के फूल गिनतीलाल की छींक

हास्य-कथाएँ - लेखक के सींग, हँसो-हँसाओ हास्य अंताक्षरी

व्यंग्य उपन्यास - एक थी शांता

सम्मान व पुरस्कार : काका हाथरसी हास्य पुरस्कार

सम्पर्क : सी-111, न्यू राजेंन्द्रनगर, नई दिल्ली - 110060

दूरभाष : 9810398667

विशेष : सरोजनी प्रीतम हिन्दी मंचीय काव्य जगत में बहुत ही सुप्रसिद्ध है। आप हास्य अकेडमी से जुड़ी हुई हैं और आपने काफी फिल्में भी उनके लिए प्रोड्युस कि हैं जिनमें मुख्य है। (1) डिपार्टमेन्ट ऑफ वुमन एण्ड चाईल्ड, मिनीस्ट्री ऑफ ह्युमन रीसर्च डेवलेपमेन्ट, गर्वमेन्ट ऑफ इण्डिया (2) युनीसेफ (3) प्रसार भारती (दूरदर्शन), इण्डियन पब्लिक ब्रोकास्टर, (4) दिल्ली लीगल सर्वीस ओथोरिटी, (5) मिनिस्ट्री ऑप हेल्थ एण्ड फैमिलि वेलफेर, (6) मिनिस्ट्री ऑफ फूड एण्ड एग्रीकल्चर।

'बिके हुए लोग' नामक एक हास्य सिरियल तैयार हो रहा है जो आने वाले वर्षों में प्राइम चैनल द्वारा प्रसारित होगा। यह श्रेणी आपके पुरस्कार विजेता पुस्तक 'बिके हुए लोग' पर आधारित है।

प्रवृत्ति

विधृत परिषद के मुखिया ने कहा
फैशनेबल युवतियाँ यहां वहाँ बिजली
गिराती हैं...
यह प्रवृत्ति गढ़ रही है...
लोग अंधेरे में हैं तथा
बिजली की समस्या बढ़ रही है

बीमा

सूनो जी, खूश हो जाओ
मेरा तो दो लाख का बीमा हो गया
तो भोलेपन से अनपढ़ पत्नि बोली
खुशी तो उस दिन होगी
जिस दिन ये रकम जल्दी मिले
इसके लिए करना क्या पड़ता है?
वो बोले पहले मरना ही पड़ता है।

खोया

हलवाई ने कविता लिखी यों,
तुम्हारे रुप की चाशनी में
मन को डुबोया है
मक्खन-सी देह, मलाई-सा रंग है
मन खोया-खोया है।

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश-भाग-2; संपादक-डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 465)

(www.sarojinipritam.com से)

शिव ओम अंबर

जन्म : 23 सितंबर 1952

स्थान : फ़र्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश

शिक्षा : एम. ए., बी.एड., पीएच.डी.

विधाएँ : गीत, ग़ज़ल

कार्यक्षेत्र : अध्यापन कार्यक्षेत्र

कृतियाँ : ग़ज़ल- आराधना अग्नि की, शिवओम अंबर की चुनी हुई ग़ज़लें, काँटो का सफ़र, आस्था की रेखाएँ, विविध संग्रहों में रचनाएं सम्मिलित

सम्पर्क : 4/10, नुनहाई, फर्रुखाबाद- 209625 उ.प्र.

दूरभाष : 05692-222067

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश-भाग-2; संपादक-डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 430)

कुछ मुक्तक

ये सच है मैंने बेचा है, अपनी प्रतिभा के नीलम को
गली–गली में खोज पत्र को, नगरी–नगरी में सरगम को
लेकिन ये भी सच है मैंने सत्यम, शिवम नहीं बेचा है
कवि की कलम नहीं बेची है, अपना अहम् नहीं बेचा है।

* * * * *

सत्ता का आरोपी नहीं जनता के सुख–दुःख का किस्सा हूँ
मैं विभलव के अंगारों की आत्मकथाओं का हिस्सा हूँ
ये दर्द समय का है, जो मेरे स्वर से खुद को ग़ज़लों में गीतों में गाता है
और पथ के ऊपर जब तक काँटे ना बिछे हों मुझको चलने मे मझा नहीं आता।

* * * * *

केसर की क्यारी में भीषण रक्तपात है।
विस्फोटों पे बिछी सियासत कि बिसात है
और अफ़ज़ल को फाँसी देने में हिचक रही है
वो संसद है या शिखंडियों की जमात है।

(राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में पढ़े हुए मुक्तक)

इंटरनेट यूट्यूब से उद्धृत

हरिओम पवार

जन्म : 24 मई 1951

स्थान : बुरैना, बुलंदशहर (उ.प्र.)

शिक्षा : एल.एल.एम

विधाएँ : ओज की कविताएँ, कवि सम्मेलनों के मंच के प्रसिद्ध ओजस्वी कवि

कार्यक्षेत्र : रीडर, मेरठ कोलेज, मेरठ।

कृतियाँ : पवार वाणी फाउन्डेशन के अन्तर्गत पुस्तक और सीडी

विदेश यात्रा : नेपाल, अमरीका, इंग्लैंड

सम्मान व पुरस्कार : निराला पुरस्कार; भारतीय साहित्य संगम पुरस्कार; रशिम पुरस्कार; जगजागरण सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार; आवाज ए हिन्दुस्तान सम्मान; भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति तथा विभिन्न मुख्य मंत्रियों द्वारा सम्मानित।

सम्पर्क : ।। सिविल लाइंस, मेरठ, उत्तर प्रदेश

दूरभाष : 0121-2542090-2544080, 2646502

विशेष : राष्ट्रकवि हरिओम पवार के बारे में कुछ भी कहना अथवा लिखना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा ही है।

देश प्रेम को अभिव्यक्त करने के लिए उनके शब्द, उनके प्रसंग और प्रस्तुतिकरण अद्वितीय है। कविता की गरिमा को हरिओम पवार कभी कम नहीं होने देते। शायद ही कोई कवि हो जो इतनी बेबाकी से इस देश की पीड़ा को गाता है, जो साहित्य और कवि धर्म को सबसे ऊपर रखता है, जिसकी ओजपूर्ण कविता में भारत का इतिहास, संस्कृति दर्शन और पौराणिक प्रसंगों का इतना बेहतरीन मिश्रण मिलता है। उनकी कविता की एक-एक पंक्ति इस देश कि माटी का गौरव गाती है। हरिओम पवार को सुनने के लिए जनता इतनी उत्सुक होती है कि पूरी रात का इंतज़ार भी उन्हें थका नहीं पाता। मंच पर उनका काव्य होने के पश्चात् सम्मेलन में वही रंग और जोश डालने का कार्य उनके समकक्ष स्तरीय कवि के लिए ही संभव है।

वास्तव में श्री पवार जी आज के इस बदलते परिवेश में युवओं के लिए

आदर्श है जिनका मार्गदर्शन समय-समय पर युवाओं को प्राप्त होता है। हरिओम जी वास्तव में पीड़ा के कवि है उनकी अपनी अलग ही काव्यपाठ की शैली है।.

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश-भाग-2; संपादक-डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 498)

चन्द्रशेखर आजाद

मन तो मेरा भी करता है जुमु–नाचु गाउ में
आजादी की स्वर्ण जयंती वाले गीत सुनाऊ में
लेकिन सरगमवाला वातावरण कहा से लाऊ में
मेघ–मल्हारों वाला अंतःकरण कहा से लाऊ में
में दामन में दर्द तुम्हारे अपने लेकर बेठा हूँ
आजादी के टुटे–फुटे सपने लेकर बेठा हुँ
घाँव जिन्हों ने भारतमाता को गहरे दे रखे है
उन लोगो को झेड सुरक्षा के पेहरे दे रखें है
जो भारत को बरबादी की हद तक लाने वाला है
वेही स्वर्णजंयति का पैगाम सुनानेवाले है
आजादी लाने वालो का तिरस्कार तड़फाता है
बलिदानी पत्थरों पर जुका–बार बार तडफाता है
इन्कलाब की बलबेदी भी जिस्से गौरव पाती है
आजादी में उस शेखर को भी गाली दी जाती है
इससे बढकर और शरम की बात नहीं हो सकती की
आजादी के परवानो पर घात नहीं हो शकती थी
काई बलिदानी शेखर को आंतीक कह जाता है
पत्थर पर से नाम हटाकर खुरसी पर रह जाता है
राजमहल के अंदर हैटै–गैरे तनकर बेठे है
बुद्धीजीवी गांधीजी के बंदर बनकर बेठे है
इसीलिए में अभिनन्दन के गीत नहीं गा सकता हूँ
में पीड़ा की चीखों में संगीत नहीं ला सकता हूँ।।

(चन्द्रशेखर कविता का अंश)

(इन्टरनेट यू ट्यूब के माध्यम से स्वयं श्रव्य)

हुल्लड मुरादाबादी

पुरा नाम : सुशील कुमार चड्डा

जन्म : 29 मई 1942

स्थान : गुजरानवाला (अब पाकिस्तान में)

शिक्षा : बी.एस.सी. एम. ए. (हिंदी)

भाषा ज्ञान : हिंदी, अंग्रेजी

विधाएँ : पद्य

कृतियाँ : तथाकथित भगवानों के नाम, हुल्लड़ का हुल्लड़, सत्य की शाधना, हुल्लड़ की हरकतें, हज्ञान की हजामत हुल्लड, की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ वेलवती एंड पोलवती, यह अंदर की बात है, त्रिवेणी।

अभिनय : संतोष बंधन बाहों का, आई, एस. जौहर कृत फ्लिम नसबंदी में गीत

– महामहिम राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा द्वारा 1994 और 1095 में राष्ट्रपति भवन में अभिनंदन

–अमरीका के बाईस नगरों में काव्यपाठ (94)

– एम. एम. वी. कंपनी द्वारा चार ई. थी, एक एल.पी. तथा दो आडियो कैसेट

– 1994 में टी सीरीज़ द्वारा हुल्लड इन हांगकांग आडियो कैसेट तथा सी.डी. रिजीज हुआ।

– 64 से हिंदी हास्य-व्यंग्य कवि के रुप में मंच पर अवतरित।

– इससे पूर्व 60 से शुशील दिवाकर के नाम से गंभीर लेखन।

सम्पर्क : धीरज उपहार बिल्डिंग, फ्लेट नं. 303, ए विंग, फिल्म सीटी रोड, गोरे गाँव (पुर्व) मुम्बई – 400097

दूरभाष : 28420252

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश-भाग-2; संपादक-डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 508)

कविता :-

चाँद औरोर पर मरेगा, क्या करेगी चांदनी।
प्यार में पंगा करेगा, क्या करेगी चाँदनी।।
लाख तुम फसलें उगा लो एकता की देश में
इसको जब नेता चरेगा,क्या करेगी चाँदनी,
जो बचा था खून वो तो सब सियासत पी गई
खुदकुशी खटमल करेगा, क्या करेगी चाँदनी
दे रहे हड्रेड चेनल नंग दृश्य इस देश में
चाँ इसमें क्या करेगा, क्या करेगी चाँदनी।
क्या करेगा पूर्णिमा का चाँद मेरे वास्ते
आगरा भर्ती करेगा, क्या करेगी चाँदनी।
मत मनाओ जन्मदिन इसको डायबिटीझ है
केक खाते ही मरेगा, क्या करेगी चाँदनी।
जो कि पूरे देश को चारा समझकर चर गए
वक्त जब उनको चरेगा, क्या करेगी चाँदनी।
चाँद से हैं खुबसुरत भूक में दो रोटियां
कोई बच्चा जब मरेगा, क्या करैगी चाँदनी
अस्त इनको कर गये भारत उदय के चोचले
फीलगुड भी ले मरेगा क्या करेगी चाँदनी।
एक शायर भी पिलाकर मंच पर सो गया
जब वो खराटे भरेगा, क्या करेगी चाँदनी ।
उस खुदा ने सब दियापर आज का ये आदमी,
शुक्रिया तक ना करेगा, क्या करेगी चाँदनी।
हाय संसद हो रही है दागियों के नाम पे
अब तिरंगा ले मरेगा, क्या करेगी चाँदनी।।

(हास्य कवियों कि धमाचोकडी, संपादक–अशोक शर्मा,
राधा पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली पृ. 100)

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

जगपालसिंह 'सरोज'

जन्म : विक्रमी संवत् 1991 की शरदपूर्णिमा को

स्थान : गाजियाबाद जनपद के पिलाखुआ स्थान समीप एक छोटे से गाँव में।

शिक्षा : स्नातकोत्तर

विधाएँ : एक सशक्त तथा लोकप्रिय गीतकार – 'गीत-काव्य'

कृतियाँ : गीत संग्रह – 'निलकंठी हो गए सपने', पत्रिका– 'साहित्यलोक'

सन्मान व पुरस्कार : अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित

सम्पर्क : बी–8/161–162, सेक्टर –5, रोहिणी, दिल्ली–110085.

दूरभाष : + 919818071289

(www.kavyanchal.com से)

कविता :

दिग्भ्रमित क्या कर सकेंगी, भ्रांतियाँ मुझको डगर में
मैं समय के भाल पर, युगबोध का हस्ताक्षर हूँ

कर चुका हर पल समर्पित जागरण को
नींद को अब रात भर सोने न दूँगा
है अंधेरे को खुली मेरी चुनौती
रोशनी का अपहरण होने न दूँगा
जानता अच्छी तरह हूँ, आँधियों के मैं इरादे
इसलिए ही, जल रहे जो दीप उनका पक्षधर हूँ

दिग्भ्रमित क्या कर सकेंगी, भ्रांतियाँ मुझ को डगर में
मैं समय के भाल पर, युग बोध का हस्ताक्षर हूँ

मंजिलों के द्वार तक लेकर गया हूँ
हार कर बैठी थकन जब भी डगर में
मान्यताएँ दे न दें मुझको समर्थन
मैं अकेला ही लड़ूँगा, वर्जनाओं के नगर में
अब घुटन की जिंदात के मौन मुखरित करुँगा

मैं धरा पर क्रांति की सभावना का एक स्वर हूँ।
दिग्भ्रमित क्या कर सकेंगी, भ्रांतियाँ मुझको डगर में
मैं समय के भाल पर, युगबोध का हस्ताक्षर हूँ

(www.kavyanchal.com से)

नरेश शांडिल्य

जन्म : 15 अगस्त 1958

स्थान : दिल्ली

शिक्षा : हिन्दी विषय से स्नातकोतर

विधाएँ : ग़ज़ल, गीत, मुक्त छंद, दोहे तथा नाटकों के लिए गीतों की रचना तथा नाट्य प्रस्तुतियों में स्वयं अभिनय आपने किया है तथा नाट्य प्रस्तुति में गीतों की सार्थकता विषय पर एक शोधकार्य।

कार्यक्षेत्र : शिक्षा प्राप्त करने के बाद बैंककर्मी के रूप में आपने आजीविका प्रारंभ की। वर्तमान समय में 'त्रैमासिक-साहित्यिक पत्रिका' 'अक्षरम् संगोष्ठी' के संपादक तथा प्रवासी भारतीयों की अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका 'प्रवासी टुडे' के रचनात्मक निर्देशक हैं तथा नाट्य जगत से भी जुड़े हैं। अनेक नाट्य प्रस्तुतियों में आपने स्वयं अभिनय करने के साथ लगभग 20 नाटकों के लिए आपने 50 से अधिक गीत भी लिखे हैं।

कृतियाँ : **काव्यसंग्रह** – 'टुकड़ा-टुकड़ा ये जिन्दगी', 'दर्द जब हँसता है', 'मैं – सदियों की प्यास' तथा 'कुछ पानी-कुछ आग'

सम्पर्क : ए-5, मनसाराम पार्क, संडे बाज़ार रोड, उत्तम नगर, नई दिल्ली

दूरभाष : +91 9868303565

ई-मेल : nareshhindi@yahoo.com

विशेष : आपकी पुस्तक 'कुछ पानी कुछ आग' की भूमिका में डॉ. बलदेव वंशी आपके विषय में लिखते हैं-''कवि के स्वर में एक चुनौती भी है। निर्धन, उपक्षित, उत्पीड़ित की पक्षधरता में वह दृढ़ता से सन्नध्य ही नहीं, ललकारता भी है – अपनी मानवीय संवेदना की जमीन पर खड़ा होकर – अलमस्त फ़क़ीर और कबीर के स्वरों में। जुझारुपन, संघर्ष और चूनौती को मशाल की तरह उठाये कवि कबीरी-फकीरी दुःसाहस में से हैं, जो अपने समय की अपने से बड़ी राजसी-साम्प्रदायिक, सामाजिक सत्ता-व्यवस्थाओं से भिड़ने से ज़रा भी संकोच नहीं करता।''

उनकी ग़ज़लों की प्रशंसा करते हुए वरिष्ठ कवि बालस्वरूप राही लिखते

हैं– ''दोहा, गीत तथा नुक्कड़'' कविता में पारंगत होने के कारण 'नरेश शांडिल्य' को अपनी ग़ज़लों में इन विधाओं की विशेषताओं का पूरा–पूरा लाभ मिला है। वे हमें कहीं भी बनावटी अथवा ऊपरी नहीं लगतीं। उनकी ग़ज़लों में गीतों जैसी एकान्विति है। यह नहीं कि एक शेर गहरी पीड़ा का है तो दूसरा विलास–क्रीड़ा का। दोहों के अत्यंत सफल कवि होने के कारण उन्हें दोहों की सार्थक संक्षिप्तता का लाभ अपने शेरों की बुनावट में मिला है।''

कविता

सह चुके अब तो बहुत अब सर उठाना चाहिए
आदमी को आदमी होकर दिखाना चाहिए।
कब तलक क़िस्मत की हाँ मैं हाँ मिलाते जाएगे
अपने पैबंदो को अब परचम बनाना चाहिए
आँधियों में खुद को दीये सा जलाएँ तो सही
हाँ कभी ऐसे भी खुद को आज़माना चाहिए
तू मेरे आँसु को समझे, मैं तेरी मुस्कान को
आपसी रिश्तों में ऐसा ताना–बाना चाहिए
हममें से ही कुछ को बेहतर होना होगा सोच लो
साफ़–सुथरा–सा अगर बेहतर ज़माना चाहिए।

(www.kavyanchal.com से)

राजेश जैन 'चेतन'

जन्म : 8 अगस्त 1966

स्थान : हरियाणा के भिवानी जिले में

शिक्षा : वाणिज्य विषय से स्नातकोत्तर

कार्यक्षेत्र : वर्तमान समय में मंच पर सर्वाधिक सक्रिय कवियों में से एक हैं।

कृतियाँ : आपके दो काव्यसंग्रह, दो काव्य संकलन, दो ओडियो सीडी और एक वीडियो सीडी उपलब्ध है।

सन्मान व पुरस्कार : आपके नाम से प्रतिवर्ष एक 'काव्य-सम्मान श्री' प्रदान किया जाता है। तथा दर्जनों पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित।

विदेश यात्रा : दिल्ली के लाल क़िले से लेकर ब्रिटेन, अमरीका और तमाम मुल्कों में विदेश यात्रा।

सम्पर्क : 126, मार्डर्न अपार्टमेन्ट, सेक्टर-15, रोहिणी, नई दिल्ली-110089

दूरभाष : +91 9811048542

ई-मेल : rajeshchetanhindi@gmail.com

(www.kavyanchal.com से)

हस्ताक्षर तक हम करते हैं

एक विदेशी भाषा में
माना हम आज़ाद हो गए
लेकिन किस परिभाषा में

टेलीविजन की फूहड़ता को
पाते हम अंग्रेजी में
दूर देश के चैनल हमको
ललचाते अंग्रेजी में

स्वाभिमान कैसे जागेगा
ऐसी घोर निराशा में
माना हम आज़ाद हो गए
लेकिन किस परिभाषा में

संविधान-निर्माताओं का
संविधान अंग्रेजी में
देश की संसद में होते सब
समाधान अंग्रेजी में

न्यायालय के निर्णय सारे
होते हैं अंग्रेजी में
प्रेस-सभा में नेता अपने
रोते हैं अंग्रेजी में

बच्चों पर अंग्रेजी लादी
हमने किस अभिलाषा में
माना हम आज़ाद हो गए
लेकिन किस परिभाषा में

(www.kavyanchal.com से)

आलोक श्रीवास्तव

जन्म : 30 दिसबर 1971

स्थान : राजापुर, मध्य प्रेदश

शिक्षा : हिंदी में स्नातकोतर

कार्यक्षेत्र : इन दिनों आप दिल्ली में एक समाचार चैनल में कार्यरत हैं।

कृतियाँ : पहला ग़ज़ल संग्रह काफी चर्चित रहा।

सन्मान व पुरस्कार : 'अभिनव शब्द शिल्पी सम्मान' -2002; मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी का दुष्यंत कुमार पुरस्कार-2007; भगवशरण चतुर्वेदी सन्मान-2008; परंपरा ऋतुराज सम्मान-2009; विनोबा भावे पत्रकारिता सम्मान-2009

सम्पर्क : वी-90, भूतल, सैक्टर 12, नोएडा-201301 (उत्तर प्रदेश)

दूरभाषा : +91 9899033337

ई-मेल : aalokansh@yahoo.com

विशेष : ग़ज़ल तथा पत्रकारिता से जुड़े होने के कारण आपकी प्रतिभा में स्वतः ही एक बारीक अन्वेषण की झलक दिखाई देती है।

(www.kavyanchal.com से)

कविता :

तुम सोच रहे हो बस, बादल की उड़ानों तक
मेरी तो निगाहें हैं, सूरज के ठिकाने तक
टूटे हुए ख्वाबों की एक लम्बी कहानी है
शीशे की हवेली से, पत्थर के मकानों तक
दिल काम नहीं करता, अहसास की खुश्बू को
बैकार ही लाए हम, चाहत को जुबानी तक
लोबान का सोंधापन, चंदक की महक में है
मंदिर का तरन्नुम है, मस्जिद की अज़ानों तक
एक ऐसी अदालत है, जो रूह परखती है
महफूस नहीं रहती वह सिर्फ बयानों तक
हर वक्त फिजाओं में, महसूस करोगे तुम
मैं प्यार की खुश्बु हूँ, महकूँगा जमानों तक

(www.kavyanchal.com से)

संध्या गर्ग

जन्म : 31 जुलाई 1966

स्थान : दिल्ली

विधाएँ : आपकी रचनाएँ नारी मन की उन संवेदनाओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करती हैं जो भारत जैसे देश की प्रत्येक कामकाजी महिला के मन में कुलांचे भरती है।

कार्यक्षेत्र : दिल्ली विश्वविद्यालय में वरिष्ठ प्राध्यापिका के पद पर कार्यरत

कृतियाँ : काव्य संग्रह– 'अपना–अपना सच', आपने अज्ञेय पर शोध किया है। तथा तमाम पत्र–पत्रिकाओं में आपके लेख, कविता आदि प्रकाशित होते रहे हैं।

सर्म्पक : ए–1, स्टाफ फ्लैट्स, जानकी देवी मोमोरियल कोलेज, सर गंगाराम अस्पताल मार्ग, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली–110060

दुरभाष : +91 9910002791

ई–मेल : garg.sandhya@gmail.com

विशेष : डॉ. संध्या गर्ग की रचनाएँ, मात्र रचनाएँ न होकर अनुभवों की सतत् पाठशाला से प्राप्त गहन अनुभूतियाँ जान पड़ती हैं। आपकी रचनाओं में नारी के सहज विद्रोह की झलक है।

(www.kavyanchal.com से)

रिश्तों के पौधे

तुमने कहा था–
''रिश्ते'' पौधे होते हैं
जिन्हें पानी देना होता है रोज
नहीं तो वो मुरझाते हैं
और फिर
सड़ जाते हैं एक दिन''
पता नहीं क्यों
मुझे लगा था
कि तुम्हारे रिश्ते
गमले में लगे पौधे हैं
जिन्हें गहरा बोने के लिए
मन की जमीन
शायद नहीं थी तुम्हारे पास
नही तो ऐसा कैसे हुआ
कि वही रिश्ता
उगा मेरे मन की जमीन पर
एक वट वृक्ष की तरह
असंख्य जड़ों के साथ
जितनी थी वो
मन के भीतर
उतनी ही बाहर भी....

(www.kavyanchal.com से)

अरुण मित्तल 'अद्भुत'

जन्म : 21 फरवरी 1985

शिक्षा : प्रबंधन के प्राध्यापक

विधाएँ : ग़ज़ल, कविता, कहानी, लघुकथा, संस्मरण लेख तथा फीचर इत्यादि अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चला रहे हैं। आपका मुख्य स्वर 'ओज' है।

कार्यक्षेत्र : प्राध्यापक कार्य

कृतियाँ : आपकी लगभग 300 रचनाएँ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं एवम् लगभग 50 कविताएँ, ग़ज़लें एवं लेख हिन्दपुष्प, अनूभुति, नई कलम, काव्यांचल, रचनाकार, सृजनगाथा आदि अतंरजाल पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।

सन्मान व पुरस्कार : अग्रवाल सभा, मानव कल्याण संघ, लायंस क्लब सहित अनेक सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं ने आपकी साहित्यिक प्रतिभा तथा आपके साहित्यिक समर्पण के लिए सम्मानित किया है।

हाल ही में सांस्कृतिक मंच – भिवानी ने राज्य स्तरीय 'राजेश चेतन पुरस्कार' (काव्य पुरस्कार) से सम्मानित किया है।

सम्पर्क : हरियाणा टिम्बर स्टोर, काढ मंडी, चरखी दादरी, भिवानी, हरियाणा–127306

दूरभाषा : +91 9818057205

ई–मेल : arunmittaladbhut@gmail.com

(www.kavyanchal.com से)

मैं सही पथ पर न था

ये है सच मंजिल की खातिर मैं सही पथ पर न था
पर मैं ये कहता नहीं कि साथ में रहकर न था

देखने की इसलिए मैं कर सका हिम्मत नहीं
नूर था नज़रों में लेकिन काबिले-मंज़र न था

उन कलाकारों ने नेता बस बुलाए इसलिए
क्योंकि उनके पास सर्कस में कोई जोकर न था

वो अधूरा रह गया यूँ जिन्दगी में देखिये
दिल था उसके पास लेकिन साथ मे दिलबर न था

बात तो उसने यूँ कि थी जैसे कातिल मैं ही हूँ
थी गनीमत इतनी ही इल्जाम बस मुझ पर न था

दाग चहेरे के दिखाकर भी वो 'अचूक' बच गया
आइना था सामने पर हाथ में पत्थर न था

(काव्यचल साइट पर से)

(www.kavyanchal.com से)

श्रवण राही

जन्म : 6 जनवरी 1945

स्थान : उत्तर प्रदेश के एटा जिले के ग्राम सोरा में।

शिक्षा : स्नातकोत्तर

कार्यक्षेत्र : स्नातकोतर तक शिक्षा प्राप्त कर आपने भारतीय-सेना के माध्यम से देश की सेवा की।

कृतियाँ : 'आस्थाओं के पथ' और 'पीर की बाँसुरी'

सन्मान व पुरस्कार : आपके नाम से श्रवण राही स्मृति न्साय की स्थापना की गई है जो काव्य के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है।

मृत्यु : 22 मार्च 2008 को होली के एक कवि-सम्मेलन में कविता पढ़ने के लगभग 300-400 सेकेंड बाद आपने अंतिम साँस ली।

विशेष : आप मंचीय कवि थे। आपके मुक्तकों में सूफियों का समावेश भी होता था तथा राही जी गीत की उस संवेदना के रचनाकार थे। तेन त्येक्रेन भुंजीथा के सुत्र को अपनाते हुए यही विलग पीड़ा आपकी रचनाओं में झलकती है।

(www.kavyanchal.com से)

वीर भगतसिंह

वीर भगतसिंह के आदर्शों का अनुगमन करें हम
उस शहिद को आओ मिलकर शत्-शत् नमन करें हम

जिसने जुल्मों कि आँधी से टकराना सिखलाया
जिसने आज़ादी की शोला हर दिल में सुलगाया
रंग दे बंसती चोला माँ मेरा रंग दे बसंती चोला
फाँसी चढ़ते-चढ़ते जिसने यही तराना गाया
देश द्रोहियों के शोणित की नित आचमन करे हम

जिसके संकल्पों में था भारत का रूप सलोना
जिसका सपना था खेतों में बंदूकों को बोना
जिसकी फ़िकर में था जलते अंगारों पे चलना
भारत माँ के सर से दाग गुलामी का था धोना
उसके सपनो-सा अपने भारत को चमन करें हम

चंदन तिलक लगाकर पूजें भारत की माटी को
जलियावाला बाग समर अदत हल्दी घाटी को
भूल न जाना अमर शहीदे-आज़म की कुर्बानी को
भूल न जाना बलिदानों की अनुपम परिपाटी को
ज़ाफर जय वन्दे के मनसूबों को दमन करे हम

(www.kavyanchal.com से)

शकिल बिझनौरी

जन्म : 16 सितम्बर 1944 , शकील अहमद खान उर्फ–'शकील बिजनौरी' था।

स्थान : बिजनौर

शिक्षा : मेरठ विश्वविद्यालय में ड्राईंग एन्ड पेंटिंग में स्नातकोत्तर तथा लखनऊ विश्वविद्यालय से उर्दू में भी स्नातकोत्तर अध्ययन किया।

कार्यक्षेत्र : उत्तर प्रदेश के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में ए.सी.पी. के पद से सेवानिवृत होने के बाद आप पूर्णतया साहित्य–साधना तथा शोध में संलग्न हैं।

कृतियाँ : 'दश्ते–इम्कां' के नाम से आपका उर्दू शायरी का एक संग्रह सन् 1988 में प्रकाशित हुआ।

– शोधप्रिय प्रवृत्ति ने आप से बिजनौर का राजनीति–सामाजिक इतिहास लिखवाया जो 'बिजनौर दर्पण' के नाम से छपने को तैयार है।

– शायरी में भी शोध करके आपने दो खण्ड में 'तारीख–ए–अदब जिला बिझनौर' के नाम से तीन सौ वर्षों पर आधारित तज़करा–ए–शोरा–ए–जिला बिजनौर लिखा है।

– 'जलती रूहों की गोद में' शीर्षक से आपका हिन्दी ग़ज़ल का एक संग्रह भी प्रेस में है।

सम्पर्क : 'शोक खान' (रामा प्रेस के सामने) 233, चाह शीरी, बिजनौर, 246701 (उ.प्र.)

दूरभाष : +91 9412 609 177 /+91 1342 263249

(www.kavyanchal.com से)

महकते रिश्तों के मंज़र

महकते रिश्तों के मंजर तलाश करते हैं
चलो मकान में फिर घर तलाश करते हैं

यही कहीं था वो खण्डहर तलाश करते हैं
हम अपने नाम का पत्थर तलाश करते हैं

वो कोई नाम हो, दुश्मन हो या कोई हमराज़
हमेशा अपने बराबर तलाश करते हैं

जनूनेइश्क, वफ़ा, प्यार, शोहरतें, रुसवाई
ये संगबार भी औजार तलाश करते हैं

यहाँ अब ऐसी समझदारियों कि भीड़ बढ़ी
बबूल बो के सरोबार तलाश करते हैं

ये क्या अज़ब सरा से गुजर रहा है
सुखनवरी को सुखनपर तलाश करते है।

(काव्यांचल साईट से)

(www.kavyanchal.com से)

श्रद्धा जैन

जन्म : 8 नवंबर 1977 (शिल्पा जैन)

स्थान : मध्य प्रदेश

शिक्षा : मध्य प्रदेश में एज्युकेशन मास्टर्स इन केमिस्ट्री की डिग्री हासिल की।

विधाएँ : ग़ज़सियात

कार्यक्षेत्र : वर्तमान समय में आप सिंगापुर के एक अंतरराष्ट्रीय-विद्यालय मे हिंदी-अध्यापन कार्य कर रही हैं।

सन्मान व पुरस्कार : आपकी रचनाओं को वर्ष-2011 का 'कविताकोश' पुरस्कार मिला।

सम्पर्क : 86, कोर्पोरेशन रोड, लेक होल्झ कोन्डो, सिंगापोर।

दूरभाषा : +65 81983705

ई-मेल : shrddha8@gmail.com

विशेष : आपका मूल नाम शिल्पा जैन है। आपकी ग़ज़लियात में जहाँ सादगी है, वहीं अहसास की हल्की सी छुअन भी है। आपका लेखन संबंधों की ऊष्मा से जीवंत भी है और संवेदना की ओस से नम भी। बिना किसी लाग-लपेट के सीधे-सीधे अपनी बात कहने में आप सक्षम हैं। ग़ज़ल की साधना के दौरान आपने कहीं भी पेचीदगी और विद्रुपता प्रदर्शित करने का प्रयास नहीं किया है। आम आदमी की जुबान में उसके मन की बात कहना आपके लेखन की विशेषता है। श्रद्धाजी इसी समय हर उस प्रयास के साथ हैं जो तकनीक और साहित्य के मध्यपुल निर्माण का कार्य कर रहा है।

(www.kavyanchal.com से)

फानूस की न आस हो

कितना है दम चराग में तब ही पता चले
फानूस की न आस हो उस पर हवा चले

लेता है इम्तिहान अगर सब्र दे मुझे
कब तक किसी के साथ, कोई रहनुमा चले

नफ़रत की आँधियों कभी बदले कि आग है
अब कौन लेके झंडा-ए-अमन-ओ-वफ़ा चले

चलना अगर गुनाह है अपने उसूल पर
सारी उमर सज़ाओं का ही सिलसिला चले

खंजर लिए खड़े हों अगर भीत हाथ में
'श्रद्धा' बताओ तुम वहाँ फिर क्या दुआ चले

(www.kavyanchal.com से)

राजगोपाल सिंह

जन्म : 1 जुलाई

स्थान : उत्तर प्रदेश

विधाएँ : ग़ज़ल, दोहे, गीत।

कार्यक्षेत्र : आई बी से सेवानिवृत्ति होने के बाद वर्तमान में आप पूर्णतया काव्य–साधना में संलग्न हैं।

कृतियाँ : **काव्य संग्रह –**

'जर्द पत्तों का सफर', 'बरगद ने सब देखा है', 'खुशबुओं की यात्रा' और 'चौमास' इसके अतिरिक्त 'परवाज' और ''चंद पल तेरी बाँहों में'' शीर्षक से आपकी दो ओडियो–सीडी भी उपलब्ध है।

सम्पर्क : बी–39, न्यू गोपाल नगर, ढाँसा, रोड, नजफ़गढ, नई दिल्ली–110043

दूरभाषा : +91 9810831831

विशेष : आपके दोहे और गीत श्रोताओं को मंत्रमुग्ध तो करते ही हैं, साथ ही साथ उनकी स्मृतियों में आपका तरन्नुम लम्बे समय तक ताजा बना रहात है। तुलसी, नीम, बरगद, सुरजमुखी और पीपल जैसे रदीकों पर ग़जल कहनेवाला पे शाइर अपनी निजी ज़िन्दगी में भी बागवानी और प्रकृति का इस कट्ट दीवाना है कि साढ वर्ष से अधिक की उम्र में आज भी बरसात के दिनों में खुरपा उठाए गमलों की चुड़ाई करते दिखाई दे सकता हैं। जितनी आपसी ग़ज़लिपात और दोहे सहन हैं उतना ही आपका व्यवहार भी सरल और सादा है।

(www.kavyanchal.com से)

कविता :

कभी तिनके, कभी पत्ते, कभी खुश्बू उड़ा लाई
हमारे घर तो आँधी भी कभी तन्हा नहीं आई।

लचकती डाल को ही सबने लचकाया है इस जग में
सबब टहनी के झुकने का ये दुनिया कब समझ पाई।

मेरा उनसे बिछुड़ना और मिलना ख्वाब था जैसे
लिपट कर रोई है, ताउम्र मुझसे मेरी तन हाई

अजब फनकार है, गढ़ता है शकले सेकडों हर दिन
मगर सूरत कभी कोई किसी से कब टकराई

किसी के मानने, ना मानने से कुछ नही होता
उसी का नुर है सब में, उसी की सब मे रानाई

(www.kavyanchal.com से)

ओम प्रकाश आदित्य

जन्म : 5 नवेम्बर1936

स्थान : हरियाणा के गुरुग्राम जिले के रणसीका ग्राम

शिक्षा : दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि।

कार्यक्षेत्र : हिन्दी काव्य मंच पर अपनी पहचान कायम की।

कृतियाँ : काव्य संग्रह, ''इधर भी गधे हैं, उधर भी गधे है'', 'तोता एण्ड मैना', 'मोर्डन शादी ', 'घट – घट व्यापी', 'गौरी बैठी छत पर', 'उल्लू का इंटरव्यु', सितारों की पाठशाला', 'उड़ गई चिड़िया' और 'अस्पताल की टांग'।

सन्मान व पुरस्कार : दर्जनों पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। जैसे– काका हाथरसी हास्य पुरस्कार, ठिठोली, अट्टहास, टेपा

विदेश यात्रा : दर्जन भर विदेश यात्राएँ की है। जैसे– मौरीशस, अमरिका, बैंकाक, हांगकांग, इंग्लैड, फ्रांस, बेल्जियम, हालैंड, मास्को, मस्कट।

मृत्यु : पूरे जीवन मंच पर सक्रिय रहनेवाला यह रचनाकार 7 जून 2009 को एक कवि–सम्मेलन से लौटते समय सड़क दुर्घटना में हसमे बिछड़ गया।

सम्पर्क : पंचतंत्र, जी 9/12, मालवीयनगर, नई दिल्ली– 110017.

दूरभाषा : +011–26440425, 26444254

विशेष : हिन्दी की वाचिक परंपरा में हास्य के 'शिखर पुरुष' तथा छन्द शास्त्र और काव्य की गहनतम संवेदना के पारखी, व्यंग्य लेख एवं कविताएँ।

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश–भाग–2; संपादक–डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 60)

कविता :

ओ घोड़ी पै बैठे दुल्हे क्या हॅसता है
देख सामने तेरा आगत मुँट लटकाएँ खड़ा हुआ है।
अब हँसता है पिर रोयेगा
शहनाई के स्वर मे तब बच्चे चीखेंगे,
चिंताओ का मुकुट शीश पर धरा रहेगा।
खर्चो की घोडियाँ कहेगी आ अब चढ़ ले
तब तुजको यह पता लगेगा
उस मंगनी का क्या मतलब था,
उस शादी का क्या सुयोग था
अरे उतालवले !!
किसी विवाहित से तो तुने पूछा होगा,
ब्याह–वल्लरी के फूलो का फल कैसा है
किसी पति से तुझे वह बतला देगा,
भारत मे पति धर्म नीभाना कितना भीषण है।
पत्नी के हाथो पति का कैसा शोषण है।
ओ रे बकरे !
भगा सके तो भाग सामने बलिवेटी है,
दुष्ट बाराती नाच कुद कर,
तुझे सजाकर धुम–धाम से
दुल्हन रुपी चामुंडा की भेंट चढाने ले जाएंगे,
गर्दन पर शमशेर रहेगीं,
सारा बदन सिंहर जायेगा,
भाग सके तो भाग रे बकरे,
भाग सके तो भाग

(ओ घोडी पर बैठे दुल्हे कविता का अंश)

देवल आशीष

जन्म : 21 मार्च 1971

स्थान : लखनऊ

शिक्षा : जनसंचार एवम् वाणिज्य में स्नातकोत्तर की उपाधियाँ।

कार्यक्षेत्र : वर्तमान पीढ़ी के लोकप्रिय मंचीप कवि है।

कृतियाँ : प्रथम काव्य संग्रह, 'अक्षर-अक्षर चूम लिया',

सन्मान व पुरस्कार : अनेक संस्थाओं ने इस मधुर गीतकार को विविध सम्मानों तथा पुरस्कारों से अंलकृत किया है।

सम्पर्क : 15, कान्यकुब्ज कोलोनी, (के. के. सी.) लखनऊ- 226001 (उत्तर प्रदेश)

दूरभाषा : +91 94151 54600

ई-मेल : dewal.poet@gmail.com

(www.kavyanchal.com से)

कविता :

हाथ में लिए भविष्य का पता
हम तलाशते रहे स्वतंत्रता
अर्द्धरात्रि में विहान खो गया
यूँ हुआ कि वर्तमान खो गया

क्रांतिकारियों के चिम टाँगकर
रोज चार फूल फेंकते रहे
और देश को धकेल आग में
कर्णधार हाथ सेकते रहे

स्वार्थ के पुजारियों की भीड़ में
माँ को एक भी सपूत ना मिला
देह नींच ने को गिद्ध सेंकड़ों
किंतु एक शांतिदूत न मिला

साँप सर्वशक्तिमान हो गए
भेंड़िये महान हो गए
बंदिशों में राष्ट्रगान खो गया
साजिशों में संविधान खो गया

(www.kavyanchal.com से)

दीपक चौरसिया 'मशाल'

जन्म : 24 सितम्बर सन् 1980

स्थान : उत्तरप्रदेश के उरई जिले

शिक्षा : जैव-प्रौद्योगिकी में परास्नातक तक शिक्षाअध्ययन किया और वर्तमान-समय में आयरलैंड के क्वीन्स-विश्वविद्यालय में पीएच.डी. शोध में संलग्न हैं।

विधाएँ : लघुकथा, व्यंग्य तथा निबंध और कविता, ग़ज़ल, एकांकी तथा कहानियाँ।

सम्पर्क : 22, University Street, Belfast, Northern Ireland (UK)

दूरभाषा : +91 447515 474909

ई-मेल : mashal.com@gmail.com

कविता :

और हम बहुत खुश हैं
कि अच फिर से
वो सब हिन्दुस्तान की अमानत है-
एक अनेक
एक घड़ी
और कुछ भूला-बिसरा सामान

हमें प्यार है
इन सामानो से
क्योंकि ये बापू की दिनचर्या का हिस्सा थे
पर एसा करने से पहले
दिल में बैठे बापू से
एक मशवरा जो कर लेते
तो बापू भी खुश होते
(फिर बापु भी खुश होते) कविता का अंश काव्यानचल

(www.kavyanchal.com से)

रश्मि सानन

जन्म : 21 फरवरी सन् 1965

स्थान : नई दिल्ली

शिक्षा : अंग्रेजी साहित्य तथा शास्त्रीय संगीत में स्नातक।

विधाएँ : ग़ज़लियात, शायरी

कार्यक्षेत्र : देशभर के काव्य-मंचों पर अपनी रचनाओं के माध्यम से पहुँचने वाली आप वर्तमान में भारत के नियंत्रक - महालेखा परीक्षक के कार्यालय में कार्यरत हैं। आप अनेक साहित्यिक संस्थाओं की सक्रिय सदस्य हैं।

कृतियाँ : ग़ज़ल संग्रह - 'तन्हा-तन्हा'

सम्पर्क : 601, सेक्टर-16, फरीदाबाद (हरियाणा)

दूरभाषा : +91 9868 450650

(www.kavyanchal.com से)

कविता :

नाम लेकर तेरा चलते रहे तन्हा–तन्हा
ठोकरे खा के सँभलते रहे तन्हा–तन्हा
सायसा बनके कीसी न न नवाजा हमको
उम्र भर धूप में जलत रहे तन्हा–तन्हा
हमको गेरो का सहारा न था, मंजूर कभी
अपनी उलझन लिए चलते रहे तन्हा–तन्हा
अजनबी बन के ही जी ने का हुनर सीख लिया
अपनी पहचान बदलते रहे तन्हा–तन्हा
दिल के अरमान राबे–हिज्र मेरी आँखों से
अश्क बन बन के नीकल रहे तन्हा–तन्हा
रुट औड़ दिल तो पहले ही हमने सौप थूक
खाली तन था जिसे छलते रहे तन्हा–तन्हा
जब से इन जख्मो को हँशने का हुनर आया है।
गम के उनवान व डलते रहे तन्हा–तन्हा
हमने जल–जल के जमाने को उजाले बरशे
शमुझ की तरह पिघलते रहे तन्हा–तन्हा
जब भी जज्वात ने फुरकत मे सताया 'रश्मि'
उनकी यादो से बदलते रहे तन्हा–तन्हा

(तन्हा – तन्हा) कविता का अंश – काव्यानचल

(www.kavyanchal.com से)

चिराग जैन

जन्म : 27 मई 1985

स्थान : दिल्ली

शिक्षा : पत्रकारिता में स्नातकोत्तर करने के बाद 'हिन्दी लोगिंग' पर शोध कर रहे हैं।

कृतियाँ : 2008- पहला काव्य संग्रह – 'काई यू ही नहीं चुभता' तथा आपके संपादन के कृतियाँ 'जागो फिर एख बार' 'भांवाजलि श्रवण राही को' और 'पहली दस्तक' और आपकी रचनाएँ चार रचनाकारों के एक संयुक्त संकलन 'ओस' में प्रकाशित हुई है।

सम्पर्क : एच-24, पोकेट-ए, आई एन ए कोलीनी, नई दिल्ली- 110023

दूरभाषा : +91 9868573617

ई-मेल : chiragblog@gmail.com

विशेष : चिराग की रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता हैं कि इनमें हिमालय-सी अटलता भी है और गंगा-सा प्रवाह भी। चिराग की रचनाओं के कवास पर दूर तक फैला हुआ एक चिन्तन प्रदेश मिलता है। चिराग की रचनाओं को पढ़कर लगता है कि वह गरीबीकी यातना के भीतर भी इतना रस, इथना संगत, इतना आनंद छक सकता है। नई पीढी का सटीक प्रतिभादित्व कर रहे चिराग को पढ़ना, वीणा के झकृत स्वरों को अपने भीतर समेटने जैसा है।

(www.kavyanchal.com से)

कविता :

चंद सस्ती ख्वाहिशों पर सब लुटाकर मर गई
नेकियाँ चुरगजियाँ के पास आकर मर गई
जिनके दम पर जिंदगी जिते रहे हम उम्र भर
अंत मे वो ख्वाहिश भी डबडबोकर मर गई
वनदसीपी, साजिशे, क्राश्यिो, माता शिक्रस्त
जीत की चाहत के आगे कसमसाकर मर गई

(जीत की चाहत कविता के अंश) – काव्याचंल साईट से.

(www.kavyanchal.com से)

रमेश 'रमन'

जन्म : 5 जनवरी 1949

स्थान : उत्तर प्रदेश के अलीगढ जनपद

शिक्षा : 1970 में स्नातक परीक्षा उतीर्ण

विधाएँ : संगीत तथा काव्य का उद्धुत संगम तथा गीत

कार्यक्षेत्र : उत्तर प्रदेश के सिंचाई विभाग से वैयक्तिक सहायक के पद से सेवानिवृत्त हुए। तथा वर्तमान समय में भगीरथी के तट पर सूकून भरा आशियान बनाकर रहने लगे।

कृतियाँ : सन् 1994 में आपके गीतों की ऑडियो कैसेट- "चाहे जब आ जाना" का लोकापर्ण किया गया।

सम्पर्क : 11/5, प्रोजेक्ट कोलोनी, मायापुर, हरिद्वार, उत्तराखंड-249401

दूरभाष : +91 9412071755

तू अगर पुखाई है तो बादलो के साथ आ,

प्यास धरती की बुझा, यै पेड पौधे मत हिला
खेत की क्यारी है सुखी, आ जरा यहाँ घूम जा
भीगे भींगे होठो से तुं क्यार क्यारी घूम जा
झरनों को दे जिन्दगी और कुछ नदी को कर भला
धूल धरती की उडा मत देख फूलों को सता मत
दर्द सोए तु जगा मत, प्यास को पागल बना मत
गँद सूरज को बनाकर खेल मेघो को खिला
तू अगर पुरवाई है तो, बादलो के साथ आ
प्यास की तु अंजुरी भर, कुछ दान कर, कुछ पुष्य कर,
आ के पैड़ो को नहला जा, कर कृपा इन फूलो पर
परियो के तरह उतर कर सखिया को झूला झुला
तू अगर पूरवाई है तो बादलो को साथ आ

(तु अगर पुरवाई है तो कविता के अंश)- काव्यानचल

कुमार पंकज

जन्म : 15 फरवरी 1980

स्थान : ग़ज़ियाबाद जिले की हापुड़ तहसील के बनखण्डा गाँव

शिक्षा : पत्रकारिता एंव जनसंचार में सनातकोत्तर स्तर तक शिक्षा प्राप्त की।

विधाएँ : गीत, (प्रेम और दर्शन)

कार्यक्षेत्र : एक दशक तक सशस्त्र बल की सरकारी नौकरी में सेवारत रहने के बाद इस सेवा में त्यागपत्र दे दिया।

– वर्तमान समय में आप मेरठ कोलेज के पत्रकारिता विभाग में प्रवक्ता पद पर कार्यरत हैं।

– कवि सम्मेलनों के साथ-साथ तमाम टेलिविझन चैनल्स से भी काव्य पाठ किया है।

कृतियाँ : प्रथम काव्यसंग्रह– ''विष को कौन पचाएगा'' शीग्र प्रकाशित होने जा रहा है।

पत्रकारिता की भी एक पुस्तक– ''ईलैक्ट्रोनिक मीडिया'' पढ़ने को मिलेगी।

विरह गीत–'उर्मिला'

सन्मान व पुरस्कार : देशभर की दर्जन भर संस्थाओ में आपकी साहित्य-सेवा के लिए आपको सम्मालित किया है।

सम्पर्क : ए-69, न्यू फ्रेन्डस कोलोनी, रुढकी रोड, मेरठ, उत्तर प्रदेश 250001.

दूरभाषा : +91 9760748258

ई-मेल : pankaj.isomes2007@gmail.com

(www.kavyanchal.com से)

कविता :–

टूटे, थके–थके पंखो से, खुद अफना आकाश रचो तुम
भीगे नयन, झुलसते सपनों से ही एक इतिहास रचो तुम
जब बाजी भी टूट गए हो, पंखो से बिन मन पाखी हो
उम्मीदों के हाथों मे जब धुन खाई सी बैसाखी हो
सपनो की दुल्हन जब अपने वैरागी तन पर इतराए
जब खावाबों की नर्म हथेली, मायूसी की लट सुलझाए
मन की नाज़ुक छैनी से तब पत्थर का विश्वास रचो तुम
भीगे नयन, झुलसते सपनों से ही एक इतिहास रचो तुम

सुखे मरुथल में भी अक्सर, कुछ बदली छाया करती हैं
कितनी घोर निराशा हो पर, आशआएँ गाया करती हैं
एक हंसी भारी पड़ती हैं– आँसू कितना ही खारा हो
अंधकार सजदा करता है, दो मुदठी भी उजियारा हो
आँशू की खारी पलकों पर, मीठा–सा अहसास रचो तुम
भीगे नयन, झुलसते सपनों से ही एक इतिहास रचो तुम

(www.kavyanchal.com से)

चरणजीत चरण

जन्म : 13 जून 1975

स्थान : नोएडा के छोटे से गाँव रुहेरा में जन्मे

शिक्षा : स्नातकोत्तर (हिंदी तथा राजनीति शास्त्र), एल एल. बी

विधाएँ : ग़ज़ल, छंदबद्ध कविता तथा फिल्म निर्माण

कृतियाँ : हसरतों के आइने (ग़ज़ल संग्रह)

कार्यक्षेत्र : वर्तमान में आप उत्तर प्रदेश सरकार में अध्यापन कार्य से जुड़े हैं। तथा आपने 2009 में ''ये मेरा इंडिया'' नाम से फिल्म बनाई है।

सम्मान : काव्यांचल पुरस्कार

सम्पर्क : खालसा क्लीनिक, मकान नं. 1282, भडाला चौक, नांग्ला रोड, जवाहर कोलोनी, एन आई टी. फरीदाबाद, हरियाणा-121 004

दूरभाष : +91 9868924635

विशेष : संजयलीला भंसाली की फिल्म माय फ्रेन्ड पिन्टो व ये मेरा इण्डिया फिल्म के लिए आपने गीत लिखे हैं।

(www.kavyanchal.com से)

कविता :–

अमन बेच दिया

राग अनुराग व सुहाग सब बेच दिया
भावना का किसी ने सुमन बेच दिया
ममता का मोल बोलने में बीजा खाए झोल
रोटियों में भोला बचपन बेच दिया है।
कामना का भाल विकराल इतना हुआ कि
लालच में घर का अमन बेच दिया है।
दोलत कि भूख यूँ बढ़ी कि मजबूर हो के
कल रात बेटी ने बदन बेच दिया है।

(www.kavyanchal.com से)

जतिन्दर परवाज़

जन्म : 25 फरवरी 1975

स्थान : पठानकोट (पंजाब) के पास एक गाँव शाहपुर कंडी में

शिक्षा : स्नातक

विधाएँ : ग़ज़लियात, शायरी, पत्रकारिता

कार्यक्षेत्र : वर्तमान में आप दिल्ली के एक समाचार-पत्र में कार्यरत है।

सम्पर्क : गाँव- शाहपुर कंडी, तहसील, पठानकोट, पंजाब-145029
दिल्ली- चोपड़ा हाउस ए-21, संजय पार्क, शकरपुर, दिल्ली-110092.

दूरभाषा : +91 9868985658

ई-मेल : jatindreparwaaz@gmail.com

कविता :-

मुझ को ख़ज़र थमा दिया जाए
फिर मेरा इम्तिहाँ लिया जाए
ख़त को नजरों से चूम लूँ पहले
फिर हवा में उड़ा दिया जाए
तोड़ना हो अगर सितारों को
आसमाँ को झुका लिया जाए
जिस पे नफ़रत के फूल उगते हों
उस शजर को गिरा दिया जाए
एक छप्पर अभी सलामत है
बारिशों को बता दिया जाए
सोचता हूँ के अब चरागों को
कोई सूरज दिखा दिया जाए

(www.kavyanchal.com से)

सुषमा भण्डारी

जन्म : 4 अक्टूबर सन् 1965

स्थान : दिल्ली

शिक्षा : हिन्दी विषय में स्नातकोत्तर तक शिक्षाध्ययन

विधाएँ : काव्य की अनेक विधाओं में आप निरंतर लेखन कर रहीं हैं।

कार्यक्षेत्र : वर्तमान में वे दिल्ली नगर निगम में अध्यापिका पद पर कार्यरत हैं।

कृतियाँ : **काव्य संकलन** – 'चंदा मामा', 'मेरा–हिन्दुस्तान', 'गुनगुनाते रहें' , 'शिक्षा एक गहना', 'सुनो कहानी', 'कोपलें', 'मैं सफ़र में हूँ और 'माहिया तेरे लिए'

सन्मान व पुरस्कार : आपको अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों व सम्मानों से नवाज़ा जा चुका है।

सम्पर्क : पारिजात अपार्टमेन्ट, सैक्टर–4, द्वारका, प्लोट नं –28, फ्लैट नं. ए 27, नई दिल्ली–110075

दूरभाषा : +91 9818982753, 9810152263

विशेष : आपकी कविताएँ मानव मन की उन अनुभूतियों की सहज अभिव्यक्ति हैं, जिनको हर मनुष्य जीता तो है पर कह नहीं पाता। देशभर में होनेवाली साहित्यिक – गोष्ठियों में आपकी निरंतर भागीदारी देखी जाती है।

मंजर लगता है

शीशे में भी डर लगता है
ख़ौफ का इक मंजर लगता है
अरमानों का शहर था ये दिल
उजड़ा आज खंडर लगता है
खुद से एसाा रुठा है वे
घर में ही बेघर लगता है
रिश्तों की खेती न उपजे
हरा दिल ही बंजर लगता है
पाप से दहली धरती सुष्मा
सहमा–सा अम्बर लगता है

(www.kavyanchal.com से)

डॉ. कविता किरण

जन्म : 17 दिसम्बर 1968

शिक्षा : एम. कोम., डी. लिटट की उपाधि

विधाएँ : गीत, ग़ज़ल, बालगीत, कविता और कहानियाँ

कार्यक्षेत्र : देशभर में होनेवाला अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में कवियित्रि के रूप में स्थापित। आकाशवाळी, जोधपुर, उदयपुर, जयपुर, तथा दिल्ली से प्रसारित। अनेक प्रतिषिठत पत्र–पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।

कृतियाँ : **ग़ज़ल संग्रह** : दर्द का सफर, कविता संग्रह, तुम कहते हो तो, **लघु कविताएँ** – चुपके – चुपके, **बालगीत संग्रह** – तूफानों में जलते दीपक, **राजस्थानी ग़ज़ल संग्रह** – बखत री बातों, बोली रा बाण, **राजस्थानी काव्य संग्रह** – मुखर मून, **हिन्दी ग़ज़ले** – तुम्हीं कुछ कहो ना

सन्मान व पुरस्कार : सिक्किम के मुख्यमंत्री श्री वन चामलिंग द्वारा सम्मानित। टेपा सम्मान उज्जैन–शहेरी क्लब, गंगटोक से म्मानित। हिन्दी अखादमी, (दिल्ली) से सम्मानित। राजस्थानी सेवा–सम्मान, बीकानेर। कर्णधार सम्मान, राजस्थान पत्रिका, जयपुरा राजस्थानी महिला साहित्यकार सम्मान, नगर श्री युरा। हिन्दीसाहित्य संगम पुरस्कार, बोकारो सहति अनेकों संस्थाओं से सम्मानित।

सम्पर्क : नेहरु कोलोनी, फालना स्टेशन, 306116 जिला. पाली (राजस्थान)

दूरभाषा : +91 9414523730, 98293 17780

ई–मेल : kavitakiran2008@yahoo.in,
kavitakiran2008@gmail.com

विशेष : 'आओ प्यार करे' व 'गुण्डागर्दी' फिल्मों में गीत। भारत–नेपाल मैत्री संघ की और से नेपाल में सम्मानित। दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले पर काव्य–पाठ। लोकगीत गायन के लगभग पन्द्रह ओडियो कैसेट।

(www.facebook.com/kavitakosh & kavitakiran.blogspot.com से)

कविता :-

मोम के ज़िस्म जब पिघलते हैं
तो पतंगों के दिल भी जलते है
जिनको खुद पर नहीं भरोसा है
भीड़ के साथ-साथ चलते हैं
दिन में तारो को किसने देखा है
चोर रातों में ही निकलते हैं
केसे पहचान लेगें चेहरे से
लोग गिरगिट हैं रंग बदलते हैं
सख्तियाँ मुज़रिमों ये होती है,
तब कही जाके सच उगलते हैं
प्यार से सीचकर 'किरण' देखो
पतझड़ों में भी पेड़ फलते हैं।

(www.facebook.com/kavitakosh & kavitakiran.blogspot.com से)

कुमार विश्वास

जन्म : 10 फरवरी 1970

स्थान : विलखुआ, गाजियाबाद, उ.प्र.

शिक्षा : हिन्दी साहित्य में अनुस्नातक किया और इस विषय में स्वर्ण पदक जीता तथा इस विषय में शोधकार्य किया।

विधाएँ : मुक्तक, हास्य, व्यंग्य

कार्यक्षेत्र : देश के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानो जैसे आइआइ एम, आई अई टी, एन आई टी, और अग्रणी विश्वविद्यालयों के सर्वाधिक प्रिय कवि डॉ. विश्वास आज–कल कई फिल्मों में गीत–पटकथा और कहानी–लेखन का काम कर रहे हैं।

कृतियाँ : कविता–संग्रह :– ''एक पगली लड़कीके बिन'' (1995), ''कोई दीवाना कहता है'' (2007), एकल काव्य–पाठो के अलावा डॉ. कुमार विश्वास, 'भारत बोलेः दस स्पीक्स इंडिया' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम के युवाओं से लगातार जुड़े रहते हैं।

सन्मान व पुरस्कार : आपकी एक मुक्तक 'कोई दीवान कहता है' को देश का ''युथ एंथेम'' (युवाओ का गीत) की संज्ञा भी दी गई है; डॉ. कुंवर बेचैन काव्य–सम्मान एवम् पुरस्कार समिति द्वारा 1994 में 'काव्य–कुमार पुरस्कार'; साहित्य भारती, उन्नाव द्वारा 2004 में 'डॉ. सुमन अलंकरण'; हिन्दी–उर्दू अवार्ड एकादमी द्वारा 2006 में ''साहित्य – श्री''

विदेश यात्रा : अमरिका, दुबई, मस्कट, शारजाह इत्यादि देशो में काव्य–पाठ किया है।

विशेष : डॉ. कुमार विश्वास हिन्दी के एक अग्रणी कवी है। श्रृंगार रस के गीत इनकी विशेषता है। डॉ. कुमार विश्वास ने अपना करियर राजस्थान में प्रवकता के रुप में 1994 में शुरु किया था। तत्पश्चात वो अब तक महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य कर रहे हैं, इसके साथ ही डॉ. विश्वास हिन्दी कविता मंच के बसे व्यस्त कवियो में है। उन्होंने अब तक हजारों कविृसम्मोलनों में कविता पाठ किया है। डॉ. विश्वास मंच के कवि होने के साथ–साथ हिन्दी फ़िल्म इंडस्ट्री के गीतकार भी है। उनके द्वारा लिखे गए गीत आनेवाले दिनों में फिल्मों में दिखाई पड़ेंगे। उन्होंने आदित्य दत्त कि फिल्म

'चाय गरम' में अभिनय भी किया है।

डॉ. कुमार विश्वास हिन्दी मंच के एकमात्र ऐसे कवि है, जिनकी कविता (बिना किसी बाद्य यंझ के, अपने स्वरमें) देशके प्राय सभी बड़े मोबाईल ओपरेटरों के कोलर बेक ट्युन (कोल करने वाले को सुनाई देनेवाला ट्रयुन) में सामिल है। डॉ. विश्वास इंटरनेट पर सबसे लोकप्रिय कवि है। विडियो-वेबसाईट यू- ट्रयूब पर डॉ. विश्वास कि एक ही वीडियो को पांच लाख से अधिक बार देखा गया है। जो अन्य कवि के विडियो से कई गुना ज्यादा है।

(www.kumarvishvas.com से)

कविता :

कोई दीवाना कहता है कोई पागल समझता है।
मगर धरती की बैचेनी को बस बादल समझता है।।
मैं तुझसे दूर कैसा हुं, तुम मुझसे दूर कैसी है।
ये तेरा दिल समझता है या मेरा दिल समझता है।।

मौहब्बत एक अहसासो की पावन सी कहानी है।
कभी कबिरा दिवाना था कभी मीरा दीवानी है।।
यहाँ सब लोग कहते हैं, मेरी आंखो में आसूं है।।
जो तू समझे तो मोती है, जो ना समझे तो पानी है।।

समंदर पीर का अन्दर है, लेकिन रो नही सकता।
यह आसूँ प्यार का मोती है, इसको खो नही सकता।।
मेरी चाहत को दुल्हन तू बना लेना, मगर सुन लें।
जो मेरा हो नही पाया, वो तेरा हो नहीं सकता।।

(कोई दीवाना कहते हैं पुस्तक से)

सोम ठाकुर

जन्म : 5 मार्च 1934

स्थान : अहीरपाडा, राजामंडी, आगरा

शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी)

विधाएँ : गीत

कृतियाँ : प्रथम गीत "लौट आओ माँग पे-सिंदूर की सौगंध तुम को", द्वितीय गीत "सागर चरण माटी है", प्रथम कविता – "धर्मयुग" 'शरद ऋतु', तदोप्रान्त, ज्ञानोदय, वीणा, साप्ताहिक, हिन्दुस्तान

फिल्म गीतकार : 'गाँधी का सपना' 'मेरे भैया'

हिन्दी का मासिक पत्र : "नवीन"

प्रकाशित कृतियाँ : 'अभियान'– खँड काव्य, 'एक ऋचा पाटल को'– नवगीत संग्रह

कार्यक्षेत्र : 1960 से 1965 इ.वी. तक आपने अध्यायन का कार्य भी किया, प्रतम आगरा में तदुपंरात सेंट जोन्स कॉलेज हिन्दी विभाग में। उसके उपरांत भौगांव मैनपुरी के महाविद्यालय मे हिन्दी के विभागाध्यक्ष के रुप में नियुकित हुई थी किन्तु इस्तीफा दिया।

सन्मान व पुरस्कार : 'भारतीय आत्मा' पुरस्कार – कानपूर; डॉ. शिवमंगल 'सुमन'– 'गीत पुरस्कार', उन्नाव; काका हाथरसी ट्रस्ट द्वारा ब्रजभाषा पुरस्कार, हाथरस; राष्ट्रभाषा परिषद मुंबई द्वारा महीयसी महादेवी वर्मा पुरस्कार; प्रगतिशील सांस्कृतिक साहित्यिक मंच द्वारा सम्मानित तथा अनेक साहित्यिक सांस्कृतिक, सामाजिक संस्थाओं के सम्मेलनों के अवसर पर सम्मानित किए गये; यश भारती 2006 सम्मान; दुष्यंत कुमार अलंकरण 2009

विदेश यात्रा : अमरिका, कनाडा, मॉरीशस, नेपाल

संपर्क : 26/73 अहीरपाडा, राजा की मण्डी, आगरा।

(पत्र व्यवहार से)

कविता :-

खिड़की पर आँख लगी,
देहरी पर कान,
धूप जारे सूने दालान,
हल्दी के रूप भरे सूने दालान।

परदों के साथ-साथ हड़ता है,
चिड़ियों का खण्डित-सा छायाक्रम
झरे हुए पत्तों की खड-खड में
उगता है कोई मनचाहा भ्रम
मंदिर के कलशों पर
ठहर गई सूरज की कांपती थकान
धूप भए सूने दालान।

(पत्र व्यवहार से)

रमा सिंह

जन्म : 17 ओक्टोबर, 1945

स्थान : उदयपुर

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), उदयपुर, विश्वविद्यालय, पीएच.डी– मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ।

विधाएँ : ग़ज़ल, नवम दशक (समीक्षा)

कार्यक्षेत्र : राणा शिक्षा शिविर पी.जी. कोलेज, पिलखुआ (गाजियाबाद) के हिन्दी विभाग में रीडर अध्यक्ष। फिल्म राइटर्स असोसिएशन था 'आथ से गिलु र्आक इंडिया' की सदस्य।

कृतियाँ : ग़ज़ल संग्रह : 'सीपिया एहसास की', खत– खुशकुओं के, फाइलों में बन्द मौसम, भीग गया मन, पलकों के साये में

संपादक – देश के अनेक वरिष्ठ संपादकों द्वारा संपादित संग्रहों में गीत व ग़ज़ल संपादिता।

कैसेट : मन बंजारा,

सन्मान व पुरस्कार :– देश–विदेश की अनेक सामाजिक, साहितियक संस्थाओ द्वारा सम्मानित व पुरस्कुत। देश–भर के लायन्स, रोटरी क्लब तथा भारत विकास परिषद द्वारा स्थानों पर सम्मानित। नेताजी सुभाषचंद्र (मं. प्र.) द्वारा भारत श्री की उपाधि, जौहर स्मृति संस्थान, चितौड़गढ द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ठ सेवाओं के लिए सम्मानित।

विदेश यात्रा : मोरीशस (84–90), रुस (87) लंदन विश्व हिंदी सम्मेलन में (99)

सम्पर्क : विश्रांत, के एम. 1599, कविनगर, ग़ाज़ियाबाद, 201002 (उ.प्र.)

दूरभाषा : +91 0575–2752638

अन्य : दूरदर्शन, आकाशवाणी से रचनाएँ प्रकाशित देश विदेश में होने वाले कवि–सम्मेलनों में प्रतिष्ठित कवियित्री के रूप में स्थापित।

(www.kavyanchal.com से)

कविता :-

कहा रहा है दुःख
कि सुक भी आयेगा
जिन्दगी के गीत
फिर से गायेगा

तू मनुज है जीत का अनुमान ले,
कुछ न कुछ करने की मन में ठान ले

पेड़ सुखे तो झरी सब पोतियाँ
हर तरफ पसरी हुई खामोशियाँ
पर न चिन्तित-सा दिखा मौसम कभी
राह में कैसी भी हों दुश्वारियाँ

खिल खिलाती ऋतुएँ फिर से आयेगी
फूल, कलियाँ, तितलियाँ मुस्कायेंगी
मेघ झुमेगा मल्हारे गायेगा।
अपनी रिमझिम से हम नहलायेगा

तू भी मन में बादलों से गान ले
कुछ न कुछ करने की मन में ठान ले

देख पानी है किसे प्यारा नहीं,
उसकी रुकती है कभी धारा नहीं
ताल, झरना या कि वो नदिया बना
बन गया सागर मगर हारा नहीं.

दिल में उसके भी मचलती बात है
हर लहर उसका लरजता गात है
चन्द्रमा से उसको कितना प्यार है
पूर्णिमा को उसमें उठता ज्वार है

तू भी वैसी चाह का संसाबा ले
कुछ न कुछ करने की मन में ठान ले

साँझ उतरी रात गहरी हो गई
यूँ लगा कि जिन्दगी ही सो गई
इस गहनतम में छुवी वो भोर है
आस की नाजुक–सी कितनी डोर है

इस गगन पर लालिमा भी छायेगी
सूर्य की उजली किरण फिर ायेगी
पंछी सारे चहचहाकर गायेंगे
बात अपनी इस तरह समझायेंगे

है तपन में छाँह यह भी जान ले
कुछ न कुछ करने की मन में ठान ले

(www.kavyanchal.com से)

अटल बिहारी बाजपेयी

जन्म : 25 डिसम्बर सन् 1926

स्थान : ग्वालियर

शिक्षा : एम. ए.

विधाएँ : व्यंग्य, कविताएँ, लोचनात्मक, व्यंग्योक्तियाँ

कार्यक्षेत्र : पूर्व–व्यवसाय–पत्रकारिता तथा पूर्व राजनेता, प्रधानमंत्री के रूप में संक्षिप्त कार्यकाल के बाद बाजपेयी 19 मार्च 1998 से 19 मई 2004 तक एक गठबंधन सरकार का नेतृत्व किया। वह लखनऊ से संसद के एक सदस्य के रूप में 2009 तक सेवा की है बाद सक्रिय राजनीति से संन्यास लिया। विश्व ख्याति प्राप्त राजनीतिज्ञ

कृतियाँ : सन् 1939 ''ताजमहल'' शीर्षक कविता तदुपरान्त विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में कविताओं तथा लेखादि का प्रकाशन। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्र से प्रसारण।

काव्य – 'कैदी कविराय की कुणुलियाँ', 'मृत्यु या हत्या', 'भाषणों का संग्रह – लोकसभा में अटलजी'

अटल बिहारी बाजपेयी– 'संसद में चार दशक'

भारत की विदेश नीति नई आयाम (1977)

असम समस्या दमन कोई समाधान नहीं (1981)

एक खुले समाज की गतिशीलता (1977)

सन्मान व पुरस्कार : 1992 'पद्म विभूषण'; 1993 'कानपून विश्वविद्यालय से डी. लिट'; 1994 'लोकमान्य तिलक पुरस्कार'; 1994 'सर्व श्रेष्ठ सांसद पुरस्कार' भारत रत्न पंडित गोविंद वल्लभ पंत पुरस्कार

विदेश यात्रा : कई राजनीतिक विदेश यात्राएँ।

सम्पर्क : 6, राय सीना रोड, नई दिल्ली।

विशेष : 16 वर्ष की आयु में स्वतंत्रता– आन्दोलन में गिरफ्तरा। राष्ट्रधर्म (मासिक, से संस्थापक–सम्पादक। 'पांचजन्य' (साप्ताहिक) 'स्वदेश' एवं वीर अर्जुन (दैनिक) पत्रों के संपादक। अधिकांश कविताएँ देश–धर्म–प्रेम से अनुवाणिता।

'कैदी कविराय राय की कुण्डलियां' में आपातकालिन- स्थिति के दौरान नजरबन्धी की अवधि में कारावास में लिखी गई स्फुट- कविताएँ संकलित है। राजनीतिक-मंचो से अपने हृदयग्राही भाषणों के लिए विरोध रुप से लोकप्रिय। आपके द्वारा लिखित व्यंग्य-कविताएँ साहित्यिक-द्रष्टि से सामान्य, परन्तु अन्य रचनाएँ पुष्ट तथा हृदयग्राही हैं।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी द्वारा लिखित-विज्ञापन कविता लिखित 'स्कुल चले हम'बहुत ही सफल रही और पीछले कई वर्षो से आकाशवाणी के रेडियो-स्टेशन तथा दूरदर्शन (दिल्ली) से नियमित रुप से आज दिन तक प्रसरित हो रही है।

(www.atalbiharivajpayee.in से)

गीत नया गाता हूँ

टूटे हुए तारों से निकले वासन्ती स्वर
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर,
झरे सब पीले पात,
कोयल की कुहुक रात,
प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूँ।
गीत नया गाता हूँ।
टूटे हुए सपने की सुनी नहीं सिसकी,
जीवन की व्यथा कथा पलकों पर ठिठकी,
हार नही मानूँगा,
राह नयी ठानूँगा,
काल के कपाल पर लिखता-मिटाता हूँ।
गीत नया गाया हूँ।

(www.atalbiharivajpayee.in से)

बागी चाचा

मूल नाम : जयकिशन कौशिक

जन्म : 23 सितम्बर सन् 1948

स्थान : दिल्ली

विधाएँ : हास्य–व्यंग्य

कार्यक्षेत्र : भारत सरकार के शहरी विकास मंत्रालय में वरिष्ठ लेखाकार के पद से सेवानिवृत्त

कृतियाँ : काव्य–संग्रह– 'पेड़ और पुत्र'

विशेष : आपके व्यक्तित्व की सहजता आपकी रचनाओं में स्पष्ट प्रतिबिंबित होती है। व्याकरण और शिल्प के दाव–पेच से दूर निपट भावभिव्यक्ति आपके लेखन को विशेष बनाती है।

सम्मान : दुष्यंत कुमार अंकलरण 2009

विदेश यात्रा :–अमेरिका, कनाडा, मोरीशस, नेपाल।

सम्पर्क :– 26/73 अहीरपाड़ा, (राजा की मण्डी), आगरा– 2

(www.kavyanchal.com से)

कविता :

खिड़की पर आँख लगी,
देहरी पर कान।

धूप जारे सने दालान,
हल्दी के रुप भरे सुने दालान।

परदों के साथ-साथ उड़ता है
चिड़ियों का खण्डित-सा छाया क्रम
झरे हे पत्तो की खड-खड में
उगता है कोई मनचाहा भ्रम
मंदिर के कलशों पर
ठहर गई सूरज की कांपती थकान
धूप - जारे सुने दालान।

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY • The M. S. University of Baroda

(www.kavyanchal.com से)

श्री बंकट बिहारी ''पागल''

जन्म : 12 अगस्त सन् 1938

स्थान : मथुरा

शिक्षा : बी.ए.

विधाएँ : गीत, हास्य–व्यंग्य, उपन्यास, तथा कहानी लेखन

कार्यक्षेत्र : शासकीय –सेवा में कार्यरता तथा पूर्व एंकाकी मुक– अभिनय के प्रति विशेष रुचि। चित्रकारी का कार्य भी किया। तथा– राजस्थान सरकार की सेवा में कार्यरत।

कृतियाँ : पहली कविता सन् 1958 ई. में प्रकाशित हुई– अनेक कवि–सम्मेलनों में, काव्य–पाठ तथा आकाशवाणी में प्रसारण।

'मंगल सूत्र' तथा 'यमराज' फिल्मों के लिए गीत लिखे। हिन्दी तथा ब्रजभाषा में काव्य–सृजन के अतिरिक्त उपन्यासन तथा कहानी–लेखन

कविता–संग्रह :– ''एक अंजुरी भर पीड़ा''

अप्रकाशित कृतियाँ : मुर्दे की आँख (सामाजिक उपन्यास) कुन्ती (महाकाव्य) अनेक कविताएँ और कहानियाँ

सन्मान व पुरस्कार : काका हाथरसी हास्य पुरस्कार (जयपुर) टेपा पुरस्कार (उज्जैन), सर्वभाषा सम्मेलन (भोपाल) और कहीं संस्थाओं से अगणित पुरस्कार प्राप्त हुए।

विदेश यात्रा :–अमेरिका, नेपाल, तथा मस्कत में काव्य पाठ

सम्पर्क : 30/52/अे, सुवर्ण पथ, मान सरोवर, जयपुर, राजस्थान.

विशेष : श्री पागल ने हास्य–व्यंग्य के कवि के रुप में ख्याति अर्जित की है। ये करुण तथा वीर रसकी रचनाएं लिखते तथा सुनाते हैं। अधिकोंश कविताएँ मुक्त छन्द में लिखि गई है। इनकी काव्य–पाठ शैली श्रोताओं को प्रभावित करती है, इन्होंने विद्‌यार्थी–जीवन में मंच पर एकांकी मुक–अभिनय (मोनो एकटिंग) के प्रति विशेष रुची रही। चित्रकारी की कार्य भी किया। आपने सिरियलों में भी कार्य कियाहै। तथा कन्यादान नामक फिल्म में 18 साल की उम्र मे हीं आपने बुढ़े पिता का रोल किया। तथा नशे पर डोक्युमेन्ट्री फिल्‍ बनी थी इसमें आपने गीत भी लिखे थे।

कविता :–

''मैं रातों की नींद बेचनेवाली,
अंधियारी बेचा करती हूँ,
उजियारा बेचा करती हूँ,
यूँ सेजों की सलवट बेचा करती हूँ,
अपनी हर करवट बेचा करती हूँ,
मेरा खून पसीना होता है,
थक कर चूर बहुत होती हूँ,
इतने पर भी मसरमत देती हूँ,
तब जाकर पैसा लेती हूँ। ''

(अंजुरीभर पीड़ा)

(साक्षात्कार द्वारा)

दीपक गुप्ता

जन्म : 15 मार्च 1972

स्थान : दिल्ली

शिक्षा : कला स्नातक, दिल्ली विश्वविद्यालय

विधाएँ : हास्य-व्यंग्य तथा ग़ज़लियात

कार्यक्षेत्र : हास्य की क्षणिकाओं से घंटो श्रोताओं का मनोरंजन करने में सक्षम आप लौकिक जीवन में अपना व्यवस्या करते है।

कृतियाँ : सीपियो जो बंद मोती (कविता संग्रह) 1995, लगभग 12 हास्य-व्यंग्य संकलनो में कविताये प्रकाशिती हिन्दुस्तान दैनीक, नवभारत टाईम्स, कादमिबनी साप्ताहिक हिन्दुस्तान, गगनांचल, मुक्ता, बाहुनवी, पंजाबी केसरी, दैनिक जागरण, अमर उजाला, लोकमत, टिब्यून आदि प्रतिष्ठित समाचार -पत्र पत्रिकाओं में रचनायें प्रकाशित।

टेलिविजन कार्यक्रम : सब टीवी, एन.डी.टी.वी. दील्ली दूरदर्शन, जनमत टीवी, सहारा समय, जनसंदेश, टोटल टीवी, साधना, प्रज्ञा, फोकस, एस 1, ईन टीवी, आदि... आकाशवाणी दिल्ली के हिन्दी वार्ता, विदेश प्रसारण सेवा तथा राष्ट्रीय चैनल पर विभिन्न कार्यक्रमों का नियमित प्रसारण.

Live Telecast on radio Salaam Namsate Taxas USA 04-10-2007

सब टीवी पर प्रसारित होने वाले क्रार्यक्रम 'वाह-वाह' में प्रथम कवि के रूप में काव्य पाठ।

एन.डी.टी.वी. पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम ऊर्ज किया है, मे प्रथम कवि के रुप में काव्यपाठ।

जनमत टीवी पे प्रसारित होने वाले कार्यक्रम खबरदार खबरें का दिसंबर 2005 से जून 2006 तक सफल संचालन।

सन्मान व पुरस्कार : साहित्य कृति सम्मान :- हिन्दी अकादमी, दिल्ली 1995-96 (कविता संग्रह-रीपियों में बंद मोती हेतु); राष्ट्रीय राजीव गांधी -युवा कवि अवार्ड -1992 एवं 1994; सरस्वती -रत्न सम्मान, अखिल भारतीय स्वतंत्र लेखक मंच -2004; फरिदाबाद गौरव सम्मान -2009 (मानव

सेवा समिति, फरिदाबाद (हरियाणा) द्वारा); संस्कार भारती, हायुड़ द्वारा सम्मानित – 2006; दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी एवं, हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा आयोजित कविता प्रतियोगिता में पुरस्कार; अंतमहाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगिताओं में अनेक पुरस्कार।

विदेश यात्रा : 2004–नेपाल, 2007, ओमान–मस्कट एवं सलालाह, 2010–नेपाल–काठमंडु एवं बीरगंज

कवि सम्मेलनों में काव्यपाठ :– सरकारी संस्थान एवं प्रतिष्ठान :

यु.जी.सी., आई.आई एफ. टी, सी.एस. आई, आर. एफ.सी. आई, हरियाणा पर्यटन विभाग, तिहाड बेल, समाज कल्याणविभाग, अखिल भारतीय आयु विज्ञान संस्थान, जी.बी. पंत अस्पताल, दिल्ली पुलिस, एन.टी.पी.सी, ई. आई.एल. एन. एच. पी.सी, स्टील अतोरिटी ओफ इंडिया, भारत पेट्रोलियम, बी.एस. एन. .एल, वी.एस एम. एल, इफ्को, टी.सी. आई. एल, नेशनल टेक्सटाईल कोरपोरेशन, एयर इंडिया, हयर पोर्ट अर्थोरिटी ओफ इंडिया, हिन्दी अकादमी दिल्ली, हरियाणा साहित्य अकादमी।

* कोरपोरेट सेक्टर :– टाटा फर्टिलाईझर, न्यू होलेंड ट्रेक्टर, ओसवाल फर्टिलाईझर, मोटोरोला, पारसेक टेक्नोलोजी, डी.सी.एम. बैनेटन, आदित्य बिडला ग्रुप, मुरुप्पा ग्रुप, इण्डो एशिनय इजिंनियर्स, सेमसंग, कनमोर विकास

* शैक्षणिक संस्थान :– दिल्ली कोलेज ओफ इंजिनियरिंग, आई.आई. टी, (दिल्ली) खडगपुर, रुडकी, तथा गुवाहटी, जवाहरलाल नेहरु, विश्वविद्यालय बनारसी दास चांदीवाला संस्थान, आकाश इंस्टीट्यूट, फेकल्टी औफ मैनेजमेंट स्टडीज।

* दिल्ली विश्वविद्यालय :– हिन्दू कोलेज, हंसराज कोलेज, मौलाना आजाद मेडिकल कोलेज, मैत्रीय कोलेज, लेडी श्रीराम कोलेज, दयाल सिंह कोलेज, देशबंधु कोलेज, शहिद भगतसींह कोलेज, जाकिर हुसेन कोलेज, शिवाजी कोलेज, राजधानी कोलेज, भीमराव अम्बेडकर कोलेज, पी.बी.डी.ए.बी. कोलेज, विधि संकाय, श्याम लाल कोलेज मोतीलाल कोलेज, राम लाल आनंद कोलेज आदि।

✲ क्लब :– रोटरी क्लब, लायन्स क्लब, शाहबाद मारकण्डा क्लब, हुडा जिमखाना क्लब, करनाल क्लब, जगाधरी क्लब, नोएडा क्लब, बरच्यूस क्लब, न्यू फ्रेंडस कोलेनी क्लब.

✲ गैर सरकारी संस्थान :– ह्यूमन केयर चेरिटेबल ट्रस्ट दिल्ली, जन कल्याण सत्ति, नोएडा, सीनियर सिटीजन एसोसिएशन, दिल्ली, अन्य विभिन्न गैर सरकारी संस्थानों में सहभागिता।

✲ साहित्यिक संस्थाओं में सहभागिता :– साहित्य कला भारती शब्द सेतु, सुरुचि साहित्य कला परिवार, युवा साहित्य चेतना मण्डल, युवा कवि प्रकाश मंच, अट्टहास, अनुभूति साहित्य मंच, अमर भारती संस्थान, उत्तर–मध्य सांस्कृतिक क्षेत्र, अखिल भारतीय स्वतंत्र लेखक मंच आदि

✲ बैंक :– स्टेट बैंक ओफ इंडिया, ओरियण्टल बैंक औफ कामर्स, बेंक ओफ महाराष्ट्र, केनरा बैंक, यु.टी.आई.

✲ अन्य संस्थान :– तीस हजारी कोर्ट, दिल्ली मेडिकल एसोसिएशन, नई दिल्ली बार एसोसिएशन, सेल्स टैक्स बार एशोशिएशन, नोएडा बार एशोशिएशन एवं अनेक रेजिडेंट वेलफेर एशोशिएन।

विशेष :– एक कवि के रुप में दिपक गुप्ता की पहचान हास्य व्यंग्य के रचनाकार और सफल मंच संचालक और संयोजक के रुप में है। बहुत ही कम लोग इस बात से वाकिफ है कि दिपक गुप्ता नाम है उस जहीन शख्स का जिसकी गजलियात अपने आपमें दौरा–ए–हाजिर की तस्वीर को पेश करने की काबिलियत रखती है। हास्य की क्षणिकाओं से घंटो श्रोताओं का मनोरंजन करने में सक्षम है कवि दिपक गुप्ता।

संपर्क : 90 (प्रथम तल), अशोका इन्कलेव पार्ट–सेक्टर 34, फरीदाबाद–121003, हरियाणा, मोबाईल : 981153282, 931153282, निवास : 0129–2250966

ई–मैल : kavideepakgupta@rediffmail.com/yahoo.com/gmail.com

(www.kavideepak.com से)

कविता :-

हैसे हालत आने लगे है
चुटकले भी सुलाने लगे है
एक कविता जमाने के खातिर
उनको कितने ज़माने लगे है
होश कि बात करने लगा हूँ
आप जब से पिलाने लगे हैं
तुमको पाकर लगा जिंदगी में
हाथ मेरे खजाने लगे है
हो न जाउँ कही बेसहारा
मेरे बच्चे कमाने लगे हैं।

(www.kavideepak.com से)

कृष्ण कुमार "नाज"

जन्म : 10 जनवरी 1961

शिक्षा : स्नातकोत्तर, समाजशास्त्र हिन्दी एवंम उर्दू, तथा बी.एड

संप्रति : शासकीय सेवा

विधाएँ : ग़ज़ल, गीत, दोहा, कविता, नाटक

प्रकाशित संग्रह : 'इक्कीसवी सदी के लिए – (गजल संग्रह)' उर्दू 'गुगुनी धूप' गजल संग्रह (देवनागरी)

जीव के परिद्रश्य– नाटक संग्रह – 2010

मन की सतह पर – गीत संग्रह – 2003

सन्मान व पुरस्कार : कार्तिकेय सम्मान – (कार्तिकेय संस्था मुरादाबाद द्वारा); सारस्वत सम्मान – अखिल भारतीय साहित्य कला मंच मुरादाबाद द्वारा; लोकारत्न–रचना' साहित्यिक संस्था बहजोई द्वारा; शब्द श्री की मानद उपाधि– आकार साहित्यक संस्था मुरादाबाद; इसके अतिरिक्त लायन्स क्लब महोबा आदि धर्म समाज, मुरादाबाद, राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सेवा सम्मेलन बरेली, भारतीय साहित्य परिषद मुरादाबाद एवं संस्कार–भारती आपको सम्मानित कर चुकी है; राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति एवं काव्य सुधा साहित्यिक मंच मुरादाबाद द्वारा आपको 'उत्कृष्ठ साहित्य सृजन सम्मान' से सम्मानित किया गया।

विशेष : आपकी चार कृतियाँ प्रकाशित हुई है। यद्यपि ग़ज़ल आपकी प्रमुख विधा रही है परंतु आपने गीत की उसी मनोयोग से लिखे हैं तथा आपके गीत आपके उत्कृष्ट रचनाकर्म को प्रतिबिंब करते हैं।

(पत्र व्यवहार से)

कविता :-

ढूंढ़ता है क्यों भला
आँगन धरों के बीच
ओ पागल, नगर में

थी जहाँ कल झोंपड़ी
अब है वहाँ अट्टालिकाएँ
धूप के दर्सन नहीं होते
यहाँ कपड़े सुखाएँ

जंगलो में था नगर पहले
मगर अब
थना जंगल, नगर में
अब न मिट्टी की छतें हैं
अब न गोबर की लिपाई
हैं वहाँ दीवान
बिछती थी जहाँ पर चारपाई

खटखटाएगा भला क्या
अब किवाड़ों में
नहीं साँकल, नगर में

कद बड़ा, लेकिन बहुत
व्यवहार बौना हो गया है
आदमी जैसी कि काँटों का
बिछौना हो गया है
माँगती है जिन्दगी कुछ
खेरियत की भीख
अब पल पल नगर में ''

(पत्र व्यवहार से)

संतोष यादव

जन्म : 23 सितंबर 1967

स्थान : रेवाड़ी (हरियाणा)

शिक्षा : एम.ए, बी.एड.

कार्यक्षेत्र : हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपना योगदान

कृतियाँ : काव्य तंरग, कशीका, कथा-कलश

सन्मान व पुरस्कार : जनसंस्कृति सम्मान - 2007 डॉ. राधाकृष्ण स्मृति राष्ट्रीय सम्मान।

विशेष : विद्यार्थी जीवन से ही आपको कविताएँ एवं कहानियाँ पढ़ने का विशेष शोक था। आपकी सादी तक सैन्य अधिकारी के साथ हुई और सेन्य जीवन में प्रत्यक्ष भागीदारी से आपका रुझाव वीर रस की कविताओं के प्रति खीचता चला गया। वीर रस से संवधीन आपकी काफी रचनाएँ, विभिन्न सैन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है। कविताओं के साथ-साथ आप कहानी कार के रूपमें भी उभरने की कोशिश कर रहे हैं और आपकी काफी कहानियाँ आज इंडिया रेडियो जोधपुर से प्रसारित हो चुकी हैं।

(पत्र व्यवहार से)

कविता :-

रोक दो तुम इस प्रलय की आँधी को तुम रो क दो,
बरना जन्नत सी यह दुनीया खाक में मिल जाएगी।
प्राणो से प्यारी धरा पट प्रेम से सींचा घिसे,
काल के हाथों में जाकर फिर नही बच पाएगी।
एसी हसी दोड़ में हर ादमी शामिल हुा,
खुद को भी यह भूल बेठा किसकी है ये बद्दुआ।
युद्ध क्या देगा हमें बस भूखमारी की जिल्लतें,
अपने के खूं में रंगकर पछताने और तड़फने।
जिस जमी को खून देकर प्यास से सींचा तुमने
बैर और मजीरत में भरकर रैदन ने क्यों चले पड़े?

(पुकार कविता का अंश, काव्य तरंग- पृ. 17)

योगेन्द्र मौदगिल

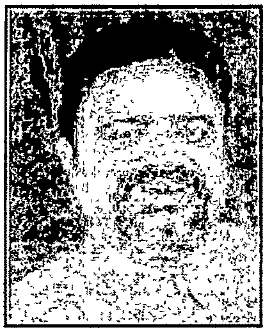

जन्म : 25 सितंबर सन् 1963

स्थान : करनाला (हरियाणा)

शिक्षा : मैट्रिक

विधाएँ : व्यंग्य, दोहा, ग़ज़ल

कार्यक्षेत्र : प्रिटिंग फ्रेस, स्वतंत्र लेखन

कृतियाँ : हास्यमेव जयते, मंजर-मंजर अंगारे, धूल हं लड्ड, देश झा क्या होगा, जमाना लुच्चों का, अंधी आँखे, गीले सपने (ग़ज़ल संग्रह)

सन्मान व पुरस्कार : 2001 में गढ़गंगा शिखर सम्मान, 2002 में कमलवीर सम्मान, 2004 में करील सम्मान, 2006 में युगीन म्मान, 2007 में उदयभान हंस कविता सम्मान, व 2007 में ही पानीपत रत्न से सम्मानित, 2008 में राजेशचेतन काव्य पुरस्कार, 2009 में काव्य रत्न अलंकारण, एवम् अनेक सरकारी-गैर सरकारी संस्थानों व क्लबों से सम्मानित।

संपादन : हंगामा एक्सप्रेस, व्यंग्य-भरे हँसगुल्ले, हास्य कवि दरबार, व्यंग्यमेव जयते, चर्चित व्यंग्य, लघु कथाएँ, सबरंग मुशायरा, नए दौर के चर्चित शेर, कलम दंश, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।

अन्य : यौगेन्द्र मौदगिल जी मंचिय व्यंग्य कवि के रुप में प्रचलित है। भारत भर में अब तक हजारो कवि समेलन में काव्यपाठ तथा संयोजक के रुप में प्रस्थापित काव्य पाठ के अतिरिक्त वह दैनिक भास्कर, मे वर्ष 2000 के दौरान हरियाणा संस्करण में दैनिक काव्य तरकस का लेखन तथा दैनिक जागरण में वर्ष 2007 के दरमियान हरियाणा संस्करा में दैनिक काव्यस्थल म्ह का लेखन उपरांत आज तक उन्होंने सब टी.वी, इंडिया न्यूझ, जी. टीवी, इ टीवी, एम एच टीवी, चेनल वन, इरा चेनल, इटीसी जैन टीवी, सादना, नैशनल चैनल, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से नियमित कविता पाठ। एवं हरियाणा के एकमात्र काव्य पत्रिका 'कमल दंश' का छ वर्षो से निरंतर प्रखाशन व संपादन। हरियाणा से पचासो अखिल भारतीय कवि संमेलनो के सफल संयोजन में सहभागीता।

सम्पर्क : 2393-94, न्यु हाउसिंग बोर्ड, कोलोनी, सैक्टर -12, पानीपत

दूरभाष : 0180-2662393, 4019929,
मोबाईल : 098952 02929, 099662402099

कविता :-

चार पैसे कमा लिए उसने,
चार अपने गँवा लिये उसने
बाज़ से वायदा-फरोसी में,
छत पे पंछी बुला किये उसने,
अपना साया तलक की हार गया,
फिर भी पत्ते बिछा लिए उसने,
आज कोई नया शिगूफा है
लोग इतने बुला लिे उसने
रातभर करवटों से यारी थी
फिर भी सनेप बुला लिये उसने
लोग कहते रहेंगे, कहने दो
और शीशें चढ़ा किये उसने
भेद चमड़ी का जानकर मुदगिल
सारे सिक्के चला लिये उसने

(साक्षात्कार द्वारा)

सूर्यकुमार पांडेय

जन्म : 10 अक्तुबर 1954

स्थान : बलिया

शिक्षा : एम.एस.सी. (सांख्यिकी) जनांकिकी क्षेत्र में शोधकार्य

कार्यक्षेत्र : उ.प्र. सरकार में अधिकारी

कृतियाँ : बाल साहित्य –

गीत तुम्हारे, चुहे राजा, हम बच्चे, फूल खिले, बदंर जी की दूम, मेरी प्रिय बाल कविताएँ, गीत चुममुन, अक्कड़–बक्कड़, गीत–गीत मंजरी, हास्य व्यंग्य, चिकने घरे, वाह–वाह, पेट में दाढियाँ है, रुकावट के लिए खेद है, पांडेगी के ठटाके, अन्य जनसंख्या शिक्षा सिद्धांत एवं उपदियता।

संपादन –

बाल साहित्य, बाल गीतांजलि, बाल साहित्य समीक्षा विशेषांक, केशव प्रयास, परिवार कल्याण विज्ञापन और बच्चे, लोकगीतो द्वारा परिवार कल्याण, गीत संध्या, नीरज, काव्य यात्रा, के पचास वर्ष।

सन्मान व पुरस्कार : उ. प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा 'गीत तुम्हारे' पुस्तक पर पुरस्कार (80), भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर द्वारा उत्कृष्ट बाल साहित्य सेवाओं के लिए पुरस्कृत (80), युथ वर्ल्ड एसोशिएसन, लखनऊ द्वारा अभिनंदन (82), नागेरी बाल साहित्य संस्थान, बलिया द्वारा सम्मानित (87), उ. प्र. हिंदी संस्थान का सूर पुरस्कार (88), महाकवि राष्ट्रीय आत्मा स्मारक समिति कानपुर द्वारा पं. जगदीश सहाय अग्निहोत्री पुरस्कार (89), हिंदी उर्दू साहित्य अवार्ड कमेटी, लखनऊ द्वारा सम्मानित (91) बाल साहित्य संस्कृति कला विकास संस्थान, बस्ती उ.प्र. द्वारा सम्मानित (96) भारतीय फनकार सोसायटी, लखनऊ द्वारा हास्य–व्यंग्य के क्षेत्र में लेखन के लिए अमृतलाल नागर अवार्ड (96) हस्ताक्षर कानपुर द्वारा चमेलीदेवी महँक सन्मान (97), माध्यम लखनऊ द्वारा अट्टहास युवा रचनाकार सम्मान (97), अखिल भारतीय भोजपुरी परिषेद, उ. प्र. द्वारा बोजपुरी शिरोमणी सम्मान(98), काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट, हाथरस का काका हाथरसी पुरस्कार तथा हास्यरत्न की उपाधि (99), बेधड़क

बनारसी स्मृति साहित्य प्रोत्साहन सम्मान (99), कवि कौस्तुभ अलंकरण (2002) राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान उ प्र. प्रथम पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार (2003–04) फुहार सम्मान, विपुल व्यंग्य सम्मान (2004)।

विदेश यात्रा : काव्य पाठ के लिए कई विदेश यात्रा

अन्य : (विशेष) : इसके अतिरिक्त 50 से अधिक पुस्तको में कविताएँ संकलित, निरंतर व्यंग्य स्तंभ लेखन, पत्र–पत्रिकां में विगत 35 वर्ष से निरंतर रचनाएँ प्रकाशित– कविताओ का अग्रेजी, मराठी, बंगला एवं गुजराती में अनुवाद, बाल कविताएँ पाठ्य पुस्तको में संकलित; आकाशवाळी तथा दुरदर्शन के विभिन्न केंद्रो से प्रसारण, देश–विदेश के कवि सम्मेलनो के प्रतिभागिता।

सम्पर्क : 7 त्रिवेणीनगर–2, लखनऊ, 226020 (उ.प्र.)

दूरभाषा : 0522–2369410

कविता :–

गाँव में मैं गीत के आया मुझे ऐसा लगा मेरा खरापन शेष है।
वृक्ष था मैं एक, पतझड़ मैं रहा मधुमास–सा,
पत्र–फल के बीच यह जीवन जीया सन्यास–सा,
कोशिशें बेशक मुझे जड़ से मिटाने को हुई,
मेरा हरापन शेष है।

सीख पाया में नहीं इस दौर की कला,
घोंट पाया स्वार्थ पल को भी नहीं मेरा गला,
गागरें रीतीं न मेरी किसी प्यासे घाट पर,
मेरा भरापन शेष है।

(www.kavyanchal.com से)

विद्याप्रकाश

पिता : श्री रामेश्वर प्रसाद कुमी, माता : श्री यशोदा देवी

जन्म : जुलाई 1976

शिक्षा : एम. ए. हिन्दी

व्यवसाय : अध्यापन कार्य

अध्ययन की व्यापकता : हंस पत्रिका, समकालीन भारतीय साहित्य, समाचार पत्र, साहित्य किताब

रचनाएँ : पाटीदास जागृती में दो बार कविताएँ प्रकाशीत, टीप्पणी, कवि संमेलन समाचार

प्रथम मंचीय पाठ : नवम्बर 2010, स्थानीय स्तर

साहित्य संगीतः 80 कविताएँ, नारी-विमर्शष सामाजीक कविताएँ।

संपर्क : विद्याप्रकाश कुर्मी (ज्ञानदीप) मु. पो कादेड़ा, पहेशील केकडी, अजमेर, राजस्थान।

सत्यपाल सक्सेना

जन्म : 3 जून 1956

शिक्षा : एम. ए. (हिंदी)

विधाएँ : गीत, ग़ज़ल, कहानी।

कार्यक्षेत्र : कवि सम्मेलनों में प्रतिष्ठित गीतकार व कार के रुप में व्यस्तता।

कृतियाँ : छाँव के नजदीक हूँ, मैं फिर आऊँगा, रो मत किन्ना, अपने हिस्से का अनाज (कहानी-संग्रह) आई पतझर (लघुकथा-संग्रह) रात का शहर (ग़ज़ल-संग्रह), हम सब अधुरे हैं मीना (काव्य संग्रह)

सन्मान व पुरस्कार :- छाँव के नजदीक हूँ साहित्य अकादमी हरियाणा द्वारा पुरस्कृत (1982); मैं फिर आऊँगा प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा पुरस्कृत

सम्पर्क :- 2, पी. डब्ल्यु.डी रेस्ट हाउस, सिविल लाईन, गुड़गाँव, हरियाणा, 122001

(www.kavyanchal.com से)

सुरेन्द्र दुबे : (हास्य एवं व्यंग्यकार)

जन्म : 1 जून 1959

स्थान : गुलगाँव, तहसील केकड़ी, जिला अजमेर, राजस्थान

कर्मभूमि : व्यावर, वर्तमान में जयपुर

शिक्षा : एम. कोम. बी.एड

प्रकासित पुस्तकें : 'आओ निन्दा-निन्दा खेले' (हास्य-व्यंग्य, कविताओं का संग्रह), कुर्सी तू बड़ भागिनी (भारतीय लोकतंत्र में चुनाव व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर करती लघु व्यंग्य कविताएँ।)

विदेश में काव्यपठन : थाईलैंड-बैंकाक यू.ए.ई., दुबई, शाहजाह, इंडोनेशिया, जकार्ता, सिंगापुर, अमेरिका, न्युयार्क, न्युजर्सी, फिलेडंल्फिया, लोस एंजिल्स, सेन फ्रांसिस्को, डेर्टान, मेन्फिस, शिकागो आदि में कई-कई बार काव्य पाठ।

सम्प्रति : सम्पादक, कवि सम्मेलन समाचार

कवि - सम्मेलनों में 1978 से कवि, संयोजक और संचालक के रूप में निरंतर सक्रिय हिन्दी की अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में नियमित स्वतंत्र लेखन।

(साक्षात्कार द्वारा)

कविता :

फिर थके हाथों ने देखो
थाम ली पतवार
जाएंगे उस पार

उम्मीदों ने ली अँगड़ाई
सृजन की लय उभर आई
चुभन बनने लगी मरहम
थकन यह देख धराई

नव उमंगो ने किया है
आज फिर श्रृंगार
जाएंगे उस पार

अपरिमित कल्पनाओं से
सुपरिचित कामनाओं से
चकित हो चेतना बोली
समर्पित भावनाओं से

फिर शमित सम्भावनाएँ
ले रहीं आकार
जाएँगे उस पार
रह–रह कौथता प्रण भी
नहीं खुद पर नियंत्रण भी
जर्जर नाव ने पाया है
लहरों का निमंत्रण भी

भंवरधारी नदी में है
बाढ़ के आसार
जाएंगे उस पार

(साक्षात्कार द्वारा)

सुरेश अवस्थी

जन्म : 15 फ़रवरी 1953

शिक्षा : एम. ए. बी.एड. पी.एच.डी.

कृतियाँ : आँधी, बरगद और लोग (काव्य-संग्रह), सब कुछ दिखता है (व्यंग्य संग्रह), शीत युद्ध (कथा-संग्रह), चप्पा-चप्पा चरखा चले (व्यंग्य-संग्रह), नो टेंशन (व्यंग्य संग्रह), कई पुस्तके प्रकाशनाधीन।

कार्यक्षेत्र : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, गुरुनानक कालेज, कानपुर, संवाददाता दैनिक जागरण कानपुर।

दूरदर्शन लेखन : टेलीफिल्म (कथा-पटकथा) पराया धन; माँ-बेटी, वरदान, धारावाहिक फुलवारी, धारावाहिक शीर्षक गीत, निर्माण निशांत, उपललब्धियाँ, सुनहरे सपने, अंधायुग, प्रतिभा, छुट्टी-छुट्टी, छूटते किनारे, विरासत, टूटते सपने, देश भर की हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में कहानी, कविता, लघुकथाएँ व आलेखी का निरंतर प्रकाशन, ''दैनिक जागरण'' कानपुर में 'शहरनामा' स्तंभ में गत 12 वर्ष से हर सप्ताह व्यंग्य-आलेख का निरंतर प्रकाशन, सौ से अधिक रचना संकलनों में भागीदारी।

सन्मान व पुरस्कार : श्री पदमक सम्मान - राज्यपाल श्री बी. सत्यनारायण रेड्डी द्वारा, पर्यावरण पुरस्कार :- राज्यपाल श्री मोती लाल वोरा द्वारा, बाल कल्याण संघ द्वारा बाल साहित्य पुरस्कार, पं. दुर्गाप्रसाद दूबे पुरस्कार व सम्मान, सामाजिक, सुध ।शोध संस्थान द्वारा साहित्य सेवा पुरस्कारः साहित्य परिषद, पूणियाँ (बिहार) द्वारा 'साहित्य श्री' सम्मान, श्री मती चमेली देवी महेंरु स्मृति सम्मान, माध्यम संस्था लखनऊ द्वारा 'अटट्हास' सम्मान। खत्री सभा कानपुर द्वारा हिन्दी सेवा सम्मान।

विदेश यात्रा : ओमान(मस्कट), दुबई- 2005, अमेरीका

सम्पर्क : 117, एल 1233, नवीननगर, कानपुर, 208025 उ. प्र. (भारत)

दूरभाष :- 0512-2500455, 09336123032

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश-भाग-2; संपादक-डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 483)

कविता :–

जैसे ही हिन्दुस्तान ने पाकिस्तान पे
कुटनिटिक दबाव बढाया
पाकिस्तान ने अमेरिका को फोन मिलाया

बाले मेरे आका
हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच
कश्मीर के अळावा कोइ दिवार नहीं है
आपका हात मेरी पीठ पर है
फिर भी हिन्दुस्तान की हिमत तो देखीये
कश्मीर का एक टुकरा तो देना दूर
उस पर सीधे सीधे बात तक करने को तैयार नहीं है

इसलिए माय बाप
अब सीधे–सीधे कुछ किजिए आप
मेरी साँस साँस के पेहरे दार
मेरे मस्तिक, मेरे परवर दिगार

मुझपे रहम खाँव
कश्मीर के मशले पर,
खुलकर मैरे साथ आओ
भारत को समझाओ
ना समझो तो धमकाओ,

अमेरिका बोला
क्या बकते हो, किस होस मे रहते हो
भारत का धमकाऊ !

यानी की तुम्हारी मुसीबत अपने गले लटकाऊ
मीयाँ मीयाँ
वे दिन गये जब भारत हवामें फाकता उड़ाता था
अब तो अग्नि, पृथ्वी, और नाग जेसी मिसाइले उडाता
और मिसाइले उडाते उडाते
मिसाइल मेन देश की रक्षाके लिए राष्ट्रपती बन जाता है।

(अमरिका और पाक वार्ता विषय पर रचित कविता का अंश)

सुरेश नीरव

शिक्षा :- बी. एस बी. एड

कार्यक्षेत्र :- प्रतिष्ठित साहित्यिक, सांस्कृतिक मासिक पत्रिका कादंबिनी के संपादन मंडल से संबंध।

कृतियाँः- समय-सापेक्ष है में, उतराय कविता, सदभाव कविता, शब्द नहीं है हम, भारे के लिए, आठव दशक की व्यंग्य कविता, इक्कीस्वी सदी की दृष्टि, पाटेट्री, ाफ सुरेश नीरव, पयिटिक इलैक्ट्रासि, अनुवाद-भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, फैंस एवं ताईबानी में रचनाओं का अनुवाद।

विदेश यात्रा :- इंगेलैंड, फ्रांस, डेनमार्क मोरिशस एवं नेपाल में अनेक कवि सम्मेलनों का प्रतिनिधित्व एवं संचालन।

अन्य : दूरदर्शन् पर 'कमाल है', 'कम्यूटर मैन', 'पडोसन की कार' 'प्रहरी' आदि धारावहिक में अभिनय के अतिरिक्तअनेक धारावाहिको मे का पटकथा लेखन, जी.टीवी. पर कविता पाठ एवं कवि सम्मेलन का संचालन।

सम्पर्क :-आई -204, गोविंदपुरम, गाजियाबाद (उ.प्र.)

दूरभाष :- 0575-755166, 711160

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश-भाग-2; संपादक-डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 485)

कविता :–

अर्थ हनुमान का जो ना बुझा
तुमने श्रीराम को कहा दूजा
पल मे लंका जला के राख करे
एसा बलवान हे कहां दुजा
सींच मन की धरा दया जल से
रेत मे खिलता है कहां कूजा
प्रजा हस्ते हुए वही ऊप
मंत्र विश्वास का है कहाँ गूंजा
स्वार्थ का भाव ही जहा सुझा
व्यर्थ सारी हुई वहां पूजा।

(यू ट्यूब से सुनकर स्वयं लिखी)

सुर्यप्रकाश अष्ठाना 'सूरज'

जन्म : 10 अक्टूबर 1969

स्थान : भोपाल (म. प्र.)

शिक्षा : एम.ए., एल.एस. जी.डी., एल.एल.बी, ए. वी. आर, एस. आई., एफ. ए।

भाषा ज्ञान : हिन्दी , अंग्रेजी।

विधाएँ : गीत, ग़ज़ल, कविता, निबंध।

कार्यक्षेत्र : नान मेडिकल आसिस्टेंट (कुष्ठ) स्वास्थ्य विभाग, भोपाल (म.प्र.)

कृतियाँ : अनेक पत्र-पत्रिकाओं एवं संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित।

सन्मान व पुरस्कार : अनेक साहित्यिक संस्थाओ द्वारा सम्मानित।

सम्पर्क : 31 गली नं. 1, चटाईपुरा बुधवारा, भोपाल, 462001 म. प्र.

(हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश-भाग-2; संपादक-डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, तथा डॉ. मीना अग्रवाल, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, पृष्ठ 491)

संदीप शर्मा

जन्म : 11-11-1967

स्थान : उज्जैन (म. प्र.)

शिक्षा : तकनीक शिक्षा डिप्लोमा इलेक्ट्रानिक्स, कला स्नातक

व्यवसाय : शिक्षण संस्थान का संचालन

अन्य : अपने करियर के ओरंभ में सन, उषा इलेक्ट्रानिक्स नामक टेलिविजन बनाने वाली कम्पनी से तकनीषियन के रूप में कार्य किया। तदुपरांत, मुम्बई स्थित आई.सी.एम. कम्यूनिकेशन नामक कंपनी में प्रोडक्शन मेनेजर के रूप में कार्य किया। तदोपरांत फिलिप्स कम्पनी के उत्तरीय मध्यप्रदेश में प्रादेशिक कवि सम्मेलनीय मंचो पर सक्रिय रहे। 1994 से अखिल भारतीय मंचों पर अपनी पहचान स्थापित की।

हिन्दी के कवि सम्लेनीय जगत में घाट के राष्ट्रीय ख्याती प्राप्त हास्य कवि संदीप शर्मा का नाम अत्याधिक सम्मान से लिया जाता है। अपने अठ्ठाराह वर्ष के कवि सम्मेलनीय सागर में लगभग एक हजार से अधिक कवि सम्मेलनों में काव्यपाठ और टीवी के अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय चैनलो पर कई धारावाहिकों में सम्मानित काव्य-पाठ द्वारा संदीप शर्मा ने अकल्पनीय ख्याति उर्जित की है। सोनी टीवी के अत्याधिक लोकप्रिय धारावाहिक वाह-वाह में अनुकपुर, जावेद अख्तर, रंग दे बसंती के गीतकार प्रसून जोशी जैसी अनेक फिल्मी और साहित्यिक हस्तियों के समकक्ष संदीप शर्मा को जज बनाया जाना गौरव की बात है। जी.टीवी के धारावाहिक 'क्योंकि यह है हास्य कवि मुकाबला' में संदीप शर्मा ने विजेता होकर एक और सफलता प्राप्त की है। इसके अलावा एन.डी.टी.वी. के धारावारिक 'अर्ज किया है', एशियन टी.वी. के धारावाहिक 'हसगुल्ले', ई. टीवी के धारावाहिक 'गुद गुदी', ''कबीरा खड़ा बाजार में'', ''होली हंगामा'' और ''कलांजली'', लाईव इन्डिया के धारावाहिक 'क्या के अनेक भा बात है'के अनेक मानो में करोड़ों दर्शकों द्वारा संदीप शर्मा को खुब देखी और सराहा गया। कई अवसरों पर अनेक राजनीतिक और फिल्मी हस्तियों और साधू संतों को अपनी कविताओं से भरपुर ठहाके लगवा चुके

हैं। संदीप शर्मा के श्रोताओं में गुजरात के मुख्य मंत्री नरेन्द्र मोदी, श्री लालु प्रसाद यादव, गुजरात के राज्यपाल नंद किशोर शर्मा जैसे कई नाम शामिल हैं। कम ही लोग जानते है कि संदीप शर्मा अपने मंचीय जीवन के पूर्व विज्ञापनों के लिए बनाई जाने वाली फीचर फिल्मों में डॉ. श्री राम लागू, शोभा आनंद, टिकुतलसानिया, तारिक शाह, प्रशांत दायले जैसे कलाकारो के साथ सफल हास्य अभिनेता के रुप में की अभिनय कर चुके है। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में संदीप शर्मा के प्रकाशित पत्र गद्य व्यंग्य, कविताएँ व अन्य विधा की प्रसिद्ध रचनाओं का प्रखाशन भी खुब हुआ है। टेलिविजन के कई हास्य धारावाहिकों में संदीप शर्मा की कविताओं का प्रसारण कभी भी निर्बाध्य रूप से समय–समय पर जारी है।

सम्मान व पुरस्कार : छत्तीसगढ सरकार के संस्कृति विभाग का चक्रधार समारोह का सन् 2005 का सम्मान; प्रखर सम्मान; निराला सम्मान; 10 वाँ खेड़ापति सम्मान; रोटरी क्लब द्वारा सन् 2005 का विशेष सम्मान; स्व. मीना ताई ठाकरे स्मृति संस्थान; नांदेड द्वारा काव्य प्रकाश पुरस्कार; पूर्व केन्द्रीय रेल मंत्री श्री लालु प्रसाद यादव ने संदिप शर्मा सम्मान मे प्रथम श्रेणी की वातानुकीलिन मुक्त रेल यात्रा एक सहर के साथ देश की सभी रेल मार्गो पर राजधानी व शताब्दी गाड़िया सहित करने का मुक्त रेल पास सम्मान में दिया गया।

संपर्क : 'शब्द' एल –38, वीरसावकर धार, (म. प्र.) 454001

दूरभाष : 07292 232596

मोबाइल : 94254 06581

ई–मेल : dhar_sandeep2004@yahoo.co.in

(पत्र व्यवहार से)

कविता :–

उसने प्यार का खेल भी नफरत से खेला,
हर बार वो जालीम मेरी हसरत से खेला,

मेरी जा–ए–दिल पे सारा हक था उसे
दुःख इतना हुआ की वो मेरी गुर्बन से खेला,

दिल तोडा तो बिखरने की ना दिया उसने
मेरे दिल के साथ कितने उल्फत से खेला,
कैसे उसके हाथो मे बरबाद न होता 'फराज'
पहेली बार जिंदगी में कोई इतनी मोहब्बत से खेला।।

(पत्र व्यवहार से)

राजेश शर्मा

जन्म : 15 जुलाई 1956

स्थान : भिंड (म. प्र.)

शिक्षा : बी.एस.सी. (बायो.) एम. ए. (अर्थ)

व्यवसाय : बैक ओफ इंडिया मे सेवारत

अन्य : आपने वर्ष 1978 काव्यलेखन शुरु किया और 1983 से काव्य सम्मेलन मंच से जुड़े है। काव्य पाठ के अलावा आपको संगीत में भी रुची है। आपके द्वारा तैयार कि गई गीत पुस्तक की पाण्डुलिपि प्रकाशन के लिए लगभग तैयार है। आपने लगभग देश के सभी प्रमुख काव्यमंचो से काव्यपाठ किया है, आप देश की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए है, दुरदर्शन के राष्ट्रिय चेनल से प्रसारित तथा आकशवाणी से नियमित प्रकाशन।

सम्पर्क : गीतम 740 ए, गोकुल विहार, गोकुल अपार्टमेन्ट के सामने, सिटि सेन्टर, ग्वालियर – 744011 म.प्र.

(www.kavyanchal.com से)

कविता :-

आँख भर आई सुरों की, याद आई है कहानी,
आज फिर सोने न देगा, रेत को नदिया का पानी

आज देना ही पड़ेगा, आँधियों को भी जवाब
फिर सवालों पर उतर आए किताबों के गुलाब,
जिन गुलाबों से लिपट कर खुब रोई रात-रानी.

युग हुए पदचिन्ह धोए फासलों के दर्द ने
मील के पत्थर भी डूबे, काफिलों की गर्द में
और चला है एक पागल, ढूंढने खोई निशानी

बस धरे रह जाएँगे तब, बाँध के छल-छद्र सारे
ये नदी बह जाएंगी फिर तोड़कर तटबंध सारे,
जब घटाओं से गिरेगा, टूटकर बरखा का पानी

आँख में जब तक है सागर, और अधर पर प्यास है
साँस में सदियों से बिछुड़े गीत का आभास है,
देखना तब तक रहेगी, बांसुरी की जिंदगानी

(www.kavyanchal.com से)

महेन्द्र शर्मा

जन्म :- 25 अगस्त 1954

स्थान :- खलीलपुर, गोरेगांव (हरियाणा)

शिक्षा :- बी.ए.

व्यवसाय :- काव्य सृजन, स्वतंत्र लेखन

प्रकाशित पुस्तके :- प्रेरना, प्रेमपाठ, तंग गली, आहट उजाले की, ऐसा भी होता है, रेत में उगा गुलाब।

विदेश यात्रा :- नेपाल, मोरेशीयस, दुबई, बेंकाक, काव्य पाठ हेतु.

सन्मान व पुरस्कार :-काका हाथरसी सम्मान -2007, हिन्दी अकादमी सम्मान (दिल्ली सरकार) अन्य पुरस्कार से सम्मानित।

अन्य :- आप वर्ष 1980 से काव्य सृजन से जुड़े हुए है। तथा वर्ष 1986 से काव्य मंच से जुड़े हुए है

सम्पर्क :- फ्लेट नं 3073, जोय अपार्टमेन्ट, प्लोट नं -2, सेक्टर -2, द्वारका, न्यु दिल्ली - 75

(www.kavyanchal.com से)

कविता :–

क्या सीन है
एक व्यक्ति मंच पर बैठा
लोगो को बुला रहा था और
अपना जुता अपने ऊपर ही घुमा रहा था
पास खरे सज्जन से हमने पूछा–
इसका यह सांस्कृतिक कार्यक्रम
कब से चल रहा है?
वह बोला–तुझे क्या खल रहा है
न तो यह किसी फिल्म का सीन है
और न ही फिल का अभिनेता है
असल में चुनाव में घेरा हुआ
यह एक बहुत बड़ा नेता है।
नेना की सबसे भिन्न है
और यह जूता
कुछ और नही
इसका चुनाव चिन्ह है।
हमने कहा–जूता घुमाने में
इसे कौन–सा मजा रहा है
वह बोला यार चुनाव मे हुई
हार का एकशन रिप्ले, दिखा रहा है।
इसका भी लाभ उठाया जाएगा।
अगले चुनाव में जीत गया तो जनता पर
और हार गया तो खद पर जुता बजाएगा।

(हास्य कवि ओ की घमा चोकड़ी – पृ. 76)

वेद प्रकाश वेद

जन्म : 4 मार्च 1969

स्थान : दिल्ली

शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी) बी.एड.

प्रकाशन : हिन्दी के अनेकों पत्र-पत्रिकाओं व काव्य संग्रहों में समय-समय पर कविताएँ प्रकाशित

प्रकाशित पुस्तक : हँसी खेल नहीं

काव्य पाठ : देश-विदेश में हजारो मंचो के काव्यपाठ के साथ-साथ आकाशवाणी दूरदर्शन एवं अन्य चैनलों पर अनेकों बार काव्यपाठ

सन्मान व पुरस्कार : ओम प्रकाश आदित्य सम्मान से सम्मानित, हिन्दी अकादमी, दिल्ली के 2007-08 के कका हाथरसी सम्मान से सम्मानित।

विदेश यात्रा : ओमान, दुर्बई, हांगकांग, इंडोनेशिया, थाईलैंड और नेपाल कि काव्य यात्राएँ।

सम्पर्क : 257, पुरानी सेट्रल बेंक बिल्डींग के पास, घोडां दिल्ली- 110053

फोन : 09868267532

विशेष : हिन्दी की वाचिक परम्परा में फूहड़ हास्य को दरकिनार करते हुए आपने शुद्ध हास्त तथा तीखे व्यंग्य से अपनी कविताओं तथा प्रस्तुति का अलंकरण किया. आपकी कविताओं में हँसी की फुहार के साथ सममामयिक परिस्थितियों पर ऐसा तीक्ष्ण कटाक्ष देखने को मिलता है जो यकायक श्रोता और पाठक को सोचने पर विवश कर देता है।

आपका प्रथम काव्य संग्रह हँसी खेल नहीं आपकी लोकप्रिय कविताओं का संकलन है। इस संकलन में वेद का परिचय देते हुए वरष्ठि हास्य कवि सुरेन्द्र शर्मा लिखते है- 'वेद की कविताओं की मुख्य विशेषता यह है कि इनमें' शब्दों कि फिजुलखर्च नहीं है। जिस बात को वेद कहना चाहते हैं, उस तक पहुँचने के लिए वो न्यूनतम-शब्दों का प्रयोग करता है। यही विशेषता उसे गद्यकार से अलग करती है क्योकि गद्यकार बूंद को सागर तक फेलाता है और कवि सागर को बूँद में समाहित करता है।

(पत्र व्यवहार से)

रोबोट की कविता

कमाल हो जाएगा
तारकोल की काली सड़कों का रंग
लाल को जाएगा
छिपकली की कटी पूँछ की तरह
कटे हुए धड़
काली सड़क के
लाल –स्टेज पर
ओर्केष्टा करेंगे
और अपने उन्माद पर पहुँचकर
ओर्कस्ट्रा की धुनें
प्यानो के विस्फोट के बाद
एकदम शांत हो जाएगा
सब कुछ
कर्फ्यू की तरह
जिसमें रोबोट पहरा देंगे
(रोबोट की कविता का अंश काव्यांचल से)

(पत्र व्यवहार से)

पं. विश्वेश्वर शर्मा

जन्म : 15 सितम्बर 1933

शिक्षा : मेट्रिक पास

कृतियाँ : काव्य कृतियाँ – बिंब-बिंब चांदनी, (शिक्षा विभाग राजस्थान)। 'अश्विन के धूप बिंब' (राजस्थान साहित्य अकादमी) 'मैं सच कहता हूँ'

– कथा संग्रह – समानान्तर रेखाएँ

– एक उपन्यास सहित एक और काव्य कृति कालिदास तथा अन्य कविताएँ

संप्रति : स्वतंत्र लेखन एंव स्तरीय मंचो से काव्यपाठ।

– भजन रथ (अनूप जलोटा के सहयोग से)

– सुन छैला (विनस के सहयोग से)

– विभिन्न-पत्र-पत्रिकाओं में गीत, कविताएँ, कहानियाँ और लेख प्रकाशित।

कार्यक्षेत्र : राजस्थान लेखक संघ के उपाध्यक्ष के रुप में कार्य किया।

– पन्द्रह वर्ष तक शिक्षा विभाग, राजस्थान में अध्ययन के बाद सन् 1972 से स्वतंत्र -लेखन।

सम्मान : विशिष्ट साहित्यकार पुरस्कार (राजस्थान साहित्य अकादमी-स्वर्गीय भैरवसिंह शेखावत के हाथों प्राप्त हुआ।)

विदेश यात्रा : कनाडा, यु.एस. ए., दुबई, मस्तक आदि।

सम्पर्क : सप्रति : सी. 10/40, सहाद्री नगर, कांदिवली (पश्चिम) मुंबई

स्थायी पता : श्रीकृष्ण निकुंज, भट्टियानी चौहट्टा, उदयपुर (राज.)

विशेष : पंडित विश्वेश्वर शर्मा आज देश के प्रतिनिधि राष्ट्रीय-कवियों में गिने जाते हैं और उन्हें हिन्दी-कवि सम्मेलन मंच के 'पेरोडी किंग' कहा जाता है। सन् 1960-61 में आप मंचों पर कविताएँ पढ़ने लगे। मूलतः आप गीतकार है, उस जमाने मे मंचों पर साहित्यिक गीत और कविताएँ पढ़ी जाती थीं। अग्रज गोपादास नीरज, बाल कवि बैरागी, आत्म प्रकाश शुक्ल, काका हाथरसी, गोपादास, गोविंद व्यास आदि कवियों का जमाना था और आप भी उन कवियों के समकक्ष जुड़ चुके थे।

सन् 1972 में आप मुंबई चले गये और फिल्मों के गीत लिखने लगे।

जहाँ संन्यासी, दो झूठ, आत्माराम, दुनियादारी, पापी पेट का सवाल है, हथियारा, हिरासत, पनाह, लगाम, आदि कुछ 60 फिल्मों में आपने गीत लिखे। इन्हीं के 'राणी रिक्शावाली' और 'सोल सोमवार' दो गुजराती फिल्मों के गीत भी लिखे और 'एक भौमली' राजस्थानी फिल्म के गीत भी लिखे। आज के समय में मंचों से साहितियक गीत, कविता का पढ़ना बन्ध होने पर तथा हास्य-व्यंग्य का जोड़ होने पर आपने नई विधा पर काम किया। फिल्मी-गीतों की धुनों पर राजनैतिक पेरोडियाँ लिखी जो बहुत लोकप्रिय हुई।

कविता :-

"मैं फिर से निर्माण कर रहा नया बसेरा"

तुम मेरे विश्वासों का गढ़ तोड़ रहे हो
मैं फिर से निर्माण कर रहा नया बसेरा।।
कभी कल्पना की आँखों से जो देखा था
वह संसार निकट है पर अनजाना ही है।
जाने कैसे तुम्हें देख आभास हुआ था?
यह चहेरा इन आखों का पहचाना ही है।।
तुम मेरे अनुमानों का घट फोड़ रहे हो,
मैं फिर से आकार रहा मिट्टी का घेरा
देख-देख कर चलता है पग-पग पर जीवन
लेकिन ऐसे मोड़ कहीं आ ही जाते हैं।
जहाँ रास्ते कई मार्ग भटका देते हैं,
फिर भी चलते पांव लक्ष्य पा ही जाते हैं।।

(अश्विन के धूप बिम्ब-79 कविता का अंश)

(पत्र व्यवहार से)

नंद किशोर सोनी 'अकेला'

जन्म : 8-8-1952

स्थान : आलोट (म. प्र.)

शिक्षा : बी.ए. एल.एल.बी.

कार्यक्षेत्र : स्वर्णकारी व्यवस्या

प्रकाशित पुस्तकें : 'मालवी री मिठास'

कविता :-

सच बोलता है
कमबखत आईना
बहुत बदनाम है
इसलिए आईने के सामने खड़ा
होना भी हिम्मत का काम है।
ऊपर ऊपर से
क्या देखते हो रे
कोई अन्दर से
माल
परखकर तो देखो
सुखे गन्नें में भी
रस भीठा है
कोई चखकर तो देखो

(साक्षात्कार द्वारा)

डॉ. विनोद राजयोगी

जन्म : 24-10-1965

स्थान : सरसोली. जी. फिरोजाबाद (उ.प्र.)

शिक्षा : बी.एस.सी, एम. ए., पी.एच.डी. ईकोनोमिक्स।

कार्यक्षेत्र : प्रिन्सीपाल इन्टर कोलेज, सामाजिक –सेवा।

कृतियाँ : 'भोवरा का परिवार चला था' उपन्यास लेखन, अध्यापन।

सम्पर्क : धीरोर, मेनपुरी, उ. प्र. मो. 09457442950

कविता :-

भोवरा का परिवार चला था
एक चमन की पुल बतिया में
लेय था बेटा भवरां का
सुख से भरी धरी निंदिया ने
देखा सपना प्यार भरा
अधर नीली कली हसती आई
मन मस्त हुआ गंभीर हुआ
करने की याद जगी आई ।

(साक्षात्कार द्वारा)

सर्वेश कुमार अश्थाना

जन्म : 10 सितम्बर

जन्म स्थान : हरदोई, उत्तरप्रदेश

शिक्षा : बी.एस.सी., एल.एल.बी., डी.पी.ए., बी.जे., बी.ए.एम., एस.एम., बी.ए.

कार्यक्षेत्र : स्वतंत्र लेखन

कृतियाँ : 'इनको जानो इन्हें मनावो' (बाल गीत संग्रह), 'खोलता मकरद' (गीत संग्रह), 'तनहानियाँ आबाद है' (ग़ज़ल संग्रह), 'वजीरे–बादशाह' (गद्य–व्यंग्य कविता संग्रह), 'श्मशानघाट' (व्यंग्य संग्रह)

सन्मान व पुरस्कार : जिला प्रशासन लखनऊ द्वारा 'नवोदित रचनाकार सम्मान'; उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'सोहनलाल द्विवेदी' पुरस्कार; हिन्दी–उर्दू साहित्य अर्वाड कमिटि द्वारा अंतरराष्ट्रीय द्वारा युवा साहित्यकार सम्मान।

कविता :

मैं अकसर सोचता हूँ तुम मिलो
कुछ बात हो जाए
घिरे बादल घने से और फिर
बरसात हो जाए
मैं तुमको साथ लेकर कार से
जब घूमने निकलूँ
कि पंक्चर हो सभी टायर वहीं
पर रात हो जाए

(www.sarveshwarasthana.com से)

हलचल हरियाणवी

जन्म : 15 नवंम्बर 1949

स्थान : बिकानेर, रेवाडी, राजस्थान

शिक्षा : सन् 1966 दसवी कक्षा तक

कार्यक्षेत्र : वैद्य

कृतियाँ : 'मोज हो रही से' (काव्यसंग्रह-हरियाणवी) – 'झुम उठे हम' (खड़ी बोली)

सम्मान व पुरस्कार : 2004 में राष्ट्रीय-नवचेतना द्वारा लोककवि; 2006 में अखिल भारतीय साहित्य संगम उदयपुर (राजस्थान) 'हास्यवतार उपाधि'; 2008 – अनुराग साहितियक संस्थान द्वारा सम्मानित; परिषद् और मास्टर नेकीशन साहित्य एवंम लोककला नाट्यपरिषद द्वारा सम्मानित; 2010 में हिन्दी सेवा समिति (मुरेना) म.प्र. द्वारा 'हिन्दी श्री सम्मान'; 2010 में 'मास्टर नेकीराम काव्यपुरस्कार' एवम् आदि पुरस्कारों से सम्मानित।

सम्पर्क :- गांव बीकानेर, जिला- रेवाड़ी, 123401- हरियाणा

दूरभाष :- 09466084381/09416748666

कविता :-

जनता को तो लूटता है सत्ता की दुकानों पर,
बदली है तुला लेकिन हर बाट पुराना है,
दौरंगी सियासत का इतना सा फसाना है,
नेताओं की चान्दी चमचों का जमाना है।

* * * *

सीटी बहुत बजाती थी, कालेज के लोन में
उड़ती थी चाय, बर्फी, समोसे दुकान में
बिन ब्रेक साइकिल चली नीची ढलान में
किन्तु सदा ऊर्ची रही, गुड्डी उड़ान में
केवल किताबों से ही मैं हारा हूँ दोस्तो,
कोलेज में टोप का सितारा हूँ दोस्तो।

(पत्र व्यवहार से) (फेमस पेरोड़ी)

गुजरात के राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मंचीय कवि

अभी तक आप विशिष्ट मंचीय कवियों के विशिष्ट प्रदान और उनकी रचनात्मक उपलब्धियों से लाभांवित हुए हैं। इन्हीं कवियों के समकक्ष गुजरात के मंचीय कवियों को अभी तक इस अध्याय में स्थान नहीं दिया गया इसका अर्थ कदापि यह नहीं कि गुजरात में हिन्दी के स्तरीय मंचीय कवियों का अभाव है अपितु उन्हें एक साथ प्रस्तुत करने का मेरा अपना लोभ इसका कारण जरूर हो सकता है। इससे गुजरात का हिन्दी में योगदान भी नजर आता है।

विष्णु चतुर्वेदी 'विराट'

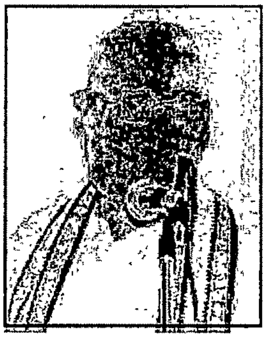

जन्म : 1 जुलाई 1946

जन्म स्थान : मथुरा, उत्तर प्रदेश

शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी., साहित्याचार्य, वेदांताचार्य, बी.एड.

व्यवसाय : अध्यापन (प्रोफेसर, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग महाराजा सियाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा) से सेवा निवृत।

प्रकाशित पुस्तकें : गोस्वामी हरिरायजी और उनका ब्रजभाषा साहित्य, टूटती लकीरें (उपन्यास), बंध कमरे की धूप (उपन्यास), महर्षि अरविंद (जीवन दर्शन, रानी लक्ष्मीबाई (इतिहास), भगवान श्रीकृष्ण (पुराण), बालबाटिका (बालगीत), गोविंद सागर (संपादन), गनपतजी स्मृति ग्रंथ, ब्रज वीथिन में (ब्रजभाषा काव्य), सूरसरसि, निर्वसना (खण्डकाव्य), एक रण वैचारिकी है शेष (काव्य), लीला चीरहरण की, धूम्रवन से लौटते हुए (नवगीत संग्रह), तारक संग्राम (आधुनिक कविता), गजलें और गजलें, ब्राह्मण सर्वस्व, पुष्टिमार्ग का इतिहास, समय साक्ष्य है (काव्य संग्रह), पुष्टि मार्गीय कीर्तन संग्रह, विराट सतसई, मेखदूत काव्यानुवाद, हाथ से छूटे कबूतर (नवगीत संग्रह), तमसा के तट (काव्य संग्रह), लीला अवशेष, लीला विराम।

प्रकाश्य : गुजरात में प्राप्त हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथ, मचस्थ (काव्य संकलन), अजेय कर्ण, चीड़ वन में एक चिड़िया (काव्य संग्रह)।

सम्पादन : पुष्टि मार्ग (अष्टधाम के श्री कृष्णदासजी स्मृति ग्रंथ), गोस्वामी अभिनन्दन ग्रंथ, गो.श्री विठ्ठलनाथजी स्मृति ग्रंथ (संयुक्त संपादन)

पत्रिकाएँ : पुष्टि पज्ञा, वल्लभीय सुधा, पुष्टि पथ, भव्य भारती।

परामर्शक : शब्द भारती (गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी)

सम्मान : 'आशीर्वाद' पुरस्कार, मुंबई; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'श्रीधर पाठक पुरस्कार', लखनऊ; 'साहित्य वारिधि सम्मान' अलीगढ़; 'भारतेन्दु सम्मान', कोटा; 'ब्रजभाषा शिखर सम्मान' नाथद्वारा; 'साहित्यकार सम्मान' जयपुर, 'साहित्य श्री' रावत भाटा। अन्य अनेक संस्थाओं से सम्मानित व पुरस्कृत।

संपर्क : 406, ब्रजवाटिका, लिटल फ्लॉवर स्कूल के सामने, सिद्धनाथ रोड, वडोदरा, गुजरात।

पिता

स्वरों में वेद तक जो लय—पिता है।
घने वटवृक्ष-सा आश्रय—पिता है।।

सुगंधित मलय-वन-सी शांति है यह,
धवल हिमगिरि तुषारालय—पिता है।

परम गंभीर व्यापक सिंधु-सा है,
समर-संसार में जो जय—पिता है।

चटकती बाँझ-सी सूखी धरा पर,
बरसता व्योम से जो पय—पिता है।

सहस्रों व्याधियों में जो न टूटे,
अटल संकल्प दृढ़ निश्चय-पिता है।

विषम विष पी बना है नीलकंठी,
किसी भी प्रलय से निर्भय—पिता है।

सहस्रों नेत्र कर पद शीष जिसके,
अनस्वर है, अजर, अक्षय—पिता है।

(साक्षात्कार द्वारा)

नवीन प्रकाश सिंह 'नवीन'

जन्म : 3 मार्च 1941

स्थान : गढ़ीगाँव, सीतापुर जिला, उत्तरप्रदेश

शिक्षा : एम.एस–सी (जियोलॉजी), पी–एच.डी।

व्यवसाय : सेवा–निवृत्त ओ.एन.जी.सी., वडोदरा.

विधाएँ : गीत, अनुवादन

प्रकाशन : मुट्ठी भर आकाश (काव्य संग्रह)

संपर्क : ए–5, सूर्यांश, साकेत हाउसिंग कॉलोनी, सुसेन तरसाली रिंग रोड, वडोदरा।

विशेष : आप वैज्ञानिक होते हुए भी कविता के क्षेत्र में निरन्तर आगे बढ़ते रहे। आपने असमिया और अंग्रेजी कविताओं का भी काव्यनुवाद किया है। आपकी कविताओं में भारतीय संस्कृति के उदात्त जीवन–दर्शन को मिथकीय संस्पर्श देकर बड़े ही ओजपूर्ण शब्द–वैभव के साथ प्रस्तुत किया गया है।

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 115)

चक्रव्यूह

जब प्रकाश झरने लगता कच्चे आँगन खलिहानों में,
जाने क्यों धरती का मौसन, आग उगलने लगता है।
शायद सुविधाजनक नहीं दो-टूक सत्य उजियारे का,
छली अँधेरा साँझ ढले हर द्वार गरजने लगता है।

बहुत दिनों से तम-प्रकाश में देवासुर संग्राम छिड़ा है,
कितना खून बहा है, लेकिन पीढ़ी हार नहीं मानेगी।
अंधकार राक्षस ने यद्यपि जीत लिया कोना-कोना है,
दीप-शिखा घर-घर की, लेकिन युद्ध अँधेरे से ठानेगी।

सौ-सौ बार चढ़ा सागर है चट्टानों के सीने पर भी,
नदियों के नन्हे हाथों ने पीछे उसे धकेला हरदम।
गर्द समय की कालान्तर में हिम-शिखरों पर चढ़ जाती है,
बीस भुजा से लड़ा दशानन, विजयी राम अकेला हरदम।

सूरज के घर से आया है शक्ति-स्त्रोत यह नया उजाला,
अंधकार के हठी भीष्म को शर-शय्या पर सोना होगा।
चक्र सुदर्शन छूट रहा है अधनंगों की अब उँगली से,
अत्याचारी शिशुपालों को गर्वोन्नत सर खोना होगा।

शंखनाद कर रहीं दिशाएँ, समरभूमि हर घर-आँगन है,
चक्रव्यूह रच रहा अँधेरा द्वार तोड़ने कठिन पड़ेंगे।
रोक न पाएगा यह आँधी अब अभिमन्यु अकेला कोई,
शुभ प्रभात की बेला होगी, जब कृष्णार्जुन साथ लड़ेंगे।

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 116)

सैयद अली अहमद 'नदीम'

जन्म	:	19 अक्टूबर 1953
स्थान	:	विषनगर, गुजरात
शिक्षा	:	एम.ए. अर्थशास्त्र, पी–एच.डी. (व्यवसायिक अर्थशास्त्र)
व्यवसाय	:	महाराजा सियाजी विश्वविद्यालय में एसोसीयेट प्रोफेसर
प्रकाशन	:	एहसास (गजल संग्रह) देवनागरी और उर्दू लिपि दोनों में।
विशेष	:	आप पिछले 25 वर्ष से मंच पर काव्य पाठ कर रहे हैं और आप राष्ट्रीय स्तर के कवि सम्मेलनों के कवि हैं। आपका अभ्यास अर्थशास्त्र से होने के बावजूद आपका गजलों और हिन्दी साहित्य के प्रति काफी लगाव रहा है। आपने कविता में छन्द शास्त्र का गहरा अध्ययन किया है। आप हिन्दी और गुजराती भाषा में गजलें लिखते हैं और सैंकड़ों मंचों से काव्य पाठ कर चुके हैं। आपकी गजलों से प्रभावित होकर आपसे गजलों का ज्ञान लेने वालों में मंच के वरिष्ठ कवि भी हैं।

आप वर्ष 94–99 तक गुजरात उर्दू साहित्य अकादमी में मेम्बर रह चुके हैं। उर्दू शायर नामक मेंगेजिन गुलबक्ष में आपकी काफी रचनाएं प्रकाशित हुई हैं। आपकी गजलों को वर्तमान पत्रों में भी स्थान मिला है। आपकी गजलों पर तरवीन्दर अरोरा और किशोर जैकी ने अपने गजल आल्बम में कंठ दिया है।

(साक्षात्कार द्वारा)

कविता :

वक्त इंसा को फकत एक ही पल देता है।
और इंसा उसे सदियों में बदल देता है।

मैं इसी वास्ते जख्मों को सहे जाता हूँ
हर नया जख्म मुझे गजल देता है।

तू है नासेद के नसीहत की जरुरत है तुझे
बेअमल हो के मुझे दर्से अमल देता है,

बुग्जो नफरत के एवज प्यार महोब्बत बाटों
पेड़ पत्थर के एवज जैसे के फल देते हैं।

जाके कहे दो ये सपेरों के इंसा पालें
क्योंकि इंसा भी तो अब जहर उगल देता है

मसअला जो न सुलज पाये खिरतमंदो से
उसका अकसर कोई दीवाना ही हल देता है।

वो जो मुख्लीस है 'नदीम' उसकी तो हालत है बुरी
उसको रस्सी की तरह हर कोई बल देता है।

(साक्षात्कार द्वारा)

डॉ. नलिनी पुरोहित

जन्म : 22 अक्टूबर 1954

स्थान : राँची, बिहार

शिक्षा : एम.एस-सी (रसायन शास्त्र), पी-एच.डी.।

व्यवसाय : व्याख्याता, रसायन शास्त्र, महाराजा सयाजी विश्वविद्यालय, वडोदरा।

विधाएँ : काव्य

प्रकाशन : अनुभूति (काव्य संग्रह), 1993; उर्मिल हेली (गुजराती काव्य संग्रह), 2000; मातृभूमि कच्छ ना संस्मरणो गुजराती भाषा में प्रकाशित

पुरस्कार/सम्मान : ध्रुव प्रकाशन अहमदाबाद द्वारा 'साहित्य सारस्वत' से सम्मानित, सन् 2000।

संपर्क : ए-81, राधाकृष्ण पार्क, अकोटा गार्डन के पास, अकोटा, वडोदरा।

(साक्षात्कार द्वारा)

एक तस्वीर

कमरे में लटके ईसा मसीह
मुझे सिर्फ एक तस्वीर नजर आते हैं
खून के धब्बों में
मुझे केवल लाल रंग दिखाई देता है,
किन्तु
जब भी अन्याय से लड़ते हुए
मैं थककर निहारती हूँ उन्हें
तो मुझे उस तस्वीर से
खून रिसता नज़र आता है।
मैं खून का स्पर्श करती हूँ
और उसकी एक-एक बूँद
मुझमें
नया जीवन संचरित करती रहती है
लेकिन तभी तक,
जब तक वह
एक तस्वीर नहीं बन जाती।

(साक्षात्कार द्वारा)

डॉ. माणिक मृगेश

जन्म : 1 सितम्बर 1952

स्थान : अलीगढ़, उत्तरप्रदेश

शिक्षा : एम.फिल, पी–एच.डी (भाषा विज्ञान), एल.एल.बी.

व्यवसाय : उप प्रबंधक (हिन्दी) इंडियन ओयल कार्पोरेशन लि., गुज. रिफाइनरी।

प्रकाशन : राजभाषा विविधा, समाचार पत्रों की भाषा, भूमंडलीकरण, निजीकरण व हिन्दी, हास्य व्यंग्य के रंग, तोल–तोल के बोल।

पुरस्कार/सम्मान : भारतेन्दुमान पुरस्कार, राजभाषा विभाग से राजभाषा कार्यान्वयन के उत्कृष्ट निष्पादन के लिए पुरस्कृत।

संपर्क : मृगेशायन, 22 बी मनोरथ सोसायटी, न्यू समा रोड, वडोदरा।

(गुजरात के हिन्दी साहित्यकार, सं. प्रो. भूपतिराम बद्रीप्रसाददोत साकरिया, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य अकादमी, पृ. 79)

न कोई नानक है, न कोई कबीर है

हाँ जी हुजूर, मैं कवि बेचता हूँ,
जी हाँ हुजूर, मैं कवि बेचता हूँ।
तरह–तरह के भाँति–भाँति के
किसिम–किसिम के कवि बेचता हूँ।
कुछ कवि काफी सस्ते हैं,
कुछ बड़े महँगे हैं, कुछ चंगे हैं,
तन से कुछ उजले हैं, विचारों से बड़े नंगे हैं।
कुछ संगीन हैं, कुछ रंगीन हैं,
कुछ कमसिन हैं कुछ हसीन हैं।
हाँ जी हुजूर, मैं कवि बेचता हूँ,
जी हाँ हुजूर, मैं कवि बेचता हूँ।

मेरे पास मंच के कवि भी हैं
मेरे पास लंच के कवि भी हैं।
मैं सब रसों के कवि बेचता हूँ
हास्य से लेकर वीभत्स के कवि बेचता हूँ
मैं राजनीतिक, धार्मिक सामाजिक –
सभी तरह के कवि बेचता हूँ।
मेरे पास कुछ दलित कवि भी हैं,
मेरे पास कुछ ललित कवि भी हैं।
कुछ जनवादी कवि हैं मेरे पास,
कुछ विद्रोही हैं,
कुछ सुधारवादी हैं, कुछ आशावादी हैं।
सरकार, अर्द्धसरकारी और कुछ गैरसरकारी हैं,
क्रांतिकारी, शाकाहीरी और कुछ माँसाहारी हैं।

हाँ जी हुजूर, मैं कवि बेचता हूँ,
जी हाँ हुजूर, मैं कवि बेचता हूँ।

और कहता हूँ–
मेरा पास कवि तो असंख्य हैं बेशुमार हैं,
मगर मूलतः
उनमें से कुछ ब्राह्मण हैं, कुछ ठाकुर हैं, कुछ चमार हैं,
कुछ परमार हैं,
इसलिए मेरी कविता की यही पीर है
और हिन्दी–कविता की यही पीर है।
यहाँ कवि तो बहुत हैं
मगर न कोई नानक है
न कोई कबीर है।

(कविता के कुछ अंश)

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 150–151)

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

डॉ. राम कुमार गुप्त

जन्म : 1 अप्रैल 1935

स्थान : बयाना, भरतपुर, राजस्थान।

शिक्षा : एम.ए, पी–एच.डी।

व्यवसाय : अध्यापन व लेखन। पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदाबाद

प्रकाशन : हिन्दी साहित्य को गुजरात के संतों की देन, आधुनिक हिन्दी नाटक और नाट्यंकार, हिन्दी नाटक के प्रमुख हस्ताक्षर, बिंदिया के बोल (काव्य संग्रह), धुएँ का शहर (काव्य–संग्रह), क्षण का सौदागर (काव्य–संग्रह), स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी (संपादन), विद्यानिवास मिश्र के ललित निबंध (सह लेखन), गुजरात का भक्ति–काव्य (संपादन), हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में गुजरात का योगदान (संपादन), नयी धरती : नया आकाश (सह संपादन), काव्यांजलि (संपादन), गद्यांजलि (संपादन) गुजरात हिन्दी प्राध्यापक परिषद, परिचायिका (सह संपादन)

पुरस्कार/सम्मान : साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद द्वारा 'विद्यावाचस्पति' की उपाधि।

संपर्क : 2, अमर आलोक एपार्टमेन्ट्स, बालवाटिका, मणिनगर, अहमदाबाद।

विशेष : गुजरात की विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़े गुप्त जी पिछले कई वर्ष तक गुजरात यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे। आपके शोध, समीक्षा और सम्पादन से सम्बन्धिक कुछ ग्रंथ प्रकाशित हैं। आपकी कविताओं में जीवन मूल्यों के विघटन की पीड़ा और समसामयिक युग–चेतना की जागरूकता को बिम्बात्मक प्रस्तुति मिली है।

(गुजरात के हिन्दी साहित्यकार, सं. प्रो. भूपतिराम बद्रीप्रसाददोत साकरिया, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य अकादमी, पृ. 93)

सबसे बड़ा पेट है

सफेद पंख वाले बगुले
सब कुछ खा गए,
पर
रहे भूखे-के-भूखे ही।
अब सरोवर में पड़ी हड्डियाँ
निपोड़ रहे हैं।
सोचते हैं-
जिता जिया जाए,
जी लेंगे
सरोवर में बचा पानी
जितना पिया जाए,
पी लेंगे।
क्या होते हैं मूल्य और संस्कार ?
अस्मिता के खोखले दावे?
सबसे बड़ा पेट है।
अगर वह भरा है,
तो सब कुछ सत्य है
अगर खाली है,
तो सब असत्य है,
मिथ्या है।

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 171)

रमेश चन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

जन्म : 2 फरवरी 1935

स्थान : अलीगढ़, उत्तरप्रदेश

शिक्षा : वाणिज्य स्नातक

व्यवसाय : सेवा-निवृत्त लोक परीक्षण अधिकारी

विधाएँ : गजल, गीत, हायकू।

प्रकाशन : सुधियाँ शेष रह गयीं (गीत संग्रह), जाने क्या बात कही? (गीत-गजल संग्रह), श्रण के कण (हाइकु संग्रह), लेकिन कब तक (गजल संग्रह), कौंध (हाइकु संग्रह)

पुरस्कार/सम्मान : दिनकर हिन्दी साहित्य-संस्थान बेगूसराय, बिहार द्वारा 'साहित्य महोपाध्याय' की उपाधिक से अलंकृत; जैमिनी अकादमी, पानीपत द्वारा 'आचार्यश्री' उपाधि से अलंकृत।

संपर्क : ए-9, वृंदावन सोसायटी, वस्त्रापुर रेल्वे स्टेशन के सामने, वैजलपुर, अहमदाबाद

विशेष : विगत 35 वर्ष से देश का श्रेष्ठ साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशन तथा आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से रचनाओं का प्रसारण। आपने गीत, गजल और हाइकु में अभिनव प्रयोग किए हैं।

(गुजरात के हिन्दी साहित्यकार, सं. प्रो. भूपतिराम बद्रीप्रसाददोत साकरिया, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य अकादमी, पृ. 90)

हम उन्हीं के वंशजों में, जो अँधेरों में जिए

स्वप्न आँखों में हमारी रोज ही आए गए,
घर बुलाकर भी न हमसे घर में ठहराए गए।

चुप न रहते तो भला करते किसी से बात क्या ?
शूल आखिर शूल थे फूलों से ठुकराए हुए।

शीश घुटनों में छिपाकर बैठना आता नहीं,
नष्ट होकर भी न ऋतु के तलवे सहलाय गए।

कुछ तरंगों के लिए वन्दन न करते सिन्धु का,
बैठ तट पर गीत आँधी के नहीं गाए गए।

युग कहे कुछ भी, मगर हम तो उन्हीं के मित्र हैं,
आन के बदले कि जिनके शीश कटवाए गए।

प्यार भेड़ों से न करते, नोंचते हैं माँस को,
भेड़िये क्या सोचकर भेड़ों में पनपाए गए!

हम उन्हीं के वंशजों में, जो अँधेरों में जिए,
मर गए तो रोशनी के पुंज बतलाए गए।

(पछुआ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 164)

डॉ. भगवतशरण अग्रवाल

जन्म : 23 फरवरी 1930

स्थान : फतेहगंज, उत्तरप्रदेश

शिक्षा : एम.ए. पी–एच.डी

व्यवसाय : सेवा निवृत अध्यापन

प्रकाशन : शाश्वत क्षितिज (काव्य), टुकड़े टुकड़े आकाश (काव्य, बस! तुम ही तुम (काव्य), खामोश हूँ मैं (काव्य, प्यासी धरती, खाली बादल (काव्य), अकह (काव्य), संक्षिप्त दयाराम सतसई (संपादन), नवद्वीप (काव्य संकलन) उगते सूरज (संपादन–काव्य), हिन्दी उपन्यास एवं राजनीतिक आंदोलन (शोध–प्रबंध), सूरज का सातवाँ घोड़ा (शोधपरक अनुशीलन), पंचवटी – एक अध्ययन (समीक्षा), साहित्य चिंतन (शोध परक–लेख संग्रह), अर्घ्य (सत्रह भारतीय एवं सात विदेश भाषाओं में अनुवादित) हाईकु संग्रह।

पुरस्कार/सम्मान : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा 'साहित्यमहोपाध्याय' से सम्मानित; लखनऊ विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग की हीरक जयंति पर सम्मानित; अनेक शैक्षिक, साहित्यिक व सामाजिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

संपर्क : सत्यम, 396, सरस्वती नगर, आजाद सोसायटी के पास, अहमदाबाद।

(गुजरात के हिन्दी साहित्यकार, सं. प्रो. भूपतिराम बद्रीप्रसाददोत साकरिया, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य अकादमी, पृ. 63)

जब तेरे गाँव से गुजरा

जब तेरे गाँव से गुजरा तो वक्त रुक–सा गया।
रास्ते, पायलों के घुँघरूं खनखनाते मिले,
भूली यादों के मुसाफिर कुछ आते–जाते मिले।
हर गला मोड़ पै चिपके अतीत के पोस्टर,
उखड़े–उखड़े से मिले, सकुचाते–शरमाते मिले।
आँगनों में लटके मिले, तनहाइयों के दोपट्टे,
जब तेरे गाँव से गुजरा तो वक्त रुक–सा गया।
द्वारों के दोनों तरफ, राम जय जय राम लिखा,
रुकने का निमंत्रण था, या लौटने का आग्रह था।
चौखटों से झाँकते थे, निराशा भरे इन्तजार,
खेल समझ जैसे लगा, दाँव पर ही जीवन था।
बूढ़ी आँखों पै चढ़े उदासियों के चश्मे थे,
जब तेरे गाँव से गुजरा तो वक्त रुक–सा गया।
मंदिरों की घंटियाँ, कुछ भजन गुनगुनाती मिलीं,
चौंतरों पै गाथाएँ, अपने को दोहराती मिलीं।
द्वार टँगे मिट्ठू ने पहचानकर दी आवाजें,
लाज से दोहरी हुई, सिमटती थीं दहलीजें।
गालियाँ देता था जो पीपल कटा–कटा–सा लगा,
जब तेरे गाँव से गुजरा तो वक्त, रुक–सा गया।
सावनी बूँदों को, मुट्ठी में पकड़ने की तरह,
मैंने उन बीते हुए लम्हों को जीना चाहा।
पनघटों पै छलकते दीवानगी के प्यालों को,
आँखों–ही–आँखों में एक बार फिर पीना चाहा।
रंगमंच जीवित था, बदले थे बस, अभिनेता,
जब तेरे गाँव से गुजरा तो वक्त, रुक–सा गया।

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 140)

भागवतप्रसाद मिश्र नियाज

जन्म : 15 मई 1920

स्थान : राठ, जिला हमीरपुर, उत्तरप्रदेश

शिक्षा : एम.ए. (अंग्रेजी), साहित्य रत्न, डिप्लोमा इन टीचिंग इंगलिश व कन्नड़।

व्यवसाय : सेवा निवृत अध्यापन

प्रकाशन : कारा (खण्ड काव्य), गीत रश्मि (काव्य संग्रह), इंगलैंड की शिक्षा प्रणाली, चाचा नेहरू (दिवा स्वप्न), सुमनांजलि (भक्ति-गीत), भक्त सखा भगवान (जीवनी), पेटल्स ऑफ लव (भक्तिगीत-अंग्रेजी), ईश्वराम्मा (अनुवाद - अंग्रेजी से हिन्दी), विद्यावाहिनी (अनुवाद - अंग्रेजी से), प्रकट रूप भगावान (अनुवाद अंग्रेजी से), वेदपुरुष वाणी (अनुवाद अंग्रेजी से), सत्य सांई बाबा : मानव रूप में भगवान (अनु. अंग्रेजी से), सांई बाबा और नरनारायण गुफा (अनु. अंग्रेजी से), श्री सत्यसांई वचनामृत भाग 10 (अनु. अंग्रेजी से)

पुरस्कार/सम्मान : राष्ट्रकवि द्वारा अनुशंसित, हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश द्वारा गीत रश्मि पुरस्कृत।

संपर्क : 9, विश्रुत सोसायटी, गुरुकुल रोड, अहमदाबाद

(गुजरात के हिन्दी साहित्यकार, सं. प्रो. भूपतिराम बद्रीप्रसाददोत साकरिया,
प्रकाशक : हिन्दी साहित्य अकादमी, पृ. 66)

क्या करेंगे जानकर

क्या करेंगे जानकर, किस चीज के काबिल हूँ मैं?
खत्म होती हैं जहाँ राहें, वहीं मंजिल हूँ मैं।

अब्र को छूते हुए दरिया के तूफानों के बीच,
जो सहारा दे किसी कश्ती को, वो साहिल हूँ मैं।

अंजुमन रोशन थी जिनसे पीके वो सब सो गए
इक शमा जलती है और इक जागती महफिल हूँ मैं।

उड़ रहे कुछ दूर परवाने ने कानों में कहा–
जश्ने–कुरबानी के हिस्से की तरह शामिल हूँ मैं।

किस तरह देंगे तसल्ली वे मेरे दिल को नियाज?
अनगिनत टुकड़ों में जो बाँटा गया वह दिल हूँ मैं।

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 144)

भागवतदास जैन

जन्म : 1 मार्च 1938

स्थान : अहमदाबाद, गुजरात

शिक्षा : एम.ए., साहित्य रत्न।

व्यवसाय : सेवा निवृत अध्यापन

प्रकाशन : रोशनी की तलाश (काव्य संग्रह), जिंदा है आईना (गजल संग्रह), संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण व निबंध, आस्था के स्वर (काव्य संग्रह), कटघरे में हूँ (गजल संग्रह)।

पुरस्कार/सम्मान : जिंदा है आईना पर गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी का प्रथम पुरस्कार।

संपर्क : बी–105, मंगलतीथ पार्क, जशोदानगर कैनाल के पास, गौर का कुंआ, मणिनगर (पूर्व), अहमदाबाद।

डॉ. (कु.) निर्मला असनानी

जन्म : 21 मार्च 1948

स्थान : अजमेर, राजस्थान

शिक्षा : एम.ए., पी–एच.डी।

व्यवसाय : अध्यापन

प्रकाशन : ब्रजभाषा की पाछशाला एवं उससे संबंधित कवियों का कृतित्व, कच्छी संतों की हिन्दी वाणी (सहयोगी लेखन), मध्यकालीन हिन्दी काव्य (संपादन), तीन कवि, चार काव्य, कवि भोज कृत भोज भूषण

संपर्क : डी–103, रामनगर, भावनगर।

(गुजरात के हिन्दी साहित्यकार, सं. प्रो. भूपतिराम बद्रीप्रसाददोत साकरिया, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य अकादमी, पृ. 64, 50)

बसन्तकुमार परिहार

जन्म : 9 अगस्त 1935

स्थान : स्यालकोट, पश्चिमी पंजाब (जो अब पाकिस्तान में है।)

शिक्षा : एम.ए., एम.एड., साहित्य रत्न।

व्यवसाय : सेवा निवृत अध्यापन और अब स्वतंत्र लेखन

प्रकाशन : **नाटक** – रैन भई चहुँ देस, पूर्ण–विराम, दीमक के पहाड़, जहाज का पंछी।

काव्य संग्रह – अधगंगा सूरज, चट्टान पर अंकित इबारत, चिन्दी चिन्दी अस्तित्व, कैनवास पर फैलते रंग (तीन लम्बी कविताएँ)।

संपर्क : 1/1 पत्रकार कोलोनी, नाराणपुरा, अहमदाबाद

(गुजरात के हिन्दी साहित्यकार, सं. प्रो. भूपतिराम बद्रीप्रसाददोत साकरिया, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य अकादमी, पृ. 60)

चिड़िया

चारों तरफ माहौल में छाया हुआ था युद्ध
बारूद का बुचका उठाए अपनी पीठ पर
भागी चली जा रही थी हवा सुरक्षा के देश.....।

पेड़ों के काँप रहे थे दिल, पत्ते भी हेराँ–परेशाँ।
कुछ ऐसा फैला था युद्ध का आतंक
कि जिन्दगी फिज में रखे पानी–सी
आइस–क्यूब बन गई थी।

मैं भी मौत से पहले मरा–मरा–सा था,
कटने से पहले कटा–कटा–सा था।
मनुष्य के सनातन अधिकारों की किताप पर
अपनी ठोड़ी रखे
जुल्म के कहकहों में तलाश रहा था मनुष्य,
युद्ध के दगते माहौल में तलाश रहा था शान्ति
कि अचानक देखा–
एक नन्ही–सी चिड़िया तोप के मुँह पर बैठी
गा रही है जिन्दगी का गीत।
चिड़िया गा रही है जिन्दगी का गीत
और युद्ध से दगता सारा माहौल
थर–थर काँप रहा है।

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 137)

प्रणव भारती

जन्म : 5 जून 1947

स्थान : मुजफ्फरनगर, उत्तरप्रदेश।

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी और अंग्रेजी), पी–एच.डी (हिन्दी)।

व्यवसाय : लेखन

प्रकाशन : टच मी नोट (बाल मनोविज्ञान पर आधारित उपन्यास), एक त्रिशंकु सिलसिला (काव्य संग्रह), चक्र (लघु उपन्यास), अपंग (उपन्यास), अंततोगत्वा (उपन्यास)

संपर्क : ललित श्रुति, 31 उमेद पार्क सोला रोड, अहमदाबाद।

(गुजरात के हिन्दी साहित्यकार, सं. प्रो. भूपतिराम बद्रीप्रसाददोत साकरिया,
प्रकाशक : हिन्दी साहित्य अकादमी, पृ. 56)

संवेदन

संबंधों से संबोधन तक कैसा यह परिवर्तन ?
साँझ घिरे ही अकुला जाते, कैसा यह उद्वेलन ?
निखरी–निखरी काया सबकी,
उजले–उजले मुखड़े।
साँसों की गति चुगली करती –
कितने उखड़े–उखड़े।
प्राणों में बस जाती हलचल, यह कैसा संवेदन?
दिशा–दिशा में फैले आँचल
खुशबू की आहट में।
पल–पल कितनी मजबूरी है
हर घर की चौखट में।
उजियारे की बात पुरानी, दिन अँधियारा आँगन।
शब्दों के घर में बैठी थी
सँवरी–सी एक शबनम।
देख अकेली, आँधी आई,
बनकर उसकी सौतन।
टूटी माला बिखरे मोती, जीभर रोई दुल्हन।

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 125)

डॉ. द्वारकाप्रसाद बलदेव प्रसाद साँचीहर

जन्म : 19 अप्रैल 1949

स्थान : काँकरोली, उदयपुर, राजस्थान

शिक्षा : एम.ए., पी-एच.डी.।

व्यवसाय : अध्यापन

प्रकाशन : छायावादी कविता (समीक्षा), वैयक्तिक चेतना की कविता (समीक्षा), प्रगतिवादी कविता (समीक्षा), नयी कविता (समीक्षा), छायावादोत्तर हिन्दी कविता (शोध), भस्मासुर (नाटक, अनुवाद गुजराती से), गीत रजनीगंधा (गीत संग्रह), अवाक के चाक पर (काव्य संग्रह)

पुरस्कार/सम्मान : गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा 1988 में द्वितीय पुरस्कार; हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा 1994 में गीत-संग्रह को पुरस्कार।

संपर्क : 54, हीराबाग सोसायटी नं. - 1, अहमदाबाद।

विशेष : आपकी कविताओं में लय-गंध के साथ ही विशेषण-विपर्यय एवं बिम्ब-प्रतीकों की सार्थक संयोजना मन को बाँधती है वायवी जगत् में खुलने के लिए।

(गुजरात के हिन्दी साहित्यकार, सं. प्रो. भूपतिराम बद्रीप्रसाददोत साकरिया,
प्रकाशक : हिन्दी साहित्य अकादमी, पृ. 44)

मन उन्मन है

मन उन्मन है, उन्मन जीवन,
मौन, मौन को गाता रहता।
खिड़की–द्वार–गवाक्ष बंध है,
मैं मुझसे बतियाता रहता।
मन की उँगली छू नहीं पाती
आभासित दृश्यों की काया।
आँख मूँद अनुभूति सो गई,
अभिलेखन ने मुँह बिचकाया।
चकरा–चकरा एक कबूतर कमरे में हिजराता रहता।

काँच–काँच सपना क्षत–विक्षत
जादू बनता, टोने बुनता।
सन्ध्या का एकाकीपन यह–
छिप जाने को कोने गिनता।
सिर धुन–धुनकर कमल सो गए, भ्रमर–भ्रमर सुस्ताता रहता।

धुँधियाती दीपक की लौ ले
धीरज का आँचल जल जाता।
उत्कंठा का हाथ थामकर
थका पथिक कितना चल–पाता।
पग–पग पंथ लिपटता सर्पिल प्राण दंश दिलवाता रहता।

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 98)

स्व. डॉ. अंबाशंकर नागर

जन्म : 6 अगस्त 1925

स्थान : जयपुर, राजस्थान

शिक्षा : एम.ए., पी–एच.डी.।

व्यवसाय : अध्यापन

प्रकाशन : गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रंथ, महाकवि बिहारी कृत कवित्त, दयाराम सतसई (सटीक), गुजरात के संतों की हिन्दी वाणी, रसिक रंजन, चाँद चाँदनी और कैक्टस (कविता संग्रह), प्रम्लोचा (खण्डकाव्य, शताधिक शोध लेख तथा पचाल से अधिक पुस्तकें प्रकाशित।

पुरस्कार/सम्मान : बिहार सरकार द्वारा सन् 1986 में हिन्दी सेवा हेतु पुरस्कृत; उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 1981 में सम्मानित व पुरस्कृत; संगीत की सर्वोच्च उपाधि सारंगदेव फैलोशिप, सुरसिंगार संसद, बम्बई द्वारा सम्मानित; राष्ट्रपति द्वारा 1995 में सुब्रमण्यम भारती पुरस्कार; राजस्थान अकादमी द्वारा 1996 में सम्मानित।

संपर्क : 376, सरस्वतीनगर, आजाद सोसायटी के पास, अहमदाबाद।

(गुजरात के हिन्दी साहित्यकार, सं. प्रो. भूपतिराम बद्रीप्रसाददोत साकरिया, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य अकादमी, पृ. 27)

रागानुभूति का ही प्रेम है उपनाम

जो भी हो,
अद्‌भुत आकर्षण होता है युग्मों में
इस धरती पर।

कभी–कभी मैं सचमुच ऐसा अनुभव करती हूँ
छेड़ रहा है जैसे कोई
तन–तंत्री को मिजरावों से।
केवल तार नहीं, तरवें तक
रह–रहकर बजती हैं।
पुलक, कंप, रोमांच उसी की हैं झनकारें।
मानो नारी नहीं,
काम की वीणा हूँ मैं
और बज रही हूँ
स्वयं ही बिना बजाए!
बहुत हो रोकूँ निज को,
किन्तु –
मन–मृदंग पर अतनु
थाप पर थाप दिये जाता है।
इन आघातों–प्रत्याघातों से
प्राणों की लय दुत से दुततर होती जाती है।
बज उठती हैं सकल शिराएँ
झन–झन करती,
आवेगों के ज्वार उमड़ते हैं तब
मेरे हृदयोदधि में

मानो नारी नहीं,
शरद ऋतु की राका हूँ।
अद्भुत है रागानुभूति।
दिव्यानुभूति है क्या यह इस धरती की?

रागानुभूति और दिव्यानुभूतिः
दो नहीं हैं एक ही हैं।
स्थापित होता हैं उभय में
संबंध मम का, ममेतर से।
भेदग इतना है–
एक है मूर्त, अमूर्त है अपर।
एक पार्थिव है, अपार्थिव है इतर।
एक मैं आलंबन है प्रत्यक्ष
दूसरे में परोक्ष है,
किन्तु दोनों अनुभूतियाँ हैं–
रागमय और दिव्य।

रागानुभूति का ही
प्रेम है उपनाम।
यही है सनातन प्रकृति,
यही नियति है मनुज की।

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 27–28)

अविनाश श्रीवास्तव

जन्म : 7 जनवरी 1936

स्थान : रायबरेली, उत्तरप्रदेश

शिक्षा : एम.ए., एल.एल.एम., साहित्य रत्न।

व्यवसाय : भारतीय राजस्व सेवा (वित्त मंत्रालय-भारत सरकार)

प्रकाशन : मानसिक सन्निपात और टूटे हुए एवरेस्ट, समान्तर रेखाओं का त्रिकोण, पिछली बहार के सूरजमुखी, ठहरी हुई धूप, छूटे तटबन्धों पर पुनः, परिवेश गगन बदले क्षण क्षण, दिन की थाली में परोसी शाम, पिघले हुए मौन, आँखों में डूबते सूरज, रिप्लाय थ्रू सायलेन्स (काव्य संग्रह अंग्रेजी), कल के अपने तथा अन्य कहानियाँ (कहानी संग्रह), स्थिति नियंत्रण में हैं (लघुकथा संग्रह), कवि प्रसाद की सौन्दर्य भावना (समीक्षा), सपाट चेहरों का दर्द (ललित निबंध), नाट्य रूप भवाई (गुजराती से हिन्दी में), सगाई (मेघाणी कृत गुजराती उपन्यास वेविशाल का हिन्दी में अनुवाद)।

पुरस्कार/सम्मान : हिन्दी साहित्य अकादमी-गुजरात राज्य द्वारा काव्य संग्रह परिवेश गगन.... पर प्रथम पुरस्कार 1995; काव्य संग्रह आँखों में डूबते सूरज पर द्वितीय पुरस्कार 1999; वित्त मंत्रालय भारत सरकार द्वारा अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता पर द्वितीय पुरस्कार 1995 तथा 1998; संस्कृत संस्था (मुरैना-मध्यप्रदेश) द्वारा अखिल भारतीय काव्य प्रतियोगिता में काव्य संग्रह परिवेश गगन पर प्रथम पुरस्कार 1996; अवध फिल्म्स एण्ड कल्चरल एसोसिएशन - रायबरेली द्वारा सम्मान पत्रि 1996; रामेश्वरी सारस्वत सुधा सम्मान-रायबरेली 1998;, विद्या वाचस्पति उपाधि से अलंकृत (परियाँवा-प्रतापगढ़, उत्तरप्रदेश), फेकल्टी फेलोशि-लखनऊ विश्वविद्याल 1955-56।

संपर्क : 23 साकेत बंगले, वस्त्रापुर, अहमदाबाद

विशेष : आपकी कविताओं में ऋतुगंध के यायावरी हस्ताक्षर और सामाजिक वर्जनाओं के व्यंग्यात्मक कशाघात स्पष्ट दिखाई देते हैं।

पुरवाई

सूनी माँग लिए पुरवाई।
कच्ची दहलीजें मुख देखें
नीम तले सोई तनहाई।

मन बनजारिन लँहगा माँगे,
अपनी हो गई पीर पराई
बंजर अधिया खेत हो गए
ताल–तलैया फटी बिवाई।
चढ़ी अटारी मैना रोए,
पुरवईया कितनी हरजाई।

घने अँधेरे प्रेत नहाते
जम्बूरे खुद बने मदारी।
कल के देखे सपने दुःखते
रोके रुके न अब सिसकारी।
चाँद, सुहागिन की थाली में,
देख सिसकती है पुरवाई।

(गुजरात के हिन्दी साहित्यकार, सं. प्रो. भूपतिराम बद्रीप्रसाददोत साकरिया,
प्रकाशक : हिन्दी साहित्य अकादमी, पृ. 55)

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 35)

डॉ. किशोर काबरा

जन्म : 23 दिसम्बर 1934

स्थान : मन्दसौर, मध्यप्रदेश।

शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी, साहित्य रत्न।

व्यवसाय : सेवा निवृत अध्यापन।

प्रकाशन : **महाकाव्य** – उत्तर महाभारत, उत्तर रामायण।

खण्ड काव्य – परिताप के पाँच क्षण, धनुषभंग, नरो वा कुंजरो वा।

सतसई – किशोर सतसई

काव्य संग्रह – जलते पनघट बुझते मरघट, साले की कृपा, सारथी, मेरे रथ को लौटा ले, टूटा हुआ शहर, ऋतुमती है प्यास, हाशिये की कविताएँ, मैं एक दर्पण हूँ, चंदन हो गया हूँ।

शोध-प्रबंध और निबन्ध – रीतिकालीन काव्य में शब्दालंकार; साहित्यिक निबन्ध; अध्ययन, मनन और अनुशीलन।

बाल साहित्य – तितली के पंख, टिमटिम तारे, बाल रामायण, बालकृष्णायन, आज यौवन ने पुकारा देश को, हम सब पंछी, सदाचार की कहानियाँ, चोर की खोज, खट्टे अंगूर, नीति की कहानियाँ, रोचक कहानियाँ।

भारत दर्शन – भारत के दर्शनीय स्थल

लघुकथा संग्रह – एक चुटकी आसमान, एक टुकड़ा जमीन, बूँद-बूद कड़वा सच।

पुरस्कार/सम्मान : उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार, लखनऊ; महाकवि राष्ट्रीय आत्मा पुरस्कार, कानपुर; अर्चना पुरस्कार, कलकत्ता; जयशंकर प्रसाद पुरस्कार, अहमदाबाद;, मारवाड़ी सम्मेलन पुरस्कार, मुम्बई; एन.सी.ई.आर.टी. बाल पुरस्कार, नई दिल्ली; उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान सौहार्द पुरस्कार, लखनऊ; गुजरात हिन्दी विद्यापीठ गरिमा पुरस्कार, अहमदाबाद; हिन्दी साहित्य अकादमी हिन्दी सेवी पुरस्कार, गांधीनगर; प. दीनदयाल उपाध्याय पुरस्कार, छोटी खाटू; लोकतेज हिन्दी साहित्य सेवी सम्मान, सूरत; गुजरात हिन्दी समाज विकास परिषद् सम्मान, अहमदाबाद।

संपर्क : 1821, गुजरात हाउसिंग, चांदखेड़ा, अहमदाबाद।

विशेष : शाश्वत सत्य और युगधर्मिता के कुशल चितेरे किशोर ने परम्परा और समकालीनता के सहारे क्षणिका से खंडकाव्य और मुक्तक से महाकाव्य तक की यात्रा की है।

(गुजरात के हिन्दी साहित्यकार, सं. प्रो. भूपतिराम बद्रीप्रसाददोत साकरिया, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य अकादमी, पृ. 18)

जिन्दगी जैसे पहाड़ी गाँव

एक सीढ़ी धूप,
सीढ़ी छाँव रे!
जिन्दीगी जैसे पहाड़ी गाँव रे!

शिखर की पीड़ा
बिखरती खाइयों में,
खाइयाँ सब
अतल की गहराइयों में।
आँसूओं के कब रुके हैं पाँव रे!
जिन्दगी जैसे पहाड़ी गाँव रे!

तह किए सपने
बिछे हैं खेत बनकर,
खेत सारे मर चुके हैं
रेत बनकर।
जी रहा है चीड़ ओढ़े काँव रे!
जिन्दगी जैसे पहाड़ी गाँव रे!

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 53)

डॉ. शिवा कनाटे

जन्म : 6 नवम्बर 1953

स्थान : इन्दौर, मध्यप्रदेश

शिक्षा : एम.बी.बी.एस.

व्यवसाय : ई.एस.आई.एस. हॉस्पीटल बड़ौदा में कार्यरत

संपर्क : सी–18, स्टॉफ क्वाटर्स, ई.एस.आई.एस. जनरल होस्पिटल, गोत्री रोड, वडोदरा.

विशेष : आपकी कविताओं में नए बिम्ब एवं प्रतीक अपनी पूरी सामर्थ्य के साथ समकालीन संदर्भों और शाश्वत सम्बन्धों को वाणी प्रदान करते हैं।

नया दौर

जमीं पर एक दिन उस दौर को आना होगा।
जब कोई आदमी छोटा या बड़ा ना होगा।
रहनुमाओं को जरा होश में लाना होगा।
वर्ना हम सबका कहीं भी न ठिकाना होगा।
जिंदगानी का कोई हल नहीं जीने के सिवा,
वक्त लोहे के चना है तो चबाना होगा।
सोते बच्चे को जगाओ न भोर होते ही,
उसकी आँखों में कोई ख्वाब सुहाना होगा।
हाथ में सिर्फ लकीरा के सिवा कुछ भी नहीं,
हमने सोचा था कि मुट्ठी में जमाना होगा।
अब के शायद तेरे हाथों में सही सीपी हो,
अब के गोता जरा गहरे में लगाना होगा।

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 128)

राजेन्द्र काजल

जन्म : 15 मई 1941

स्थान : पीलीभीत, उत्तरप्रदेश

शिक्षा : इंजीनियरिंग में डिप्लोमा।

व्यवसाय : सेवा निवृत्त ओ.एन.जी.सी. से।

प्रकाशन : खण्डकाव्य चौलादेवी

संपर्क : 303, गुजरात हाउसिंग बोर्ड, सिद्धनाथ नगर, भरूच।

विशेष : आपकी रचनाधर्मिता विभिन्न आयामों को छूती रही है। मंच के सुकंठ कवि हैं। आपकी कविताओं में बिम्बात्मक भाव–सम्बत्ति को कमनीयता और कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 169)

मरुथली हवाएँ

तृष्णा के पर्वत पर छाईं थीं घटाएँ,
ले गईं उड़ाके सब मरुथली हवाएँ।

दूर तक विवशता है जंगल में आग-सी,
अश्रु-झील में तिरे जिंदगी चिराग-सी,
तिनकों की बस्ती में ज्ञात नहीं बावरे,
मन को या अभिशापित तन को बचाएँ?

रंगों से मौसम को जीवित चरित्र है,
आँखों से श्रेष्ठ कोई मन का न मित्र है।
मुरझाए धीरज की लेके बैसाखियाँ,
और कितने मदमाते सपतने सजाएँ ?

कहते उस पार है चाँदी की यामिनी,
सोने के दिन, प्यारे रंगों की रागिनी।
अपनी तो बदरंगी कागज की नाव रे,
उम्र गई सोचते ही, पार कैसे जाएँ?

जीवन की प्यासों का रेतीला गाँव है,
दूर तक मरीचिका है, आँसू की छाँव है।
दर्पण की छाती पर बिम्बों के काफिले
गुजरे जब गुजरे दिन बहुत याद आए।

(पछुआँ के हस्ताक्षर, सं. डॉ. किशोर काबरा, प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, पृष्ठ 169)